एनएचपीसी
NHPC
एक नवरत्न कंपनी

एनएचपीसी काव्य यात्रा

वर्ष 2024

एनएचपीसी
NHPC
एक नवरत्न कंपनी

अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक
एनएचपीसी लिमिटेड, फरीदाबाद

संदेश

हिंदी सांस्कृतिक विभिन्नता में एकता का प्रतीक है। हिंदी विभिन्न भाषा-भाषियों तथा संस्कृतियों के बीच एक सेतु का कार्य करती है। हिंदी सांस्कृतिक और सामाजिक परंपरा की धनी है और विचारों व भावों की अभिव्यक्ति में पूर्ण सक्षम भी है। यह भारत के जन-जन के मन में बसी भाषा है। अतः हमारा संवैधानिक दायित्व और नैतिक कर्तव्य भी है कि हम हिंदी को अपने अधिकाधिक विभागीय कार्यों की भाषा बनाएं और राजभाषा हिंदी के उन्नयन में योगदान दें।

बढ़ते वैश्विक मानकों और गुणवत्ता के प्रति हमारे समर्पण, पालन और प्रतिबद्धता ने एनएचपीसी को जलविद्युत के क्षेत्र में एक अग्रणी संगठन बना दिया है। हम इस बात की पुष्टि करते हैं कि हम देश को गुणवत्तायुक्त विद्युत के साथ-साथ गुणवत्तायुक्त माहौल भी प्रदान करेंगे, जो सकारात्मकता की भावना को चित्रित करेंगे। इसी पहल में, यह कविता संकलन 'एनएचपीसी काव्य यात्रा' का प्रकाशन भी एक कदम है जो न सिर्फ राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार को बढ़ावा देगा बल्कि सम-सामयिक विषयों को प्रखरता से समझने का सुअवसर भी प्रदान करेगा। मुझे विश्वास है कि 'एनएचपीसी काव्य यात्रा' में प्रकाशित सभी रचनाएं पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक तथा रचनात्मक भाव सृजन करने में सफल होगी और एक आविष्कारशील दृष्टिकोण हमारे वांछित सपने को वहां तक ले जाएगा जहां हम अपने अनमोल और आशाजनक जीवन को सही मोड़ दे सकते हैं।

मैं अपने सभी कार्मिकों को उनके द्वारा किए जा रहे सभी प्रकार के सहयोग के लिए सराहना करता हूँ। हमारे मिशन का अनुकरण करने और अपेक्षित उच्च गुणवत्ता वाला कार्य प्रस्तुत करने के लिए धन्यवाद। हमारी सफलता हमारे समर्पित कर्मियों के सहयोग और कौशल के कारण है।

मेरी ओर से रचनाकारों तथा प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सफल प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं।

राज कुमार चौधरी

(राज कुमार चौधरी)

एनएचपीसी
NHPC
एक नवरत्न कंपनी

निदेशक (कार्मिक)
एनएचपीसी लिमिटेड, फरीदाबाद

संदेश

हिंदी के प्रचार-प्रसार में पुस्तकें तथा पत्र-पत्रिकाओं ने सदैव महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इनके माध्यम से विभिन्न गतिविधियों से परिचित होने का अवसर मिलता है। राजभाषा हिंदी के प्रसार में कार्यालयीन पत्र-पत्रिकाओं के महत्व को सभी ने सराहा है। लेखन चाहे गद्यात्मक हो या पद्यात्मक, इसमें रचनाकारों की सृजन कला को उभारने का मंच मिलता है और उन्हें पाठकों से परिचित होने का अवसर मिलता है। मुझे खुशी है कि हमारा निगम नित नई ऊँचाइयों को छूते हुए नए युग में प्रवेश कर गया है। भारत सरकार ने एनएचपीसी को नवरत्न के दर्जा से अलंकृत किया है। यह हम सब में नई ऊर्जा का संचार करने वाला क्षण है। एक उद्देश्यपूर्ण संगठन बनने का हमारा लक्ष्य सिर्फ एक विचार नहीं है बल्कि यह हमारी कार्य क्षमता का प्रदर्शन भी है। इससे पता चलता है कि हम कठिन चुनौतियों को स्वीकार करने में सक्षम है। हमें अपनी क्षमता को कभी भी कम नहीं आंकना चाहिए और बढ़ते आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ना चाहिए।

एनएचपीसी जलविद्युत एवं नवीकरणीय उर्जा के उत्पादन में देश की अग्रणी संस्था के तौर पर जानी जाती है। हमारे कार्मिक विद्युत उत्पादन के प्रत्येक क्षेत्र में अन्य संस्थानों के लिए प्रेरणादायी हैं। इसके साथ ही, मैंने विभिन्न मौकों पर यह महसूस किया कि हमारे कार्मिकों में रचनात्मक कौशल की प्रचुरता अतुलनीय है, जिन्हें एक अच्छे व उचित मंच की तलाश है। यह संकलन निसंदेह हमारे कार्मिकों की रचनात्मक प्रतिभा के लिए बेहतरीन अवसर है और यह हमारे अन्य कार्मिकों में भी प्रेरणा एवं ऊर्जा का संचार करेगी।

हम राजभाषा के कार्यान्वयन में भारत सरकार द्वारा समय-समय पर पुरस्कृत और सराहे जाते रहे हैं। इसी कड़ी में निगम के कार्मिकों ने हिंदी के विकास में एक और नई पहल करते हुए अपनी रचनात्मक कौशल का परिचय देते हुए विभिन्न विषयों पर कविताएं लिखीं है। निगम के राजभाषा विभाग द्वारा इन कविताओं का संकलन **'एनएचपीसी काव्य यात्रा'** के रूप में तैयार किया गया है। मैं हृदय से सभी कवियों को बधाई देता हूँ और उनकी सराहना करता हूँ।

'एनएचपीसी काव्य यात्रा' का प्रकाशन हमें राजभाषा की निरंतर प्रगति के अभियान में एक कदम आगे बढ़ाता है। वास्तव में, इस प्रेरणात्मक प्रयास में सभी ने मिलकर अपनी अहम भूमिका निभाई। इसके लिए मैं आप सभी को धन्यवाद देता हूँ और **"एनएचपीसी काव्य यात्रा"** की असीम सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(उत्तम लाल)

एनएचपीसी
NHPC
एक नवरत्न कंपनी

कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन)
एनएचपीसी लिमिटेड, फरीदाबाद

संदेश

एनएचपीसी अपनी स्थापना से ही अपनी सबसे मूल्यवान संपत्ति के रूप में मानव संसाधनों के विकास और प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित कर रही है। हमारी कंपनी के लिए सबसे महत्वपूर्ण प्रबंधन प्राथमिकताओं में से एक नए मूल्य बनाने में सक्षम मानव संसाधनों का विकास है। यह विकास एनएचपीसी की समग्र कार्य-प्रणाली के प्रत्येक क्षेत्र में पूरी निष्ठा एवं प्रतिबद्धता के साथ क्रियान्वित किए जा रहे हैं। विशेष रूप से, हम सभी राजभाषा हिंदी के उपयोग का निरंतर विकास भी अत्यंत ही पेशेवर एवं राष्ट्र की मूल भावना के अनुरूप करने में सक्षम हो रहे हैं।

संविधान की अपेक्षा के अनुसार निगम के प्रत्येक कार्मिक एवं हमारे संगठन से जुड़े सभी हितधारकों व सामान्य जनमानस तक हिंदी भाषा को पहुंचाने का प्रयास विभिन्न गतिविधियों के माध्यमों से किया जा रहा है। निगम मुख्यालय के राजभाषा विभाग द्वारा निगम में पूरे वर्ष राजभाषा कार्यान्वयन के लिए अनेकों प्रयास किए जा रहे हैं जिसके परिणामस्वरूप हमारे निगम को कई बार राजभाषा के कार्यान्वयन के लिए भारत सरकार के सर्वोच्च पुरस्कार से सम्मानित भी किया गया है और संसद की उच्च अधिकार प्राप्त संसदीय राजभाषा समिति द्वारा सराहना भी की गई है। इन उपलब्धियों में हमारे सभी कार्मिकों द्वारा अपने-अपने पेशेवर कार्यों को राजभाषा हिंदी में संपादित करने का ही परिणाम है कि एनएचपीसी राजभाषा कार्यान्वयन की सफलता के इस आयाम पर स्थित है।

मुझे बहुत खुशी हो रही है कि हमारे कार्मिकों ने राजभाषा के विकास के क्षेत्र में एक ओर कदम बढ़ाते हुए मूल रूप से विभिन्न विषयों पर स्वरचित कविताएं लिखी हैं जिसे निगम के राजभाषा विभाग द्वारा इन कविताओं के संकलन को **'एनएचपीसी काव्य यात्रा'** के नाम से प्रकाशित किया जा रहा है। मैं इस काव्य संकलन में योगदान देने के लिए सभी रचनाकारों एवं राजभाषा विभाग के प्रयासों की सराहना करता हूँ और आशा करता हूँ कि हमारे कार्मिक आगे भी अपनी रचनात्मक कौशल से अपने बहुमूल्य अनुभव व ज्ञान को व्यापक रूप से साझा करते रहेंगे।

इस काव्य संकलन की उद्देश्य पूर्ति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

(लूकस गुड़िया)

एनएचपीसी
NHPC
एक नवरत्न कंपनी

संपादकीय....

संपादक की कलम से .....

हिंदी हमारी राजभाषा है इस नाते सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग हमारा संवैधानिक तथा नैतिक कर्तव्य है। इसी कर्तव्य को निभाने के लिए विभिन्न कार्यालयों द्वारा अपनी पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है जिसके माध्यम से हिंदी को लोकप्रिय बनाने के साथ-साथ कार्यालय के सदस्यों की रचनात्मक प्रतिभा को एक मंच प्रदान किया जाता है। कार्यालयीन प्रकाशन कर्मचारियों की सृजनशीलता का माध्यम होने के साथ-साथ राजभाषा के प्रति गौरव का भाव भी भरती है। अभिव्यक्ति का माध्यम बनने पर राजभाषा हिंदी केवल कार्यालय तक सीमित नहीं रहती बल्कि जनमानस की अपनी हो जाती है।

हमारे कार्मिकों ने विभिन्न पेशेवर एवं सम-सामयिक क्षेत्रों में अपनी सृजनात्मक लेखन से निरंतर बहुमूल्य योगदन दिया है। कार्मिकों ने कार्यालयीन एवं निजी तौर पर आयोजित कई मौकों पर अपनी काव्य प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन किया है जो निश्चित रूप से राजभाषा हिंदी के विकास के लिए महत्वपूर्ण तो है ही, साथ ही साथ काव्य के रूप में अभिव्यक्त संदेश किसी भी संगठन एवं समाज के लिए विचारों के मुक्त-संयोजन और विचार-मंथन के माध्यम से प्राप्त सुझाव, सर्वोत्तम समाधान का माध्यम बन सकती है। इसी कड़ी में, निगम के कार्मिकों द्वारा मौलिक लेखन के क्षेत्र में काव्य रचना भी एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। यह काव्य संकलन एक मील का पत्थर है जो हमारी वृद्धि को दर्शाता है, हमारी कल्पनाओं को उजागर करता है और हमारे विचारों और आकांक्षाओं को जीवन देता है। यह रचनात्मक कौशल के व्यापक स्पेक्ट्रम को भी दर्शाता है।

मैं आपके साथ **'एनएचपीसी काव्य यात्रा'** को साझा करने के लिए उत्सुक हूँ। इन रचनाओं में निहित आदर्श अनुकरणीय हैं और यह एक जीवंत, खुशहाल और सार्थक भविष्य के निर्माण में योगदान देंगे।

मुझे विश्वास है कि कार्मिकों द्वारा स्वरचित कविता संकलन का यह अंक **'एनएचपीसी काव्य यात्रा'** राजभाषा के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य को भी पूरा करने में सफल होगा। मैं इस काव्य संकलन के प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं इससे जुड़े सभी सदस्यों को धन्यवाद एवं अनंत शुभकामनाएं देता हूँ।

(प्रिय रंजन)
महाप्रबंधक (मानव संसाधन) व प्रभारी (राजभाषा)

एनएचपीसी काव्य यात्रा

राजभाषा विभाग

एनएचपीसी लिमिटेड

मुख्य संरक्षक

श्री राज कुमार चौधरी, अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक

संरक्षक

श्री उत्तम लाल, निदेशक (कार्मिक)

परामर्शदाता

श्री लूकस गुडिया, कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन)

संपादक

श्री प्रिय रंजन, महाप्रबंधक (मानव संसाधन) व प्रभारी (राजभाषा)

उप संपादक

डॉ. निर्मल कुमार मंडल, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
श्री हरि ओम शुक्ल, प्रबंधक (राजभाषा)

संपादन सहयोग

श्री सुंदर सहनी, वरिष्ठ कार्यालय अधीक्षक

पत्राचार का पता राजभाषा विभाग

एनएचपीसी लिमिटेड
सेक्टर-33, फरीदाबाद, हरियाणा-121003
ई-मेल: rajbhasha-co@nhpc.nic.in

एनएचपीसी 'काव्य यात्रा' में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार कार्मिकों (कवियों) के अपने विचार हैं। एनएचपीसी प्रबंधन का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

मुद्रक : एजुकेशनल स्टोर्स, एस-5 बुलंदशहर रोड इण्डस्ट्रीयल एरिया साईट-1 गाजियाबाद (उ.प्र.)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	लेखकों के नाम	कविता	पृष्ठ सं.
1.	माला आनंद	सब कुछ तो है इन बनारसी धागों में / देवी पूजा / मां बनना आसान नहीं होता	10-11
2.	राजीव रंजन प्रसाद	यह सोच कृष्ण की गीता है	12
3.	अर्चना प्रकाश	उपभोक्ता वाद व जिम्मेदारी	13-14
4.	नवीन कुमार साह	एनएचपीसी गाथा	14
5.	बाबू लाल मुन्द्रा	तीज, वीरांगना रानी लक्ष्मी बाई	15
6.	डॉ० राहुल खन्ना	बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, देशद्रोही मच्छर	16-17
7.	अंगद कुमार	पार्वती–II	18
8.	अरुण कुमार सोनी	जीवन की नाव चलती रहेगी	19
9.	बालेश्वर नाथ	एक छोटी सी प्रस्तुति "रचना", "कुशल प्रबंधन"	20
10.	पूरन सिंह रावत	अभियांत्रिक जीवन	21
11.	उत्तम कुमार	आओ मिलकर देश बनाएँ	22
12.	बी.एन.एस.नवीन कुमार	नई राह की ओर ले जाता-पहला कदम	23
13.	संजना सिंह	फेसबुक पर श्रद्धांजलि	24
14.	दिवाकर प्रसाद अवधिया	एनएचपीसी की परियोजनाएं	25
15.	योगेंद्र सिंह	कहाँ से कहाँ आ गये	26
16.	डॉ. पिंकी कुमारी राय	भ्रष्टाचार का विरोध करें, राष्ट्र को समर्पित रहें	27
17.	मनोज कुमार 'जानी'	बहुत देर तक रहा....., हर कीमत पर जो बिकने को..., आँखों में नहीं....., जताते नहीं हैं लोग ....., शराफत देख बन्दों की....., किसे चाहिए वैरागी? हर दल मांगे, केवल दागी, काश! चुनाव हमेशा हो...	28-31
18.	सुनील कुमार गुप्ता	गुणगान	31
19.	सीमा सौरौत	जीवन स्वयंवर, चाह, मैं समय हूँ	32-33
20.	अन्नपूर्णा सिंह	अब तो पथ यही है।	33
21.	विपुल नागर	एक नदी की व्यथा, जीवन चक्र	34
22.	सुमित डबराल	ताशी क्यों रोई?	35
23.	राहुल शुक्ला	हिंदी भाषा हमारी...	35
24.	नवीन कुमार पाण्डेय	तुम प्रकृति की तरह (नवगीत)	36
25.	विशाल कुमार त्यागी	दूरी रखें मोबाइल से	37
26.	देश राज	बेबस जिंदगी	38
27.	विशाल शर्मा	समय चक्र चलता है	39
28.	नीरज कुमार	मेरी बर्बादी	39
29.	सत्येंद्र कुमार सिंह	देश मेरे देश मेरे	40
30.	अभिषेक कुमार मिश्र	नदी सी भाषा	41
31.	राकेश कुमार श्रीवास्तव	बेटी	41
32.	आशीष कुमार	अपना भी कोई चाँद पर रहता है	42
33.	गिरिराज सिंह	भ्रष्टाचार यही...,	42
34.	श्यामा पुजारी	जिम्मेदारी	43
35.	जावेद अख्तर	जिंदगी का चराग़	43
36.	बनवारी लाल मीना	भ्रष्टाचार का डर किस कदर	44
37.	गुरतेज सिंह	दिल-ए-चंबा	44
38.	अमित जैन	अभिनंदन अपनी भाषा का	45

39.	आशय सिंह	सच में ये जिंदगी है या हमारी मजबूरी तो नहीं	46
40.	सुरेश सिंह	देखो... इंसानों की माया..., भारतीय होने पर गर्व करें	47-48
41.	अनूप कुमार सिंह	इक ज़माना गुज़र गया	49
42.	अंकिता अग्रवाल	खुद की उम्मीदों से....., ईमानदार का परिचय	49-50
43.	कृति अरोड़ा	दीप आस का विश्वास का	50
44.	अरविन्द कुमार द्विवेदी	राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्ध रहना है, भ्रष्टाचार को जड़ से खत्म करना है।	51
45.	सुनीता शर्मा	हिंदी गीत	52
46.	नीरज कुमार	जब श्रीमतीजी ऑफिस आई, मैं काँटा तू फूल सखी, मर्द क्या होता है?	52-54
47.	सुनील कुमार भार्गव	पर्यावरण बचा लें हम	55
48.	सुन्दर सहनी	यह जिस्म तो किराये का घर है	55
49.	शेख सफिउल अहमद	नारी तुझे सशक्त होना होगा, है विश्वास होंगे कामयाब एक दिन	56-57
50.	कुलदीप कुमार शर्मा	विश्वगुरु भारत, हमारा संगठन-एनएचपीसी	58
51.	अनिल कुमार	देश की पहचान है हिंदी, चंद्रयान की जय हो !	59-60
52.	इन्दु शर्मा	रोशनी	60
53.	मुकेश कुमार वर्मा	मुझे क्या करना हैं, मेरे सपनों की दुनिया	61
54.	संजीव कुमार	माँ तो बस माँ होती है	61
55.	पूर्वा मैनी	फर्क तो पड़ता है	62
56.	संदीप जोशी	ढूंढता बचपन	62
57.	जय प्रकाश	बचपन की यादें	63
58.	तन्वी आहूजा	शब्दों का शहर	64
59.	कमलेश कुमार	स्मृति, इश्क़ की राह	65-66
60.	वीरेंद्र कुमार निषाद	शांति की खोज	66
61.	धर्मेन्द्र सिंह कुशवाहा	एनएचपीसी के कर्मवीर, हम	67
62.	ओम प्रकाश	स्वच्छ भारत अभियान	68
63.	कल्याण सिंह राणा	भारत को भ्रष्टाचार मुक्त बनाना है	69
64.	पवन सिंह राणा	मैं क्या करूं	70
65.	नागपाल कन्डवाल	पार्वती परियोजना में भू-अर्जन विभाग हमारा	71
66.	देवेंद्र कौर	भ्रष्टाचार का विरोध करें, राष्ट्र के प्रति समर्पित रहें।	72
67.	शिव कुमार राम	हिंदी भाषा का मान	73
68.	राम अनुज	जाति-प्रथा ...एक अभिशाप, एनएचपीसी आत्मनिर्भरता का लक्ष्य	74
69.	अमन रस्तोगी	डिजिटल क्रांति	75
70.	राहुल सिंह	प्राकृतिक स्त्रोतों से ऊर्जा का महत्व	75
71.	विष्णु गुप्ता	वंदनीय प्रभु	76
72.	राधा मेहता	बस एक कदम और...	76
73.	गिरधारी राय	चला था... जानकर एक रास्ता ...	77
74.	आदित्य बिष्ट	बात तो नहीं होती...	77
75.	आशीष आनन्द आर्य	तुम संग ख़ुशी... !, कौन जोड़ेगा अनुराग?, गर्व के आँसू	78-79
76.	सुनिता राम	हर बात तुमसे	79
77.	श्रुति सिन्हा	ख़ामोशी, कलम का काफ़िला	80
78.	पंकज गुप्ता	पहाड़	81
79.	सिन्हा पवन अमरेन्द्र	मैं एनएचपीसी लिमिटेड	81
80.	हरि ओम शुक्ल	जीवन का आधार है हिंदी	82
81.	राजभाषा से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य		83-84

एनएचपीसी गीत

एनएचपीसी से रोशन, रोशन वतन हमारा
कर्मठ हैं इसके सेवक, मेहनत है इनका नारा

ऊँचे इरादे इसके, पक्के हैं इसके वादे
और लक्ष्य चले जो लेके, उसे पूरा कर दिखाते
सुन्दर हैं इसके सपने, दे सबको ये सहारा
एनएचपीसी से रोशन, रोशन है भारत सारा

ऊर्जा संरक्षण करते, हैं बनाते जल से बिजली
प्रदूषण हम बचाते, देकर के स्वच्छ बिजली
हर गाँव हर शहर में, गूँजे है नाम हमारा
एनएचपीसी से रोशन, रोशन है भारत सारा

जल, सौर और पवन से, बिजली हैं हम बनाते
रोशन करें घरों को, कारखानों को चलाते
अंधेरा दूर करके, सबको बांटे उजाला
एनएचपीसी से रोशन, रोशन है भारत सारा

देशवासियों को समर्पित, है ये संस्थान हमारा
निष्ठा ईमानदारी संग, जीतेंगे विश्वास सारा
श्रम ही हमारी पूजा, श्रम ही हमारा नारा
एनएचपीसी से रोशन, रोशन है भारत हमारा

सभी कार्मिकों को समर्पित.....

माला आनंद
महाप्रबंधक (विद्युत), डिज़ाइन (ईएण्डएम) विभाग,
निगम मुख्यालय, फरीदाबाद

सब कुछ तो है इन बनारसी धागों में

बनारसी साड़ी
जिसके धागों में मेरी बचपन की यादें है बुनी।
जिसके धागों में मेरी बचपन की यादें है बुनी।

इसमें है दादी की कहानियां और ताश का खेल
दीदी के साथ वह कीत कीत का खेल
पूरी दोपहर फतिंगे पकड़ना,
वो छुप्पन छुपाई और पिट्ठु का खेल।
सब खेल छुपा है इन बनारसी धागों में,
सब कुछ तो है इन बनारसी धागों में।

इसमें है जामुन और अमरूद के कोमल पत्ते का स्वाद,
और है खट्टी मीठी बूटी का स्वाद,
चमचम की मिठास और मघई पान की खुशबू,
सब स्वाद पिरोया है इन बनारसी धागों में,
सब कुछ तो है इन बनारसी धागों में।

रेलवे बंगलो के पिछली गलियों में, नटो का खेल देखना,
वहाँ बंदर का नाच, भालू का ठुमकना देखना,
पिछली गली के सब रौनक को अपनी आंखों में समेटना।
सब दृश्य पिरोया है इन बनारसी धागों में,
सब कुछ तो है इन बनारसी धागों में।

वह छाता लेकर बारिश में भीगना,
पॉल वाली नौका को पंखा से होंकना,
रोज़ रेनी-डे की मन्नत माँगना,
उस दिन घर के अन्दर ही छाता खोल कर बैठना,
सब शरारतें पिरोयी है इन बनारसी धागों में,
सब कुछ तो है इन बनारसी धागों में।

वह दशाश्वमेध घाट पर नहाना,
विश्वनाथ मंदिर में अर्चन करना,
उसकी गली में खिलौनों के लिए मचलना,
वहाँ की कचौरी और जलेबी का नाश्ता,
सारी यादें सिमटी है इन बनारसी धागों में,
सब कुछ तो है इन बनारसी धागों में।

वह स्टेशन के अंदर से सेंट मैरी स्कूल जाना,
फिरंगियों को देख कर हाथ हिलाना,
वह अस्पताल के सामने घर का होना,
गुजरती जिंदगी और मौत का मंजर देखना,
जिंदगी का फलसफ़ा हैं इन बनारसी धागों में,
सब कुछ तो है इन बनारसी धागों में।

वह राधा स्वामी सत्संग की सुमधुर भजन,
भजन के बाद मिलने वाला वह बेसन का लड्डू,
दुर्गा पंचमी और नवमी का वह विशाल भंडारा,
भंडारा में बैठने के लिए वह दौड़ लगाना,
वह स्वादिष्ट कद्दू की सब्जी और हींग वाली कचौरी का स्वाद,
सब स्वाद तो बुनी है इन बनारसी धागों में,
सब कुछ तो है इन बनारसी धागों में।

बनारसी साड़ी पहन लूं तो लगता है,
सारा बचपन सिमट आया, इसके आंचल में,
सब कुछ तो है इन बनारसी धागों में।

देवी पूजा

शक्ति की देवी दुर्गा हैं,
पर औरत अबला हैं।
धन की देवी लक्ष्मी हैं,
पर औरत वित्तीय मामलों में कमजोर हैं।
विद्या की देवी सरस्वती हैं,
पर औरत गणित में कमजोर हैं।
सजदा करे देवी की,
पर तौहीन करे घर की औरत को।
यह दोहरी मानसिकता क्यों हैं,
यह तो औरत को दबा कर रखने की कोई साजिश है।
सदियों पुरानी पितृसत्तात्मकता मानसिकता में,
हम औरत ही औरत की दुश्मन बन गयी हैं।
आओ दुर्गा पूजा में शक्ति का आवाहन करें
हर औरत का और खुद का सम्मान करें।
हम शारीरिक रूप से कोमल हो सकते हैं,
मानसिक रूप से कमतर नहीं।
एकता से ही जी सकते हैं सम्मान से,
शिक्षित हो कर ही बढ़ सकते हैं समाज में। ❖

मां बनना आसान नहीं होता

मां बनना आसान नहीं होता,
बच्चे को नौ महीने गर्भ में और ज़िन्दगी भर,
दिलो दिमाग में रखना आसान नहीं होता।
मां बनना आसान नहीं होता।

जब दर्द पराकाष्ठा पर पहुंच जाये और मरने को दिल चाहे,
तब नई ज़िन्दगी का उदय होता है,
हर बच्चे के साथ नया जन्म लेना आसान नहीं होता।
मां बनना आसान नहीं होता।

कुक, नर्स या हिटलर बनना तो आसान हैं।
पर शिक्षक, दोस्त या सबसे बड़ा राजदार

बनना आसान नहीं होता।
मां बनना आसान नहीं होता।

मां सब जानती है – मां सब जानती है
से लेकर "तुम कुछ नहीं जानती का सफर"
आसान नहीं होता।
मां बनना आसान नहीं होता।

अब श्रीकृष्ण किसी द्रोपदी की अस्मिता बचाने नहीं आते,
इस देश में आज भी बेटी की मां होना आसान नहीं होता।
बेटी की मां बनना आसान नहीं होता।

बेटा दिल के, तो बेटी आत्मा के करीब होती है,
हर प्रहर उनका चिंतन करना आसान नहीं होता।
मां बनना आसान नहीं होता। ❖

राजीव रंजन प्रसाद
महाप्रबंधक (पर्यावरण)
पर्यावरण एवं विविधता प्रबंधन विभाग
निगम मुख्यालय, फरीदाबाद

यह सोच कृष्ण की गीता है

ऐसी गरजन, मन में सिहरन, सागर दहाड़ कर रोता है
भवन अरे, वह डगर गया, यह नगर लहर में खोता है।

धागा धागा क्यों उधड़ रहा, हे महायुद्ध के सूत्रधार,
तुम रहे नहीं तो कैसा युग, कैसा बदलाव सुनिश्चित हो?
बचे-खुचे कुछ यादव गण, मेरा टूट चुका सा मन,
रथ चला हस्तिनापुर को पर, लगता है राह अनिश्चित हो।
मैं भी डूबा, तुम भी डूबे, यह भी डूबा, वह भी डूबा,
जो नहीं रहा वह उबर गया जीवित, जीवन को ढोता है।
ऐसी गरजन, मन में सिहरन, सागर दहाड़ कर रोता है।

क्या याद करूं वह महायुद्ध, जब धरा, रक्त से लाल हुई,
यह "धर्म युध्द है तुम बोले", मैंने संधान किये मोहन,
तुम कर्म करो यह कहते थे, रथ मेरा साधे रहते थे,
मैं तेरे सोचे का साधन, सब भूल गया गुरुजन-परिजन,
पर शेष रहा क्या अहो कहो, न शत्रु बचे ना मित्र रहे,
अब नहीं रहे तुम भी कान्हा, क्यों होता है जो खोता है?
ऐसी गरजन, मन में सिहरन, सागर दहाड़ कर रोता है।

तुम थे तो सच केवल तुम थे, तुम नहीं भला क्या मैं मेरा,
लहरों की गर्जन, तर्जन से, मेरे भीतर भी अंधेरा,
तुम रह जाते, यह जग तेरे अर्चन, दर्शन से जी लेता,
गरल पिलाते, यह अर्जुन अमृत कह, हस कर पी लेता।
हे धीश द्वारिका के लौटो, जीवन मृत्यु के नाथ तुम्हीं,
या मुझको भी मिट जाने दो, लहरों में लेकर गोता है।
ऐसी गरजन, मन में सिहरन, सागर दहाड़ कर रोता है।

कैसा विलाप है यह अर्जुन, दारुक ने रथ रोका, बोले,
आना जाना है एक क्रिया, हे कर्म मार्ग के पथिक सुनो,
तुच्छ सारथी मैं केवल, रथ मधुसूदन का हाँका है
उनसे सीखा जीतो मन को, जो डगर सरल मत उसे चुनो,
यह सोच हमें पानी कर दे, यह सोच हमें पत्थर कर दे
सोच तुम्हारा मोह पार्थ, यह सोच कृष्ण की गीता है।
यह ऐसी गरजन, मन में सिहरन, सागर दहाड़ कर रोता है।

यह कृष्णकाल था, बीत चला, लहरे हैं लील रहा सागर,
नव सृजन तभी, जबकि अतीत, अपना अस्तित्व मिटाता है।
हर युग का अपना हेतु और हर युग के अपने परिवर्तक,
हर युग के अपने अर्जुन हैं, हर युग का अलग विधाता है।
जो समय शेष है, यह सोचो, क्या हेतु तुम्हारा बचा रहा,
मिटाना अकाट सच है लेकिन उसपर विलाप हर थोथा है।
यह ऐसी गरजन, मन में सिहरन, सागर दहाड़ कर रोता है। ❖

अर्चना प्रकाश
महाप्रबंधक (सिविल)
रतले हाइड्रो इलेक्ट्रिक पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड

उपभोक्तावाद व जिम्मेदारी

अहोभाग्य हमारे,
ईश्वर ने मानव जीवन दिया,
सुंदर धरती का वरदान दिया,
समृद्ध संस्कृति धाती में मिली,
पूर्वजों की सृजित विज्ञान मिली।
हम इसे उपकार समझे,
उपभोग करे पर मत भूले,
यह विरासत पूर्वजों से है मिली,
और, यह है धरोहर
आने वाली पीढ़ियों की।

हमने प्रकृति का दोहन इतना किया,
कि आज आहत धरती आकुल-परेशान है,
जन्मसिद्ध अधिकार समझ वृक्षों का संहार किया,
परंतु वृक्षों का पुर्नरोपन व्यक्तिगत कर्तव्य है,
यह अभी तक, हमें क्यों समझ न आया है।
आज पृथ्वी का संतुलन बिगड़ गया है,
परिणामतः मौसम चक्र भी दिग्भ्रमित है,
कहीं सुनामी, कहीं बाढ़ तो कहीं अकाल है।

निःशुल्क नदियों के जल का उपभोग किया,
मगर इनकी स्वचछता का ख्याल न आया।
प्रकृति प्रदत संसाधनों का उपभोग किया,
विविध कृत्रिम संसाधनों का निर्माण किया,
और नॉन-बायोडिग्रेडेबल कचरों का अंबार लगाया,
मौका मिला तो कचरों को जलस्रोतों में बहाया,
तो कभी अपनी रिहायश से दूर उनका ढेर लगाया,
परंतु उन कचरों के निस्तारण की विधा न अपनाया।
आज चारों ओर कूड़ों का अंबार है,

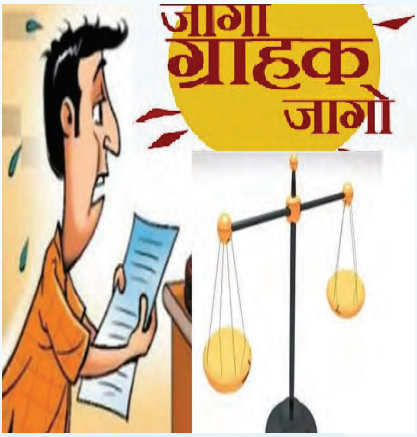

हवा प्रदूषित, नदियाँ प्रदूषित, भू-जल प्रदूषित,
पूरी धरती प्रदूषण का शिकार है।

हमें क्या, हम एसी में बैठे हैं
एयर-कर्टन प्रवेशद्वार पर स्थापित है।
कमरे में रूम-फ्रेशनर की खुशबू है,
वाटर प्युरिफायर का जल उपलब्ध है,
सच कहें तो हमें भी वातावरण की परवाह है।
तभी तो प्रकृति की भलाई से संबंधित है।
मैसेज अनवरत, कभी वाट्सऐप तो कभी फेसबुक
या विभिन्न संचार माध्यमों पर अग्रसारित करना
हमारे परम कर्तव्य का अहम हिस्सा है।
हम टेक्नोंसेवी हैं, रोज फोन बदलते हैं,
नए मॉडलों की गाड़ी रखना आधुनिक संस्कार है।

रोज नए-नए परिधान आवश्यक है,
रोज नए उपस्कर का आविष्कार,
आगे बढ़ने की एकमात्र पहचान है।
अद्यतन उपकरणों से सुसज्जित होना
इंसान के आधुनिक होने का परिचायक है।
एक से बढ़ कर एक घर बनवाने का दौर है
प्लॉट पर प्लॉट खरीदने की होड़ है।
होटलों की श्रृंखला है, रेस्टोरेंटों की श्रृंखला है।
उपभोक्तावाद अपने चरम पराकाष्ठा पर है,
रोज नए मल्टीप्लेक्स खुल रहे हैं,
खेती की जमीन आज अनवरत
व्यावसायिक जमीन में तब्दील हो रही है।
परंतु करें क्या? हमारी इच्छाएं अनंत है।

बिल्कुल सही, मानव अग्रशील है।
परंतु इस अग्रशीलता के क्रम में,
प्रकृति में होने वाली विनाशलीला
की रोकथाम क्या जरूरी नहीं है।
विचार करें, क्या प्रकृति की सुरक्षा,
आज के परिस्थिति में हर किसी की,
अपरिहार्य व्यक्तिगत जिम्मेदारी नहीं है।
ज्यादा नहीं छोटे छोटे प्रयास करें।
संसाधनों का सीमित उपयोग करें
घर की तरह अपने आस-पास भी,
स्वच्छता बनाए या कम से कम,
गंदगी तो नहीं फैलायें।

धर्म-मजहब या अन्य वजहों के निमित्त,
जल-स्रोतों को प्रदूषित न करे।
आधुनिक संसाधन व उपस्कर
आवश्यकतापूर्ति के निमित्त है,
कभी मॉडल तो कभी दिखावे के नाम
उपभोक्तावाद को बढ़ावा ना दें।

मिटते वन-सम्पदा, नदी-पहाड़, झरने-तालाब
नित दे रहे हैं आगामी आपदा के संकेत।
अभी भी वक्त है, सोचे-समझे,
कुछ तो अगली पीढ़ी का भी ख्याल करें,
अगर इस रफ्तार से प्रकृति दोहन हुआ,
कितनी भी हो संपत्ति, हमारे बच्चों को
जीने योग्य संसार नहीं दे पाएगी।
जल, हवा, भोज्य पदार्थ सभी का अभाव होगा,
और उन्हें अपने पूर्वजों के कृत पर मलाल होगा। ❖

नवीन कुमार साह
वरिष्ठ प्रबंधक (वित्त)
क्षेत्रीय कार्यालय, ईटानगर

एनएचपीसी गाथा

मैं हूँ एनएचपीसी।
जल और पहाड़ ही मेरा जीवन है।
जमता हूँ, पिघलता हूँ, फिर तपता हूँ।
पहाड़ और चट्टानों को छेदता हूँ।
नदियों के बहाव व वेग को मोड़ता हूँ।
मैं हूँ एनएचपीसी।।

वैसे तो ज़िम्मेदारी है हमारी, स्वच्छ बिजली देने की,
पर तैयार होने में मुझे लग जाती है, मेरी जीवन सारी।
कभी होती है भूमि अधिग्रहण की समस्या,
तो कभी लोकल जन जीवन की।
कभी सहनी पड़ती है राज नेताओं की कूटनीति,
तो कभी प्राकृतिक आपदाओं की समस्या।
मैं हूँ एनएचपीसी।।

जीवन नहीं है मेरा आसान, फिर भी
करता हूँ सबका कल्याण।
चाहे बात हो सामाजिक समरसता,
या हो स्थानीय उत्थान की
सबका रखता हूँ ध्यान पूरी ईमानदारी से,
निभाते हुए कंपनी की सामाजिक उत्तरदायित्यों को।
मैं हूँ एनएचपीसी।।

यह सही है कि लागत है हमारी कम
पानी, मशीनों के रख रखाव,
ब्याज व मूल्य ह्रास के साथ कर्मचारियों के वेतन की।
स्थानिय ऊत्थान के साथ करता हूँ मानव कल्याण।
तभी तो अर्जित कर पाता हूँ शुद्ध लाभ का विकास,
रखते हुए ध्यान सरकार, शेयर धारकों
तथा अपने आश्रित कर्मचारियों का।
मैं हूँ एनएचपीसी।। ❖

बाबू लाल मुन्द्रा
उप महाप्रबंधक (वित्त)
निगम मुख्यालय, फरीदाबाद

तीज

हर एक त्यौहार में हम
नये जज्बात पिरोते,
तीज हो या करवाचौथ
प्रेम से उसको संजोते।
दोनों उत्सव का एक ही प्रयोजन,
अलग हैं बस उनको
निभाने का ढंग
हर स्त्री इस दिन रखती
उपवास।

निभाती अपना पत्नी धर्म हर साल।
पार्वती माँ, जो कहलाती तीज माँ,
उनसे भक्तिपूर्ण करती प्रार्थना
रहें स्वस्थ, आयुष्मान उसका पति।
जो है उसके घर का मुखिया।
तीन तरह की तीज हमनें अपनायी,
हरतालिका, हरयाली, कजरी हमें भायी।
हरा, पीला, लाल रंग सब पर चढ़ा सुनहरा
स्त्री का रंग होता उसके प्रेम से गहरा। ❖

वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई

चली-चली बीरांगना चली.....
हाथ में ध्वज को लहरा,
नहीं कभी किसी से घबरा
लगी अपनी झांसी को बचा,
गद्दारों के सामने खड़ी।
ना थके, ना थमें, ना ही रुके,
अंग्रेजों की फौज से ना डरें।
मुश्किलों को हँस कर सहे,
सर कटे मगर सर ना झुके।
हौसले हैं हरदम बुलंद,
ना हो चाहें साथी कोई संग।
पवन पर सवार, लिये तलवार,
निरन्तर अपने पथ पर बड़ी।
रानी को रोकने की चली चाल,
अंग्रेजों ने ऐसा बिछाया जाल।
लहूलुहान हो गयी लक्ष्मी
फिर भी अपने इरादों में खरी।
चली-चली वीरांगना चली..... ❖

डॉ० राहुल खन्ना
महाप्रबंधक (भूविज्ञान)
पार्बती-।। जलविद्युत परियोजना, हिमाचल प्रदेश

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

किसी बिटिया को पढ़ाएँ !

पापा! मेरा मन करता है, पढ़ने मैं भी स्कूल जाऊं।
टाई और स्कर्ट पहनकर, बस्ता मैं भी लटकाऊँ।।

टिफिनबाक्स में पूड़ी-सब्जी, और मिठाई खाऊँ ।
अच्छी-अच्छी किताबों से, अलमारी अपनी सजाऊँ।।

बड़ी होकर मैं भी, पुलिस-कलेक्टर बन पाऊँ।
अपने एक इशारे से, सबको नाच नचाऊँ।।

भाई कहता,भोली है तू! सपना तेरा सच न होगा।
उठके रोज सवेरे तुझको, कूड़ा-कचरा बिनना होगा।।

घर-घर जा कर माँ मेरी, झाड़ू-पोछा करती है।
कपड़े धोती और सुखाती, सदा मुझसे ये कहती है।।

छोटे-छोटे ये हाथ हैं तेरे, तू चाँद कहाँ से लाएगी?
पैर जमीं पे रख अपने, वर्ना औंधें मुँह गिर जाएगी।।

पैसे नहीं पास में इतने, कि तुझे लिखाऊँ-पढ़ाऊँ।
किताब-कापी खरीदू, कैसे ड्रेस तेरी सिलवाऊँ?

आँसू देख आँख में माँ की, जी मेरा भर आता है।
कुछ कर दिखाऊँ इस जन्म में, मन निश्चय कर जाता है।।

सुना है हमारे लिये, सरकार से पैसे बहुत आते है।
रास्ते में भूखे भेड़िये, पर सब चट कर जाते हैं।।

पापा! वो दिन कब आयेगा, गरीबी हमारी मिट जायेगी?
घर में अपने खुशहाली होगी, किताब-कापी मेरी भी आयेगी।।

क्या ये बेटी! इस जीवन में, सपना अपना सच कर पायेगी?
सवा सौ करोड़ के महान देश में, या घुट-घुट के मर जायेगी।।

आइये! हम सब हाथ बढ़ाऐं, किसी बिटिया को गले लगायें।
जो लिखना पढ़ना चाहती है,
किस्मत से अपनी लड़ना चाहती है।।
किसी बिटिया को पढ़ाएं। ❖

देशद्रोही मच्छर

सुबह आज जब मैं जागा
देखा कुछ मोटे मच्छर मस्त घूम रहे हैं
मच्छरदानी से बाहर निकलने का रास्ता ढूँढ़ रहें हैं
मन किया सब को मार डालूँ!
रात भर इन्होंने आखिर मेरा ही तो खून पिया है!
फिर सोंचा जाने दूँ .....
कुछ पल ही सही, जीवन मेरे संग तो जिया है!
क्यों करूँ? रक्त से इनके, गंदे अपने हाथ,
नहीं रहे अभी, जब मुझे ये काट!
पीड़ा भी तो नहीं दे रहे, अभी मुझको
मन किया, कर दूँ माफ इनको!
ये सोंचते-सोंचते, तकिये के नीचे से रिमोट निकाला
झट से टीवी चलाया,
और ज्यों ही अपना मन पसंद न्यूज-चैनल लगाया,
स्क्रीन पर ब्रेकिंग न्यूज को फ्लैश होता पाया!
आज सुबह साढ़े सात बजे, पुणे के येरवड़ा जेल में,
आंतकवादी अजमल कसाब को फाँसी.....

सुन कर यह खबर,
विचलित मन, हो गया और भी खिन्न...
तब आया याद मुझे,
चार वर्ष पूर्व का वो मनहूस दिन...
अंधाधुन चलती गोलियाँ, वो बम के धमाके!!
आंतकवादी हमले में, मुम्बई में बिछी लाशें!!
तब आया याद मुझे,
वो छत्रपति शिवाजी टर्मिनल, वो जलता हुआ होटल ताज
शर्मशार हुआ तिरंगा उस दिन, है जिस पर हमें बड़ा नाज
तब आये याद मुझे,
मेजर उन्नीकृष्णन, हेमंत करकरे, काम्टे और सालस्कर,
वो वीर एन एस जी कमांडो, वो निर्भय पुलिस आफिसर
कर्तव्यपालन करके, जिन्होंने मौत को गले लगाया था
उन्हीं का बलिदान देखिये! आज क्या खूब रंग लाया था

अब मुझे अहसास हुआ अपनी भूल का,
हृदय को पीड़ा देते उस शूल का !
अरे!! मैं अभी ये क्या करने जा रहा था?
अपना ही खून पीने वाले मच्छरों को बचा रहा था !
अगर ये मरे नहीं, तो औरों को भी काटेगें,
क्या बूढ़े? क्या नौजवान? क्या बच्चे?..
सभी को बीमारियाँ बाँटेगें...!
तब जल्दी से मैंने मच्छरदानी को, चारों तरफ से दबाया,
इससे पहले मच्छर, खुले छिद्रों से भाग पाते !
चट! चट! की आवाज से कमरे में गूंज गये चाटें...
सारे पलंग पर मच्छरों की लाशें बिछ गईं,
लाल हथेली देख अपनी, मेरी भी बाछें खिल गईं !
आज मेरा अभिमान भी, अपने राष्ट्रपति से कम न था हूजूर!
जिसने फाइल पर लिख दिया था :
अजमल कसाब की क्षमादान याचना नामंजूर... नामंजूर...❖

अंगद कुमार
महाप्रबंधक (सिविल)
पार्बती-II जलविद्युत परियोजना, हिमाचल प्रदेश

पार्वती –II

निगम मुख्यालय से दूर,

हरी-भरी पहाड़ियों के बीच!
मीलों दूर हूँ मैं समाया,
पार्वती-II नाम कहलाया।

विकट परिस्थितियों के बाबजूद कदम से कदम मिलाया,
एवं निरंतर प्रगति के पथ पर हूँ आया,
समय समय पर भौगोलिक वातावरण ढेरों मुसीबतें लाया,
उन सब से लड़कर मैंने सबका हौसला बढ़ाया,
हुरला, पँचा, मनिहार जीवा एवं जिगराई
जैसे दुर्गम जल स्रोतों का पानी,
सुरंग से पावर हाउस पहुंचाया।

पार्वती के आँचल में बांध है प्यारा,
सियूण्ड में है पावर हाउस न्यारा,।
एशिया की सबसे लंबी सुरंग
बरशैनी से शीलागढ़ होते हुए सेंज
जैसे आसमान में चमकता सितारा
अभी थोड़ा सा सफर है अधूरा,
जो सभी के अथक परिश्रम से शीघ्र ही होगा पूरा।

दूर-दूर तक रास्तों को पहुंचाया,
स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर को मुहैया कराया।
परियोजना क्षेत्र मे वृक्षों को लगाया,
इस तरह पर्यावरण को भी बचाया।

लाड़ा, सीएसआर, आरआर प्लान से स्थानीय विकास करवाया,
निरंतर प्रगति के पथ पर हूँ आया
हिमाचल सरकार से मिलकर नई स्कीम हूँ लाया,
प्रभावितों को घर बैठे रोजगार का लाभ दिलाया।

निगम मुख्यालय से दूर,
हरी-भरी पहाड़ियों के बीच
मीलों दूर हूँ मैं समाया,
पार्वती-II नाम कहलाया।
विकट परिस्थितियों के बाबजूद कदम से कदम मिलाया,
एवं निरंतर प्रगति के पथ पर हूँ आया। ❖

अरुण कुमार सोनी
महाप्रबंधक (सिविल)
दिबांग बहुउद्देश्यीय परियोजना, अरूणाचल प्रदेश

जीवन की नाव चलती रहेगी

जीवन की गंगा में भी कष्टों के
कंकड़ आपको मिलेंगे,
साथ आपके यह अंत तक चलेंगे।
इन कष्टों से आप तभी छुटकारा पा सकेंगे,
जब आप जीवन की अच्छाई रूपी अमृत को अपना सकेंगे।
जीवन में ऊँच-नीच चलती रहेगी,
जीवन की नाव चलती रहेगी, पार आपको लगाती रहेगी।।

इस जग में सुखी वही है,
जो सुखद पलों की अहमियत है जानता,
यादों की पोटली में संवार के उन्हें है संभालता।
जीवन का असली सुख वही भोग पाता,
जो बुरे पलों को सीख और अच्छे पलों को यादें है बनाता।
सुखी होना हमेशा ही स्वयं की पसंद रहेगी,
जीवन की नाव चलती रहेगी, पार आपको लगाती रहेगी।।

केवल सुखद पलों से भरा जीवन
एक अच्छा जीवन नहीं कहलाएगा,
कोई प्राणी बिना दुःख के सुख को कैसे पहचान पाएगा।
जीवन जीने का सार वो कैसे समझ पाएगा,
जब तक इन मुश्किलों से पार नहीं पाएगा।
दुःख की दरियाँ भी कब तक बह पाएगी,
जीवन की नाव चलती रहेगी, पार आपको लगाती रहेगी।।

जीवन में ठहराव भी जरूरी है,
स्वयं के जीवन की घटनाओं का आंकलन भी जरूरी है,
इन घटनाओं से सीखना भी जरूरी है,
जीवन के अग्नि पथ पर चलना भी जरूरी है।
आपकी नीतियाँ ही आपके जीवन की राह बनाएगी,
जीवन की नाव चलती रहेगी, पार आपको लगाती रहेगी।। ❖

बालेश्वर नाथ
उप महाप्रबंधक (सिविल)
संविदा (ईएण्डएम), निगम मुख्यालय

एक छोटी सी प्रस्तुति "रचना"

रचनाएँ होनी चाहिए बस यही पर्याप्त नहीं
इसका एक विस्तृत आकार हो, यह भी पर्याप्त नहीं
यह किसी विशेष महापुरुष के संदर्भ में हो,
अथवा उनसे प्रेरणा लेकर ही हो, यह तो बिल्कुल भी आवश्यक नहीं
इसके लिए मन के ज्वलंत विचारों को एक शीशे की तश्तरी में उतार लेने का दृढ़ विश्वास,
मन की भावनाओं को दर्पण की तरह
प्रस्तुत करने की उद्भूत भावना,
लोगों को अपने विचारों की तरफ आकर्षित करने की चाह,
अपने विचारों से दूसरों की सोच को
सार्थक रूप में प्रभावित करने की इच्छा'
यदि हो तो रचनाओं को अपना आकार जरूर लेना चाहिए,
रचनाएँ प्रस्तुत जरूर होनी चाहिए,
जरूरी नहीं की रचनाएँ सम-सामयिक हो,
साहित्य के भाव-रस से परिपूर्ण हो,
तकनीकी ज्ञान दिखाने का परिचायक हो,
बस यही सोच है कि जो भी रूप में हो,
भावनाएँ हर तरह से परिपूर्ण हो,
की याद रहे, याद करें और बस
हमेशा आत्मा के हरेक कोटि से याद करें।

❖

"कुशल प्रबंधन"

एक कुशल प्रबंधन है बहुत जरूरी
"प्रबंधन" शब्द के इस्तेमाल भर से बढ़ती है आशा
आपदा की घड़ी के समय जीवन,
जीने की जंग को लेकर दिलाती है आशा
ताकि जीवन में निरंतर आगे बढ़ने की होड़ में,
खुद को छु न सके कोई निराशा
चंद्रयान को चाँद के आगोश में कभी न कभी,
रख देने की हो आशा
पर ऐसी आशा को यथार्थ में परिवर्तित होने हेतु,
कुशल प्रबंधन है बहुत जरूरी
प्रबल इच्छा शक्ति एवं दृढनिर्णय के साथ नेतृत्व की उलब्धता रहे
आपस में अपनापन होने की भावना का एहसास रहे।
पर ऐसा होने हेतु कुशल प्रबंधन है बहुत जरूरी।
विभिन्न क्षेत्र के सभी आयाम समय से पूरा हो सके।
मितव्ययी होकर भी ज्यादा पाया जा सके।
लक्ष्यों को पाने की राह में असफलता पाने पर,
एकजुटता से लक्ष्य को हासिल किया जा सके।
पर ऐसा होने हेतु कुशल प्रबंधन है बहुत जरूरी।
निज गौरव का भी नित ज्ञान रहे।
हम भी कुछ हैं यह ध्यान रहे।
दुर्गम पहाड़ों के मध्य शीतल जल की तेज प्रवाह,
से बहती धारा हो।
या रेगिस्तानों में सतत बहती हवा का तेज झोंका हो,
या सूरज की प्रचण्ड गर्मी हो।
इन सबका दोहन करके बिजली उत्पादन करने हेतु,
एक कुशल प्रबंधन है बहुत जरूरी।

❖

पूरन सिंह रावत
सेवानिवृत्त समूह वरिष्ठ प्रबन्धक (यांत्रिकी)

अभियांत्रिक जीवन

अभियांत्रिक का जीवन अपना,
दिव्य और अनमोल है।
सकल जगत के प्रगति लाभ हित,
इसका अद्वितीय मोल है।।

कायनात की सारी खुशियाँ,
मिलती शिक्षा मान से।
जीवन का विकास करती,
जुड़ कर के विज्ञान से।।
यहाँ सृष्टि की कृपा दृष्टि भी,
सतरंगो का घोल है।
अभियांत्रिक का जीवन अपना,
दिव्य और अनमोल है .....

अभियन्ता की शक्ति साधना,
प्रखर भाव श्रीधाम से।
रचे विलक्षण संरचना यश
सौंप सुखद परिणाम से।।
नित्य नए आयामों को चुन,
लक्ष्य निष्ठा का तोल है।
अभियांत्रिक का जीवन अपना,
दिव्य और अनमोल है .....

ज्ञान ध्यान विज्ञान कर्म से,
मानव का उद्धार करे।
रचे जगत में अदभुत रचना,
संरचना का आधार बने।।
सुपावन धरती का आँचल,
सौपे सकल खगोल है।
अभियांत्रिक का जीवन अपना,
दिव्य और अनमोल है ....

ब्रह्मांड हमारा सतरंगी,
आकर्षण से भरपूर है।
हम सब इसके अंग रंग रस,
रहे पास कब दूर हैं।।

संजोकर मानव खगोल को,
निभाता अद्वितीय रोल है।
सकल जगत के प्रगति लाभ हित
इसका अद्वितीय मोल है.
अभियांत्रिक का जीवन अपना,
दिव्य और अनमोल है .....

❖

उत्तम कुमार
समूह वरिष्ठ प्रबंधक (सिविल)
संविदा (सिविल), निगम मुख्यालय, फरीदाबाद

आओ मिलकर देश बनाएँ

आओ मिलकर देश बनाएँ, सभ्यता और संस्कृति जगाएँ,
जो खो गई है अपनी विरासत, उनको फिर से वापस पाएँ,
आओ मिलकर देश बनाएँ।

जन-जन में है शोर बड़ा, स्वार्थ मोह घनघोर बड़ा,
माया की लालच में पड़कर, घोटालों में देश पड़ा।
स्वर्ण चिड़िया कहलाने वाला, आज गरीब और है पिछड़ा,
जो आशक्त वह कैसा तन है, जो मैला वह कैसा मन है।
काले धन से भरे तिजोरी, ऐसा धन भी कोई धन है?
हमने मन में ठाना है, इस सोच से ऊपर आना है।
माया मोह का त्याग करें, सच्चाई से आगे बढ़े,
तभी देश का मान बढ़ेगा, उन्नत पथ पर खूब चढ़ेगा।
आओ मिलकर देश बनाएँ, सभ्यता और संस्कृति जगाएँ,
जो खो गई है अपनी विरासत, उनको फिर से वापस पाएँ।
आओ मिलकर देश बनाएँ।

जात पात का भेद लिए, धर्म ने कुल है बाँट दिये,
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, आपस में सब लड़ते भाई,
उंच, नीच और बड़ा छोटा, कौन खरा और कौन है खोटा?
आन, बान और शान में अब तो, इंसा अब हो गया है छोटा।
न कोई हिन्दू खतरा है, न मुसलमान का खतरा है,
ऊंच, नीच और भेद भाव ने भारत का "पर" कतरा है।
हमने मन में ठाना है, इस सोच से ऊपर आना है,
भूलकर भेदभाव की बातें, आओ करें कुछ लगाव की बातें,
धर्म जाति का भेद मिटाएँ, इंसानियत को सब अपनाएं,
तभी देश का मान बढ़ेगा, उन्नत पथ पर खूब चढ़ेगा।
आओ मिलकर देश बनाएँ, सभ्यता और संस्कृति जगाएँ,
जो खो गई है अपनी विरासत, उनको फिर से वापस पाएँ,
आओ मिलकर देश बनाएँ।

अशिक्षा के जालों में पड़कर, विकास राह में बाधा बनकर,
बीमारी का बोझ बढ़ा, बिन इलाज रोगी रोज मरा,
शिक्षा और स्वास्थ्य जरूरी, सफल देश की है यह धुरी,
इन दोनों के आने से ही, जीवन की इच्छा हो पूरी,

हमने मन में ठाना है, इस सोच को अब अपनाना है
शिक्षा जीवन का है आधार, इसके बिना जीवन बेकार,
स्वस्थ, निरोगी निर्मल काया, मानव रखो भली प्रकार,
हर घर शिक्षा दीप जलाए, निरोगी फिर काया पाएँ,
तभी देश का मान बढ़ेगा, उन्नत पथ पर खूब चढ़ेगा।
आओ मिलकर देश बनाएँ, सभ्यता और संस्कृति जगाएँ,
जो खो गई है अपनी विरासत, उनको फिर से वापस पाएँ,
आओ मिलकर देश बनाएँ।

बड़े बूढ़ों का भूले मान, भूल गए अतिथि सम्मान,
जिसने हमको गोद में पाला, उसको हमने घर से निकाला,
समाज अपने आदर्शों को खोता, देख
कर अब तो मन है रोता,
हमने मन में ठाना है, इस सोच से ऊपर आना है,
माता पिता का मान बढ़ाएँ, अतिथि को फिर देव बनाएँ,
बड़े बूढ़ों का प्यार भी पाएँ, समाज में
इज्जत और नाम कमाएँ।
तभी देश का मान बढ़ेगा, उन्नत पथ पर खूब चढ़ेगा।
आओ मिलकर देश बनाएँ, सभ्यता और संस्कृति जगाएँ,
जो खो गई है अपनी विरासत, उनको फिर से वापस पाएँ,
आओ मिलकर देश बनाएँ,
आओ मिलकर देश बनाएँ। ❖

बी.एन.एस.नवीन कुमार
उप महाप्रबंधक (भूविज्ञान)
अभियांत्रिकी भूविज्ञान एवं भूतकनीकी
विभाग, निगम मुख्यालय, फरीदाबाद

नई राह की ओर ले जाता - पहला कदम

कहीं न कहीं कोई न कोई
बढ़ो एक कदम किसी भी तरफ
या इस तरफ या उस तरफ
पहला कदम हमेशा अकेला होता है
मगर कदम-कदम मिलते हुए
यही बाद में राह में बदल जाता है

कहीं न कहीं कोई न कोई
बढ़ो एक कदम किसी भी तरफ
या इस तरफ या उस तरफ
जैसे कि मुर्गे का स्वभाव
सुबह होते ही आवाज देने का
दुनिया को जगाने के लिए
चाहे कोई जागे या न जागे

जैसे कि बारिश की बूंद
एक कतरा मेघ को फाड़ के
धरती पर बन कर उतरती जलधारा
मगर अपना सफर भी शुरू करती अकेली
एक बूँद के रूप में ही
यह सोचे बगैर कि धरा तक पहुँचते
वाष्प बन उड़ जाएगी या
और बूँदों संग मिल खेतों में छा जाएगी
कहीं न कहीं कोई न कोई

बढ़ो एक कदम किसी भी तरफ
या इस तरफ या उस तरफ
जैसे कि जुगनू की एक छोटी सी रोशनी
सारे अंधकार को तोड़ देती है
जैसे दिए के उजाले की हल्की सी रोशनी
रात के घने अंधेरे को पीछे छोड़ देती है

आप जो भी करें
भले आज उसका असर कम लगे
लेकिन वह किसी राह का पहला कदम है
यह बात सबसे अहम है
जैसे आज चाँद पर एक छोटा कदम
कल मानवता की बड़ी छलांग
संशय से उबर आइये अपने चेहरे पर
उमंग भरी मुस्कान से रखें
अपना पहला कदम

संजना सिंह
समूह वरिष्ठ प्रबंधक (पुस्तकालय)
राजभाषा पुस्तकालय, निगम मुख्यालय

फेसबुक पर श्रद्धांजलि

चार दिन पहले खबर मिली
पिताजी नहीं रहे, गाँव जाना पड़ा
बेटा होने का कर्तव्य निभाकर, उन्हें
स्वर्ग की सीढ़ियाँ चढ़ाकर
घर की सारी जमीन अपने नाम करवा ली
और, आज 12 बजे से पहले ऑफिस जॉइन कर
एक दिन की छुट्टी भी बचा ली।

रात में जब बच्चे अपने वीडियो गेम में
और श्रीमती जी अपने फोन में बिजी
हो गए, तो मन में आया
क्यूँ न पिता जी के लिए एक बढ़िया
सा फेसबुक पोस्ट बनाया जाये
और पितृ प्रेम के साथ साथ अपनी क्रिएटिविटी
का भी इम्प्रेशन जमाया जाए।

आँखों में धीरुभाई अंबानी सरीखे
रोबदार पिता की भव्य छवि लिए
पुरानी एलबम में
अपने स्टेटस से मैचिंग अपने पिता
की तस्वीर खोजने लगा
लेकिन सदा धोती कुर्ता पहनने वाले पिता की
भला सूट बूट में फोटो कहाँ मिलती
अरमानों को कड़ा झटका लगा
कहाँ धीरुभाई अंबानी के चेहरे की गर्व भरी मुस्कान
कहाँ पिता की खिचड़ी दाढ़ी, पके बाल और
तस्वीर में भी झलकती उनकी मिडिल क्लास पहचान
फोटो का आइडिया ही ड्रॉप कर दिया

लिखना चाहता था माइ डैड !
लेकिन सीधे सादे गवईं पिता की धोती वाली तस्वीर से
यह संबोधन मैच नहीं कर पाया
इसलिए मन मार कर बस 'बाबूजी' ही लिख पाया
पिता न तो किसी ऊंचे ओहदे पर थे
न वो कविता कहानी ही लिखते थे

न किसी बड़े नेता मिनिस्टर के साथ
ही उनका उठना बैठना रहा
अब ऐसे गरीब किसान के बोरिंग से जीवन को
किन शब्दों में बखान करता
लीजेंड, विजनरी और स्टेट्समैन जैसे भारी भरकम शब्द
कैसे अपनी श्रद्धांजलि में बयान करता।
फिर सोचा चलो लिख देता हूँ आई मिस यू
पर लगा कहीं ज्यादा एमोशनल न साउंड करने लगूँ
एक तो सबोर्डिनेट्स पर गलत इंप्रेशन जाएगा
दूसरे पत्नी अलग मुंह फुलाएगी
मेरे लिए तो कभी ऐसा नहीं लिखा
कह कह कर ज़िंदगी भर ताना सुनाएगी
बड़ी दुविधा थी क्या लिखे
पिताजी पर ही क्रोध हो आया
सारा जीवन बेकार ही गुज़ार दिया
बढ़ा चढ़ा कर जिसे लिख सकूँ ऐसा
कुछ भी तो नहीं किया
बेटा तो चाहता है अपना आखिरी फर्ज़ निभाना
सोशल मीडिया के जरिये उन्हें पॉपुलर बनाना
एक ऐसी श्रद्धांजलि जिसे सब लाइक और शेयर करें
मगर पिता ही इस काबिल नहीं तो बेटा बेचारा क्या करे ❖

दिवाकर प्रसाद अवधिया
समूह वरिष्ठ प्रबंधक (आईटी)
चमेरा-III पावर स्टेशन, हिमाचल प्रदेश

एनएचपीसी की परियोजनाएं

प्रदूषण रहित ऊर्जा का है यंत्र-तंत्र एनएचपीसी।
सस्ती ऊर्जा उत्पादन का अनवरत यत्न एनएचपीसी।

जे. के. की हस्ती दुलहस्ती, हिमाचल बसा चमेरा है।
दिबांग, तवांग व सुबनसिरी अरूणाचल डारे डेरा है।
ऊर्जा के समुचित संचय का है मूल मंत्र एनएचपीसी।
प्रदूषण रहित ऊर्जा का है यंत्र-तंत्र एनएचपीसी।

नदी नर्मदा इंदिरासागर, ओंकारेश्वर एम. पी. में।
धौलीगंगा इंटरमीडिएट का संयुक्त उपक्रम यू.के. में।
यत्र-तत्र-सर्वत्र प्रगति में रत प्रयत्न एनएचपीसी
प्रदूषण रहित ऊर्जा का है यंत्र-तंत्र एनएचपीसी।

मणिपुर की मणि लोकटक है, सिक्किम की शान तीस्ता है,
नवयुग के तकनीकी खेतों को, ऊर्जा जल से सींचता है,
ऊर्जा क्षेत्रों का सर्वोतम अनमोल रत्न एनएचपीसी
प्रदूषण रहित ऊर्जा का है यंत्र-तंत्र एनएचपीसी।

लेह अवस्थित निम्मो बाजगो, कारगिल चुटक शिरोमणि है,
उड़ी, सलाल, किशनगंगा, अनुपम अनमोल महामणि है
सीमांत क्षेत्र में जलविद्युत का ऊर्जा मंथन एनएचपीसी
प्रदूषण रहित ऊर्जा का है यंत्र-तंत्र एनएचपीसी।

पकलदुल, कीरू, क्वार उपक्रम है सी वी पी पी एल के,
ग्रामीण विद्युतीकरण, सड़क उपक्रम है बी आर आर पी के
ऊर्जा के विविध आयामों में है नित संलग्न एनएचपीसी
प्रदूषण रहित ऊर्जा का है यंत्र-तंत्र एनएचपीसी।

पार्वती के चरणों में सेवा का कार्य समर्पित है
देवभूमि में महादेव को धौलीगंगा अर्पित है,
जलविद्युत लौ रोशन करता संध्या वंदन एनएचपीसी,
प्रदूषण रहित ऊर्जा का है यंत्र-तंत्र एनएचपीसी।

बुंदेलखण्ड में सौर ऊर्जा केरल चले पवन चक्की,
सौर ऊर्जा, ताप ऊर्जा की भी बात करो पक्की,
सस्ती ऊर्जा उत्पादन में है रत प्रयत्न एनएचपीसी
प्रदूषण रहित ऊर्जा का है यंत्र-तंत्र एनएचपीसी। ❖

योगेंद्र सिंह
समूह वरिष्ठ प्रबंधक (वित्त)
वित्त विभाग,
निगम मुख्यालय, फरीदाबाद

कहाँ से कहाँ आ गये

पहले भटूरे को फुलाने के लिये
उसमें **ENO** डालिये

फिर भटूरे से फूले पेट को
पिचकाने के लिये **ENO** पीजिये

जीवन के कुछ गूढ़ रहस्य
आप कभी नहीं समझ पायेंगे

पाँचवीं तक स्लेट की बत्ती को
जीभ से चाटकर कैल्शियम की
कमी पूरी करना हमारी
स्थाई आदत थी
लेकिन
इसमें पापबोध भी था कि कहीं
विद्यामाता नाराज न हो जायें ...!

पढ़ाई के तनाव हमने
पेन्सिल का पिछला हिस्सा
चबाकर मिटाया था ...!

पुस्तक के बीच पौधे की पत्ती
और मोरपंख रखने से हम
होशियार हो जाएँगे ...
ऐसा हमारा दृढ विश्वास था

कपड़े के थैले में किताब-कॉपियाँ
जमाने का विन्यास हमारा
रचनात्मक कौशल था ...!

हर साल जब नयी कक्षा के बस्ते बँधते
तब कॉपी किताबों पर जिल्द चढ़ाना
हमारे जीवन का वार्षिक
उत्सव मानते थे ...!

माता - पिता को हमारी पढ़ाई की
कोई फ़िक्र नहीं थी, न हमारी पढ़ाई
उनकी जेब पर बोझ थी ...
सालों साल बीत जाते पर
माता - पिता के
क़दम हमारे स्कूल में न पड़ते थे ...!

एक दोस्त को साईकिल के
बीच वाले डण्डे पर और दूसरे को
पीछे कैरियर पर बिठा कर
हमने कितने रास्ते नापे हैं,
यह अब याद नहीं बस कुछ
धुँधली सी स्मृतियाँ हैं ...!

स्कूल में पिटते हुए और
मुर्ग़ा बनते हमारा ईगो
हमें कभी परेशान नहीं करता था,
दरअसल हम जानते ही नहीं थे
कि ईगो होता क्या है।

पिटाई हमारे दैनिक जीवन की
सहज सामान्य प्रक्रिया थी
पीटने वाला और पिटने
वाला दोनों ख़ुश थे,
पिटने वाला इसलिये कि हम कम पिटे
पीटने वाला इसलिये ख़ुश होता था
कि हाथ साफ़ हुआ ...!

हम अपने माता - पिता को
कभी नहीं बता पाये
कि हम उन्हें कितना प्यार
करते हैं, क्योंकि
हमें "आई लव यू" कहना
आता ही नहीं था ...!
आज हम गिरते- सम्भलते, संघर्ष
करते दुनिया का हिस्सा बन चुके हैं,
कुछ मंज़िल पा गये हैं तो
कुछ न जाने कहाँ खो गये हैं ...!

हम दुनिया में कहीं भी हों
लेकिन यह सच है,
हमे हक़ीक़तों ने पाला है,
हम सच की दुनिया में थे ...!

कपड़ों को सिलवटों से बचाये रखना
और रिश्तों को औपचारिकता से
बनाये रखना, हमें कभी आया
ही नहीं ... इस मामले में हम
सदा मूर्ख ही रहे ...!

अपना अपना प्रारब्ध झेलते हुए
हम आज भी ख़्वाब बुन रहे हैं,
शायद ख़्वाब बुनना ही
हमें ज़िन्दा रखे है वर्ना
जो जीवन हम जीकर आये हैं
उसके सामने यह वर्तमान
कुछ भी नहीं...!

हम अच्छे थे या बुरे थे
पर हम सब साथ थे। काश!
वह समय फिर लौट आये ...!

हमारे पिताजी के समय में
दादाजी गाते थे ...

मेरा नाम करेगा रोशन
जग में मेरा राज दुलारा

हमारे ज़माने में हमने गाया ...

पापा कहते है बड़ा नाम करेगा
अब हमारे बच्चे गा रहे हैं

बापू सेहत के लिए ...
तू तो हानिकारक है।

सही / वास्तव में हम
कहाँ से कहाँ आ गये..?

डॉ. पिंकी कुमारी राय
मुख्य चिकित्सा अधिकारी
पार्बती-।। जलविद्युत परियोजना, हिमाचल प्रदेश

भ्रष्टाचार का विरोध करें, राष्ट्र को समर्पित रहें

भ्रष्टाचार का विरोध करें, राष्ट्र को समर्पित रहे।
भ्रष्टाचार हमारे देश की एक गंभीर समस्या बन चुकी है,
हम किससे इसकी शिकायत करें यह तो
रोजमर्रा की बात बन चुकी है।

हर कोई कतराता है इसका जिक्र करने से
हमें इसके साथ जीने की आदत बन चुकी है।

भ्रष्टाचार एवं ईमानदारी में होड़ लगी है
कभी तू अच्छा कभी मैं बड़ी की जोर लगी है।

ऐ भ्रष्टाचार तू रुक.... मुझे कमजोर मत समझ
अगर तू डाल-डाल तो मैं पात-पात की तोड़ लगी है।

क्या जमाना आ गया है हर कोई अपने
काम का उचित दाम ले रहा है,
भ्रष्टाचारी भी ईमानदारी का आंचल ओढ़
रिश्वत में मोल भाव कर रहा है ।
भ्रष्टाचार मुक्त भारत का सपना लिए,
ऐ नौजवानों .....तुम पीछे मत मुड़ना,
कभी पैर डगमगाए,

तो ईमानदारी रूपी छड़ी का सहारा मत छोड़ना।

ईमानदारी से मिला एक निवाला
भ्रष्टाचार के मेवे मालपुओं से भी बड़ा है।

ऐ देश तू कोशिश तो कर,
तेरी एक ना दस भ्रष्टाचारियों का अस्तित्व खो देगी
तेरी एक पहल हमारे देश को भ्रष्टाचार मुक्त कर देगी। ❖

मनोज कुमार 'जानी'
समूह वरि. प्रबंधक (विद्युत)
सलाल पावर स्टेशन, जम्मू व कश्मीर

बहुत देर तक रहा.....

ये दिल तो बेकरार, बहुत देर तक रहा।
उनका भी इंतजार, बहुत देर तक रहा।

हम बेखुदी में ही रहे, जब वो चले गए,
ख़ुद पर न अख़्तियार, बहुत देर तक रहा।

मिलने का करके वादा, आए नहीं मगर,
मिलने को मैं तैयार, बहुत देर तक रहा।

झूठी है उनकी फितरत, मालूम थी मगर,
वादों का मैं शिकार, बहुत देर तक रहा।

मर भी गया तो अपने, मसीहा को देखकर,
वैसे तो वो बीमार, बहुत देर तक रहा।

यूं तो कदम-कदम पर, नादानियाँ हुईं,
कहने को होशियार, बहुत देर तक रहा।

जिसको चुकाने के लिए, ये उम्र कम लगे,
माँ-बाप का उधार, बहुत देर तक रहा।

ये लोग, ये समाज, नजर आए तो मगर,
जुल्फों में गिरफ्तार, बहुत देर तक रहा।

उसका बढा मिला, कभी हिसाब जो हुआ,
लेकिन वो कर्जदार, बहुत देर तक रहा।

उसकी दगाओं की मुझे, आहट भी ना हुई,
उससे मैं खबरदार, बहुत देर तक रहा।

उसके फरेब झूठ की, आई नहीं खबर,
बगलों में पत्रकार, बहुत देर तक रहा।

उसकी बुराइयों को, भला कैसे मैं कहूँ,
वो मेरा राजदार, बहुत देर तक रहा।

ये रूठना - मनाना, नाराजगी तो है,
अपनों से न तकरार, बहुत देर तक रहा।

जब मिल नहीं सके तो, ख़्वाहिश ही छोड़ दी,
जिसका वो तलबगार, बहुत देर तक रहा।

उसने ही चलाया है, खंजर वो आख़िरी,
जिसका वो मददगार, बहुत देर तक रहा।

उसने जो सियासत में, बोया है रात-दिन,
नफरत का वो खुमार, बहुत देर तक रहा।

धर्मों से नफ़रतों को, दिलों में उतारकर,
'जानी' मैं शर्मसार, बहुत देर तक रहा।

हर कीमत पर जो बिकने को...

हर कीमत पर जो बिकने को, बैठे हैं बाजारों में।
भ्रष्टाचार वो ढूंढ रहे हैं, औरों के किरदारों में।

जिनको हम समझे थे मांझी, छोड़ दिये मंझधारों में।
आज कबीले के ही कातिल, शामिल हैं सरदारों में।

प्यार पे पहरा, घर-बाहर का, कोर्ट-कचहरी थानों का,
लव-जेहाद से, खाप से देखो, खौफ मचा दिलदारों में।

उलझा देंगे जाति-धरम में, जब तक कुछ भी सोचेंगे,
सारी दुनिया आके फँसी है, धरम-जाति हथियारों में।

दंभ, घोटाले, झूंठ आँकड़े, विज्ञापन में दावों से,
खुद को ख़ुदा समझते ही हैं, रहते जो सरकारों में।

ट्रेन-बाढ़ में, अस्पताल में, रोज ही पब्लिक मार रहे,
मेरे मसीहा छुट्टी ले लो, कम से कम इतवारों में।

हर भाषण में झूठे वादे, रोजी-रोटी के यारों,
दावे हुए खोखले इतने, यकीं नहीं अब नारों में।

न सच कहें, सुने न सच को, देखें और दिखाएं न,
चरणवन्दना बहुत हुई अब, खबर छपे अखबारों में।

हे इंसाफ की देवी खोलो, अपनी आँख की पट्टी तुम,
सिर्फ तराजू क्या कर लेगा, जंग लगी तलवारों में।

सच से होता खौफ़ हमेशा, सत्ता के गलियारों में।
अब के तानाशाहों के हैं, नायक बस हत्यारों में।

नेता-मीडिया-बिजनेसमैन का, ये गठजोड़ सलामत है,
कौन कहेगा अब सच 'जानी', सभी झुके दरबारों में। ❖

आँखों में नहीं.....

आँखों में नहीं, दिल में, उतर जाएँ कभी तो
दरवाजे खुले हैं, वो इधर आयें, कभी तो ।।

मुमकिन नहीं है, मंजिले पाना तो क्या हुआ?
हम-राही में ही, वक्त गुजर जाये, कभी तो।।

महंगाई - भ्रष्टाचार में, जो लोग पिस रहे,
उनकी भी जिन्दगी में, सहर आये कभी तो।।

माहौल अपने मुल्क का, अब वो बनाइये,
कि हर गुनाहगार भी, डर जाये कभी तो।।

ये सोच के, हर बार उन्हें, वोट किया है,
ये शख्स-सियासी भी, सुधर जाएँ कभी तो।।

ईमान बदलकर, जो दिए दूसरों को दर्द,
एकबार वो भी चाक-जिगर, पायें कभी तो।

जीने की ख्वाहिशें भी, होती जरुर हैं,
मिलते ही उनसे आँख जो, मर जाएँ कभी तो।

दिल की बुझेगी प्यास, औ छाएगी घटा भी,
जुल्फों को अपनी खोलके, लहराएँ कभी तो।

एक बार ही निगाह, वो हम पर भी डाल दें,
किस्मत भी अपनी 'जानी', संवर जाये कभी तो। ❖

जताते नहीं हैं लोग .....

दिल में है किसके क्या? ये जताते नहीं हैं लोग !
होंठों पे दिल की बात भी, लाते नहीं हैं लोग !

खुद कुछ ना करें, सबकुछ भगवान से चाहें,
सिर सामने यूं ही तो, झुकाते नहीं हैं लोग !!

पलभर में कष्ट दूर हो, मेहनत ना करनी हो,
बाबा को दान यूं ही, चढ़ाते नहीं हैं लोग !!

अब दान-धर्म केवल, अवतार को, बाबा को,
भूखे को तो पानी भी, पिलाते नहीं हैं लोग!!

सुनते नहीं हैं बात जो, लालच में, स्वार्थ में,
कहते हैं फिर वो, सच को, बताते नहीं हैं लोग !!

मेहनत, ईमानदारी से, दुश्वार है जीना,
अब भ्रष्ट, बेईमां को, सताते नहीं हैं लोग !

दर्पण की झाड़-पोंछ में, बीते तमाम उम्र,
चेहरे की अपने धूल, हटाते नहीं हैं लोग !

लगते गले हैं, हाथ मिलाते तपाक से,
पर भूलकर भी दिल को, मिलाते नहीं हैं लोग !!

देते हैं दिल को दर्द, हाल 'उनका' पूँछकर,
उस पर भी कहते'जानी', सताते नहीं हैं लोग ❖

शराफत देख बन्दों की.....

शराफत देख बन्दों की, हुआ करतार सदमें में ।
वफ़ा का हश्र वो देखा, कि है एतबार सदमें में ।

हैं जीते खाप के ही खौफ़ में, कानून और प्रेमी,
कहीं सदमें में है दिलवर, कहीं दिलदार सदमे में ।

डकैती, खून, चोरी, रेप, साजिश, से भरे देखो,
कहीं टीवी है सदमें में, कहीं अख़बार सदमें में ।

बदलता वक्त का पहिया, ना होता एक सा हरदम,
कभी जनता है सदमें में, कभी सरकार सदमें में ।

मुहब्बत और वफ़ा, दौलत से, आंकी जा रही है जब,
लगी है प्यार की बोली, तो अब है, प्यार सदमें में ।

रही बिक कोंख माँ की, और बच्चे भी यहां बिकते,
बेंचकर रिश्ते और जज्बात भी, बाजार सदमें में।

जिगर के टुकड़े पे जिसने, किया कुर्बान खुशियों को,
उसी ने जब से छोड़ा है, तो माँ बीमार सदमें में।।

गुजारी जिंदगी जिसने, आस में सिर्फ कुर्सी की,
नहीं कुर्सी मिली तो, चल पड़े हरिद्वार सदमें में ।

तरक्की देख चमचों, बेईमानों और भ्रष्टों की,
दबाकर दांत में उंगली, खड़ा खुद्दार सदमें में ।।

वकीलों, मुंसिफ़ों, छोड़ो ये ड्रामे, और मत खेलो,
अभी तक ना हुआ कोई भी, गुनहगार सदमें में ।।

कहीं नक्सल, कहीं आतंक, या माओ का डर फैला,
कहीं रविवार सदमें में, कहीं बुधवार सदमें में ।

न है सरकार को चिंता, न जनता को फ़िकर कोई,
जो सोचे देश की हालत, वही हर बार सदमें में ।

न बदलेंगे कभी हम-तुम, मगर ये वक्त बदलेगा,
तो छोड़ो देश की चिंता, न हो बेकार सदमें में ।।

चलो मयखाने, सुलझातें हैं 'जानी', देश के मसले,
बुला लो शाकी को, और पैग लो, दो-चार सदमें में। ❖

किसे चाहिए वैरागी ? हर दल मांगे, केवल दागी

किसे चाहिए वैरागी? हर दल मांगे, केवल दागी।
जिसके पास है पैसा-पावर, जनता उसके पीछे भागी।

जाति-धर्म-धन जनता देखे, और नहीं कुछ जाँचें,
पैंसठ सालों में तो अब तक, जनता कभी नहीं जागी।

काम नहीं, जब जाति योग्यता, जन-जन ही यह सोचें,
टिकट मिलेगा जिसके जाति की, ज्यादा हो आबादी।

मन्दिर-ले लो, मस्जिद-ले लो, छोड़ो बिजली-पानी,
सेक्युलर मुद्दे में बस उलझो, भूलो मुद्दे बुनियादी।

पूजा करें देवियों की, और कन्या भ्रूण में मारें,
रेप-दहेज में झुलस रही है, अब तक आधी-आबादी।

बेईमानों की मौज हो रही, सजा पा रहे हैं सच्चे,
भ्रष्टतन्त्र की बन्धक बनी जो, लानत ऐसी आजादी।

किसे चाहिए वैरागी ? हर दल मांगे, केवल दागी।
जिसके पास है पैसा-पावर, जनता उसके पीछे भागी। ❖

काश! चुनाव हमेशा हो...

सुनील कुमार गुप्ता
वरिष्ठ प्रबंधक (सिविल)
लागत अभियांत्रिकी विभाग
निगम मुख्यालय, फरीदाबाद

कितनी खुशियां मिल जाती है
जब चुनाव-दुल्हानियाँ आती है
माहौल गरम हो जाता है
इतना दहेज ये लाती है
जातिवाद और कटुता का, खतम तनाव हमेशा हो
मैं तो यही सोचता हूँ, काश! चुनाव हमेशा हो ...
जब-जब ये दुल्हनिया आती है
फिर एसा भोज खिलाती है
दिल बाग-बाग हो जाता है
पुरखों की रुह तर जाती है
मुर्गे और सोमरस का, प्रादुर्भाव हमेशा हो
मैं तो यही सोचता हूँ, काश! चुनाव हमेशा हो...
जिसने बीड़ी भी नहीं पिया सिगरेट उसे मिल जाता है
'चम्बल के शेरों' को "जानी" हर
जगह टिकट मिल जाता है

केवल चुनाव में सही, मगर ये सच्चरित्र बन जाते हैं
चुनाव बाद तो विधान सभा में "माइक"
समेत लड़ जाते हैं ॥
इनके सच्चरित्र का "जानी", रखरखाव हमेशा हो
मैं तो यही सोचता हूँ, काश! चुनाव हमेशा हो...

पण्डित चुनाव में दलितों की पांव-पुजाई करते हैं
नेता जी तो जनता की, दामाद सी सेवा करते हैं
नेताओं का, ससुरों जैसा, "जानी" बर्ताव हमेशा हो
मैं तो यही सोचता हूँ, काश! चुनाव हमेशा हो...

हलवाई की पौ बारह है, कितने मोदक बिक जाते हैं
अखबार चलाने वाले भी ,कुछ गरम-गरम पा जाते हैं
देते है किराए पर गाड़ी जो, जेब गरम कर जाते हैं
और लगाते माइक जो, वो भी खूब कमाते हैं
माला गूँथने वालों की, माली हालत सुधर गयी
पेट्रोल पम्प के मालिक के,घर में ही लक्ष्मी उतर गयी
रोजगार का इसी तरह से, आविर्भाव हमेशा हो
मैं तो यही सोचता हूँ, काश! चुनाव हमेशा हो ....

कोई विकास का कार्य न हो,देश का पैसा बचा रहे
सरकारी नौकर, सर्विस का,असली मौज मना रहे
अफसरों के आनंद में, तनिक न अभाव हमेशा हो
मैं तो यही सोचता हूँ, काश! चुनाव हमेशा हो ... ❖

गुणगान

भारत के वीर महानों का, गुणगान करो, गुणगान करो
धरती माता के पुत्रों का, सम्मान करो, सम्मान करो

जो कराये मुक्त भारत को, अंग्रेजों की गुलामी से
नवाजों तुम उन वीरों को, अपनी एक सलामी से,
उनकी बुद्धि वीरता का गुणगान, तुम सौ-सौ बार करो
धरती माता के पुत्रों का, सम्मान करो, सम्मान करो

वीरों की तरह तुम वीर बनो, मारो दुश्मन को तीर बनो
उद्दत अदम्य शार्दूल की तरह, तुम वीर बनो व धीर बनो
गुणगान तुम्हारा भी होगा, इसलिए अनवरत काम करो
धरती माता के पुत्रों का, सम्मान करो, सम्मान करो

जो त्याग दिए निज सुख-साधन को हुए देश सेवा में लीन
उनकी इसी कुर्बानी से तुम आज बने बैठे हो शौक़ीन
छोड़ दो इस निर्बुद्धि भाव को, करो जो करने पाओ
अपने सुकर्मो के कारण, देश का मान बढ़ाओ
अपने भावी जीवन के लिए, तुम नेक पथ की पहचान करो
धरती माता के पुत्रों का, सम्मान करो, सम्मान करो

ऐसे करोगे रमणीय कार्य तो, देश की शान बनोगे
जननी जनक गाँव नगर संग सबका नाम करोगे
आने वाली पीढ़ी भी तुम पर गर्व करेंगी
तुम्हारे ही पदचिन्हों पर चलकर सफलता हासिल करेंगी
अपने कर्त्तव्य निभाकर के भी तुम भी नहीं कभी अभियान
करो धरतीमाता के पुत्रों का, सम्मान करो, सम्मान करो।❖

सीमा सौरौत
समूह वरिष्ठ प्रबंधक (ईएंडसी)
डिज़ाइन (ईएंडएम) विभाग
निगम मुख्यालय, फरीदाबाद

जीवन स्वयंवर

इस जीवन के स्वयंवर में देखो मैंने क्या वरण किया
माता से जीवन दान मिला, मैं इस दुनिया से आन मिला,
प्रथम बार उजियारी देख दृष्टि चुंधियाई,
और ना फिर परमपिता की सुधि आई,
त्याग करूँ के भोग करूँ? कितने सुख थे मेरे समक्ष,
दान करूँ या ग्रहण कर लूँ? लालच मन में आया प्रत्यक्ष,
"त्यकतेन भुंजिथा" भूल गया, वैभव
विलास को नमन किया।
इस जीवन के स्वयंवर में देखो मैंने क्या वरण किया॥

फिर गुरु मिला और ज्ञान मिला, सत
के रास्ते का भान मिला,
बस नाम जपो और तर जाओ,
कलयुग में ये वरदान मिला,
पर भूल गया सब नाम वाम और क्या होते हैं पुण्य काम,
अपनी मुक्ति के साधन का खुद ही मैंने अपहरण किया।
इस जीवन के स्वयंवर में देखो मैंने क्या वरण किया॥

ईर्ष्या, द्वेष, लोभ, मोह, काम, क्रोध,
परोपकार, प्रेम, त्याग, कर्त्तव्य-बोध,
"चुन लो तुमको जो हर्षाए" यूँ कह भगवान कुछ मुस्काए,
फौरन बुद्धि पर जोर दिया, मैंने विचार पुरजोर किया,
और फिर सोच समझ कर भी, बस
तमोगुणों का चयन किया।
इस जीवन के स्वयंवर में देखो मैंने क्या वरण किया॥

फिर भी न उसने संग छोड़ा और
अंतिम बार थामी कलाई,
कुछ सद-मित्रों के रूप में पुनः सही राह दिखलाई,

पर ईर्ष्या-अग्नि में जलकर सच्चे मीत भी बिसराए,
ब्याह हुआ माता बिसराई, शिक्षा छोड़ दी गुरु बिसराए,
अब जो अंत समय है निकट, तो लगता है गया था भटक,
अब क्या होगा जो आकर मृत्यु ने मेरा वरण किया?

जीवन भर तो सही राह का, ना मैंने कुछ अनुसरण किया,
सादर वापस जाने का ना मैंने कुछ भी जतन किया,
बस आया, भोगा और चला गया..
बस आया, भोगा और चला गया,
यही मैंने हर जनम किया।
इस जीवन के स्वयंवर में देखो मैंने क्या वरण किया॥ ❖

चाह

एक धर्म हो परमारथ का, हर मानव हर प्राणी का
युग बीतें हैं इसी चाह में कभी तो वो दौर मिले।

भूखा बच्चा, बेघर बूढ़ा, लाज बचाती बालाएँ,
इन मौलिक मुद्दों पे भी, करती सियासत गौर मिले।

जहाँ मैं बैठूँ, सुस्ताऊँ, थक-हार ज़िंदगी से,
दुनिया के कोलाहल में, कहीं तो वो ठौर मिले।

जिस बल जीता जीवन समर, डटी रही विपदाओं में,
काश वो खोया खुद पे यकी, वापस किसी तौर मिले।

कब तक मर्म सहूँ, कलह-ग्रस्त रक्तिम धरती का?
अब बस प्रेम के पौधों पर, आता जल्दी बौर मिले।

हो ज्ञानी, अटल, शूरवीर, मिटा दे सारे कष्ट धरा के,
आज डूबती मानवता को, ऐसा कोई सिरमौर मिले। ❖

मैं समय हूँ

मैं समय हूँ,
मैंने देखा है किस युग में कहाँ क्या चमत्कार हुआ,
कब कब किसकी हार हुई और
किसका जय जयकार हुआ,
तू चीज है क्या? अहम तो यहां रावण
का भी तार-तार हुआ,
एक बार नहीं, यह घटनाक्रम धरती पर बारम्बार हुआ।

मैं वहीं खड़ा था जब विष्णु ने बामन बन भिक्षा मांगी,
एक कदम में अंबर, धर एक कदम धरती नापी,
बली राजा से दानी को भी, अभिमान
का न अधिकार हुआ,
तू चीज है क्या? अहम तो यहां रावण
का भी तार-तार हुआ,
एक बार नहीं, यह घटनाक्रम धरती पर बारम्बार हुआ।

रावण जैसा बलशाली, अनुचर जिसके देव रहे,
पवन बुहारे आँगन जिसका, पोछा-वोछा इन्द्र करे,
सौ पुत्र, सहस्त्र प्रपौत्र, ना कोई बचा जो अग्नि दे,
लंका जली, रावण जला, विभीषण का उद्धार हुआ,
मैंने देखा है किस युग में, कहाँ क्या चमत्कार हुआ,
कब कब किसकी हार हुई और
किसका जय जयकार हुआ।

था श्रवण किया मैंने, देवव्रत की भीष्म प्रतिज्ञा का,
और साक्ष रहा दुर्योधन द्वारा की गयी प्रत्येक अवज्ञा का,
रहा सन्न देखता कुरु सभा में हुई द्रौपदी जब दागी,
था समझ रहा किस हेतु कृष्ण ने दुर्योधन की मेवा त्यागी,
देखा मैंने किस भाँति से कुरु वंश का संहार हुआ,
तू चीज है क्या? अहम तो यहां रावण
का भी तार-तार हुआ,
मैं समय हूँ....
मैंने देखा है किस युग में कहां क्या चमत्कार हुआ। ❖

अन्नपूर्णा सिंह
उप महाप्रबंधक (विद्युत)
लागत अभियांत्रिकी विभाग
निगम मुख्यालय, फरीदाबाद

अब तो पथ यही है।

जिंदगी ने कर लिया स्वीकार,
अब तो पथ यही है।

अब उभरते ज्वार का आवेग मद्धिम हो चला है,
एक हलका सा धुंधलका था कहीं, कम हो चला है,
यह शिला पिघले न पिघले, रास्ता नम हो चला है,
क्यों करूँ आकाश की मनुहार,
अब तो पथ यही है।

क्या भरोसा, काँच का घट है, किसी दिन फूट जाए,
एक मामूली कहानी है, अधूरी छूट जाए,
एक समझौता हुआ था रोशनी से, टूट जाए,
आज हर नक्षत्र है अनुदार,
अब तो पथ यही है।

यह लड़ाई, जो कि अपने आप से मैंने लड़ी है,
यह घुटन, यह यातना, केवल किताबों में पढ़ी है,
यह पहाड़ी पाँव क्या चढ़ते, इरादों ने चढ़ी है,
कल दरीचे ही बनेंगे द्वार,
अब तो पथ यही है। ❖

विपुल नागर
उप महाप्रबंधक (भूभौतिकी)
अभि. भूविज्ञान व भूतकनीकी विभाग
निगम मुख्यालय, फरीदाबाद

एक नदी की व्यथा

मैं हूँ एक नदी, अपनी पहचान बताती।

पर्वतों में होता प्रादुर्भाव, जीवों की मैं प्यास बुझाती।
मैं ही जीवन हूँ, मानवता को मैं तारती।
लोगों की मुझमें आस्था, उन्हें एक सूत्र में पिरोती।
मेरा लक्ष्य जीवों की सेवा, निरन्तर उसे निभाती जाती।।

मैं हूँ एक नदी, अपनी करुण व्यथा सुनाती।

मानव की मनमानी से, मेरी पहचान है सिमटती।
पर्यावरण दोहन से, मेरी क्षमता कम होती जाती।
जंगलों की कटाई से, औषधीय तत्व मैं गँवाती।
पानी की कमी से, मैं सहमती बिलखती जाती।।
औद्योगिक कचरे से, मैं मैली होती जाती।
प्राकृतिक आपदाओं से, मैं छिन्न-भिन्न हो जाती।
किनारों पर अतिक्रमण से, मैं संकरी होती जाती।
मानव की अज्ञानता से, मैं घुटती-मरती जाती।

मैं हूँ एक नदी, तुम्हें भली सलाह यह देती।

पर्यावरण संतुलित कर, मुझे करो पुनर्जीवित।
नये जंगल लगाओ, और बढ़ाओ मेरे स्रोत।
जीवन हूँ मैं, करो अपने भविष्य की सोच।
ताकि भावी पीढ़ियों के प्रश्नों के,
उत्तर दे सको निःसंकोच। ❖

जीवन चक्र

मानव जीवन है चक्र समान,
जहाँ से चले वहीं ले आता।

प्रारब्ध होता किलकारियों से,
बालपन में सिंचित होती पौध।
जब होता मन व्याकुल भय से,
ठंडी छाँव देती माँ की गोद।

किशोरावस्था में बुनते सपने,
जीवन को देते नये आयाम।
नये विचारों व नई सोच से,
हरदम करते सबको हैरान।

युवावस्था के कहने ही क्या,
मन में उमंगों के उठते हिलोरे।
कुछ नया करने का विश्वास,
नये जीवन का आरंभ करते।

प्रौढावस्था की जिम्मेदारियाँ,
जीवन में बिठाते सामंजस्य।
बच्चों की पूरी करते ख्वाहिशें,
अपनी आवश्यकताएं छोड़।

जीवन का यह पड़ा वृद्धावस्था,
इस अवस्था में आराम की चाहत।
मन में होती अजीब व्याकुलता,
अपने पास हों तो मिलती राहत।

मानव जीवन है चक्र समान,
जहाँ से चले वहीं ले आता। ❖

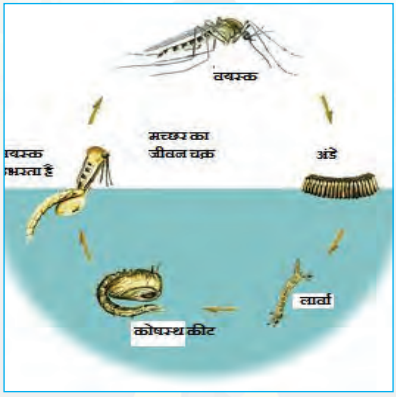

सुमित डबराल
वरिष्ठ प्रबंधक (भू-विज्ञान)
अभि. भूविज्ञान एवं भूतकनीकी विभाग
निगम मुख्यालय, फरीदाबाद

ताशी क्यों रोई ?

नारी जीवन है अनमोल,
चित्रण के लिए कम पड़ते हैं बोल।
पर आज नारी ने नारी को प्रताड़ा है,
भरी सभा में एक दूसरे को लताड़ा है।
नारी ने अपनी गरिमा है खोई,
प्रश्न है, ताशी क्यों रोई ?
रोना साधारण है पर बिलख-बिलख
कर रोना असाधारण है,
रोना-धोना, क्रियाकलाप, ये नारी के चरित्र के हैं आलाप।
पर नारी शक्ति का नहीं कोई है तोड़,
हर युग में इतिहास को दिया है मोड़।
पर इस कलियुग में नारीव्रता है सोई,
प्रश्न उठता है, ताशी क्यों रोई ?
सत्य को लेकर ताशी व सिरिंग के बीच हुई नोंकझोंक,
जिसे सुबह सबेरे देख रहे थे सब लोग।
बातों ही बातों में छिड़ा घमासान युद्ध,
जिसे देख रहा था मौन बैठा बुद्ध।
ताशी ने सिरिंग को मारा और किया लहूलुहान,
इस लड़ाई में न जाने टूटा किसका गुमान,
हुई धराशाई, गिरी धरा पर, टूटा सब्र का बाँध।
तब ताशी ने दी शिष्टाचार की सभी सीमाएँ लाँघ,
रोती, चीखती चिल्लाती, छोड़े करुणा बाण।
मानों लगता था देह ने अब छोड़े प्राण,
संगी-साथी लगे समझने, दिया कुछ ज्ञान,
पर उसे न खुद का मान था, ना कपड़ों का ध्यान।
और इस विलाप में खोया आत्म-सम्मान,
दो नारी के बीच में ना जाने किसकी जीत,
तथा किसकी हार है हुई,
प्रश्न यह है, ताशी क्यों रोई ?

राहुल शुक्ला
प्रबंधक (आईटी)
तीस्ता-V पावर स्टेशन, सिक्किम

हिंदी भाषा हमारी...

हिंदी हमारे देश की शान
हिंदी हमारे देश की आन
हिंदी पर हमको अभिमान
हिंदी भारत मां का मान ।।

बहुत सरल भाषा है हिंदी
मिश्री जैसी मीठी बोली हिंदी
घर घर बोली जाती हिंदी
हम सबको भाती बोली हिंदी ।।

अलंकार छंदों से सजती हिंदी
साहित्य का मान बढ़ाती हिंदी
कविता में रस घोले हिंदी
मां के आंचल की छांव है हिंदी ।।

हमारी मातृभाषा है हिंदी
मां सी प्यारी हमारी हिंदी
गागर में सागर जैसी हिंदी
उपवन के फूलों जैसी हिंदी ।।

भारत मां का ताज है हिंदी
राष्ट्रगान की शान है हिंदी
राष्ट्रगीत का अभिमान है हिंदी
विश्व में शान बढ़ाती हिंदी ।।

अपने देश की शान बढ़ानी है
हम सबको हिंदी अपनानी है
भारत मां की आन बढ़ानी है
हिंदी की अलख जगानी है ।।

नवीन कुमार पाण्डेय
समूह वरिष्ठ प्रबंधक (भूभौतिकी)
अभियांत्रिकी भूविज्ञान एवं भूतकनीकी विभाग, निगम मुख्यालय, फरीदाबाद

तुम प्रकृति की तरह (नवगीत)

रात रानी की तरह
पवन में मादक नशा
तुम बसे इस सुगंध में

मंद मीठा दर्द देती
गुदगुदाती सिसकियां
छोर पर मन के खुली हैं
चाह की कुछ खिड़कियां
मन का भंवरा डोलता है
हिय पुष्प के मकरंद में

हृदय लय के छन्द को
गुनगुनाती नेह धारा
संवेदना की पतवार तुम
तुम ही तो हो मेरा किनारा
सुस्त जो थी सांस वह फिर
अल्हड़ बनी उमंग में

गुनगुनाती धूप के
धागों को बुनकर नर्म सा
धरती की खड्डी पर चढ़ा
चादर बनाया गर्म सा
पूष की ठंढक में प्रियतम
तुमको ओढ़ाया संग में

हवाओं के हर गान में
सुर हैं सभी सुनना इन्हें तुम
पेड़ों की छांवों में नेह की
कलियां हैं कुछ चुनना इन्हें तुम
प्रेम की फुहार बैठी है
प्रकृति के हर रंग में

सांझ की स्याही
तुम्हारी आँख का काजल सखी
पलकों के मुंडेर पर
भौंहों का बादल सखी
तुम प्रकृति की तरह
बसते गए अंग अंग में

रात रानी की तरह
पवन में मादक नशा
तुम बसे इस सुगंध में

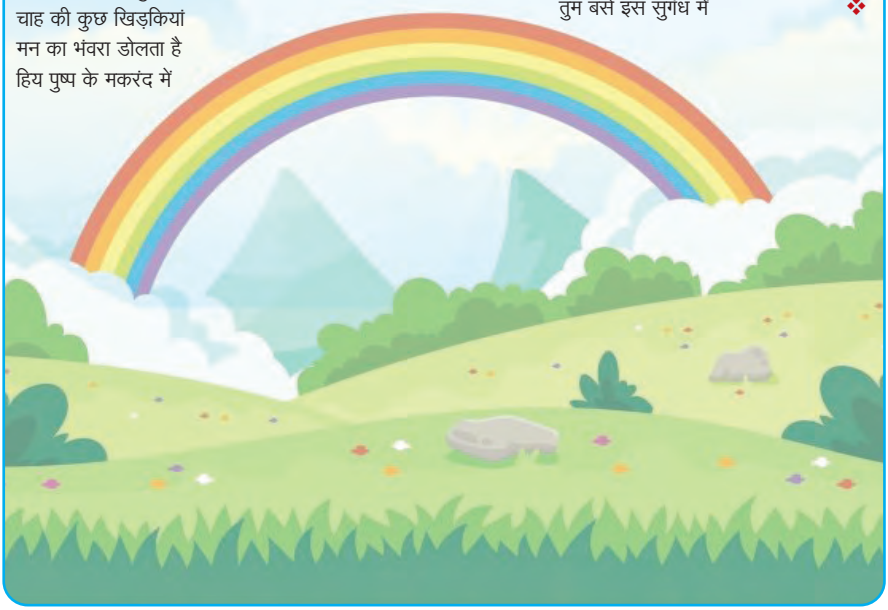

विशाल कुमार त्यागी
वरिष्ठ प्रबंधक (सिविल)
पीआईडी विभाग
निगम मुख्यालय, फरीदाबाद

दूरी रखें मोबाइल से

एक छोटे से यंत्र ने
क्या कमाल दिखलाया है
मैन की पावर खत्म कर दी
पावर बैंक लाया है।

काश आज न्यूटन होते
एपल गेम खेलते
ग्रेविटी का पता न चलता
मोशन लॉ रुक जाता।

आइंस्टीन के बाल भी
पूरे खड़े हो जाते
जब पबजी मोबाइल उनसे
सुसाइड स्टंट कराते

आर्यभट्ट का पता न चलता
जीरो कहाँ से आता
गणनाओं का ओर छोर
कोई समझ न पाता ।

देशों की अर्थव्यवस्था को
इसने चौपट करा दिया
थोड़ा बहुत बचाने को
ऐप्स पर वैन लगा दिया।

खून चूसक यंत्र नहीं है
पर है उससे भी खतरनाक
सारी मैमोरी चूस ली इसने
अब रखो मैमोरी कार्ड ।

ज्यादातर आंखे पट्ट हो गयी
चश्मा इसने चढ़वाया है
अखबार, कैमरा खत्म हुए
अब किसका नम्बर आया है।

गौर करो और सोच
लो ढंग से
क्या-क्या इसको दे जाओगे
बुद्धि विकास और शरीर
क्या बिन इनके रह पाओगे।

कर लो इससे थोड़ी दूरी
आ जाओ अपनो के पास
अभी नहीं कर पाये तो
शायद रहोगे हमेशा उदास।

देश राज
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, बनीखेत, (हिमाचल प्रदेश)

बेबस जिंदगी

कोमल हाथों में हथौड़ा
पीठ पर बंधा है एक बच्चा
एक औरत सड़क पर
पत्थर तोड़ती हुई
अपनी बेबस जिंदगी

जिए जाती है।
ढेरों पत्थर तोड़कर
अपनी रोजी-रोटी कमाती है
एक अबला नारी
विकास के इस युग में
कंधे-से-कंधा मिलाकर

अपना योगदान दर्ज करवाती है।
चूल्हा–चौका छोड़कर
नन्हें लाड़ले के आंसू पोंछकर
पेट की भूख मिटाने की खातिर
अधजन्मे सपनों को

ख्यालों का दुलार देती है।
बच्चा मुंह में अंगूठा डालकर
आसमां को निहार कर
चुपचाप सो जाता है
मेहनतकश मां के दुलार का
यूं ही आनंद पाता है।

यह देखकर मां खुश हो जाती है
फिर पत्थर तोड़ने लग जाती है।

आते–जाते लोगों को देखकर
अपने अर्धनग्न तन को
मैले–कुचैले दुपट्टे से
सकुचाती हुई ढक लेती है
फिर पत्थर तोड़ने लग जाती है।
हे, नारी तू महान है
पत्थर तोड़ना भी तेरा काम है
सच कहूं तो, हे प्रभु
सड़क निर्माण में इस नारी का

महान योगदान है।
पत्थर तोड़ती मां के दुलार को
नन्हा–मुन्ना पाता है, और
इसी तरह बड़ा हो जाता है।
जवानी ढल गई बच्चा बड़ा हो गया
एक दिन मां के साथ वह भी

पत्थर तोड़ने लग गया ।
हे, अबला नारी
अदम्य तेरा साहस है
तू हर इम्तिहान में पास है
तू एक सच्चा विश्वास है।
पत्थर टूटते रहेंगे
सड़कें बनती रहेंगी
इसी तरह बेबस जिंदगियां
पत्थर तोड़ती रहेंगी
पत्थर तोड़ती रहेंगी। ❖

विशाल शर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक (पर्यावरण)
पर्यावरण एवं विविधता प्रबंधन विभाग
निगम मुख्यालय, फरीदाबाद

समय चक्र चलता है

समय चक्र चलता है,
राम को और सीता को स्वर्ण हिरण छलता है।
बन मारीच छलता है,
समय चक्र चलता है।

प्रियतम के प्यार में,
सदियों के इंतज़ार में,
बिरहनों की अंखियों में आंसू बन के रहता है।
समय चक्र चलता है।

अमावस की रातों में,
गहरी काली रातों में,
गुलमोहर की सेज पर धीरे से करवटें बदलता है।
समय चक्र चलता है।

अंखियाँ थी सूज गईं,
आंसू थे सूख गए,
किसलय बसंत में व्याकुल मन की आस बन के रहता है।
समय चक्र चलता है।

अनाचार बढ़ गए, द्वेष भाव बढ़ गए,
अधर्म धरा अंक पर फैलता चला गया,
छद्म परिवेश में युगों की परिभाषाएं बदलता है।
समय चक्र चलता है।

❖

नीरज कुमार
प्रबंधक (आईटी)
आईटी एंड सी विभाग,
निगम मुख्यालय, फरीदाबाद

मेरी बर्बादी

सभाएँ सम्मेलन और पार्टियां हो जाते हैं
भाषण बाजी होती हैं और तालियाँ बज जाते हैं।

मगर परिस्थिति ऐसी भी है आई
बेइज्जत हो मैं बहुत शरमाई।

सभागार में फैली भीनी-भीनी सुगंध
लो हो गया चाय नाश्ते का प्रबंध।

कुछ ने ले तो लिया, मगर छुआ तक नहीं
कुछ ने आधा खाया, छोड़ दिया आधा वहीं।

पानी भरी बोतलें को आधी कर छोड़ जाते हैं
क्या मेरी यही इज्जत है, इस पर आप क्या फरमाते हैं?

शायद यही परिस्थिति यहाँ भी होने वाली है
देखें मेरी बर्बादी यहाँ किसके हाथों होने वाली है?
सोचो भला यह कैसी मेरी बर्बादी है

भूखे भारत की एक तिहाई आबादी है।

❖

सत्येंद्र कुमार सिंह
प्रबंधक (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, सिलीगुड़ी

देश मेरे देश मेरे

देश मेरे, देश मेरे,
बोलो मैं क्या करूँ?
जिउँ मैं तेरे लिए,
या तुझ पर ही मरूँ?
देश मेरे देश मेरे,
बोलो मैं क्या करूँ?

सोने की चिड़िया कहाँ गई,
जो गीत प्रेम का गाती थी,
वसुधैव कुटुम्बकम की बातें,
जनजन को सिखलाती थी?
क्या मौन पड़ी उसकी वाणी में
फिर से प्रेम का बोल भरूँ?
देश मेरे, देश मेरे,
बोलो मैं क्या करूँ?

विश्व गुरु कहला कर तूने
मान किया था अर्जित।
आज वही सब ज्ञान तुम्हारा
यहाँ हो गया है वर्जित।
नूर विहीन मानव मूल्यों में
क्या गौरव का रत्न जड़ूँ?
देश मेरे, देश मेरे,
बोलो मैं क्या करूँ?

गुरुओं का ज्ञान कहाँ गया,
जीवन उजियारा करता था,
अंतस का तम दूर भगा,
ज्ञान का दीपक धरता था?
क्या बुझ चुके उस ज्ञान दीप में,
फिर से नाव प्रकाश भरूँ?
देश मेरे, देश मेरे,
बोलो मैं क्या करूँ?

फटेहाल वह आज भी देखो,
एक खून पसीना करता है।
दुनिया को निवाला देने वाला,
दाने-दाने को तरसता है।
क्या दीनहीन उसके जीवन से,
दुख, शोक, संताप हरुँ?
देश मेरे, देश मेरे,
बोलो मैं क्या करूँ?

जिस माँ-बहन-बेटी पर थी,
इज्जत से उठती निगाहें।
आज उन्हीं की अस्मत लुटती,
खुलेआम चौक चौराहे।
क्या बनकर काल कराल मैं,
उन दुष्टों के प्राण हरुँ?
देश मेरे देश मेरे,
बोलो मैं क्या करूँ?

सरहद और सीमाओं पर जो,
जान लुटाया करते हैं।
सीने पर गोली खा देश का,
शान बढ़ाया करते हैं।
क्या ऐसे शूरवीरों के पथ में,
मैं सुमन बनकर झड़ूँ?
देश मेरे, देश मेरे,
बोलो मैं क्या करूँ?

है रात घनेरी इतनी,
नहीं आस सवेरा होने की।
फरेब भरा संबंधों में,
भय है अपनों को खोने की।
तार-तार हुए इन रिश्तों में,
क्या फिर से विश्वास भरूँ?
देश मेरे, देश मेरे,
बोलो मैं क्या करूँ?

तपती धरती तकती रहती,
सावन पतझड़ सा लगता है,
ना फूल खिले ना दिल मिले,
बसंत उदास गुजरता है।
इन सुखे मुरझाए बेलों में,
नवजीवन का उल्लास भरुँ?
देश मेरे, देश मेरे,
बोलो मैं क्या करूँ?

पपीहा पिहकर कहती है,
यह रात सुबह लिए आएगी।
कोयल कूक कर फिर से,
परिवर्तन राग सुनाएगी।
अब होगा सवेरा इस बात का,
क्या जन-जन में अहसास भरूँ?
देश मेरे, देश मेरे,
बोलो मैं क्या करूँ? ❖

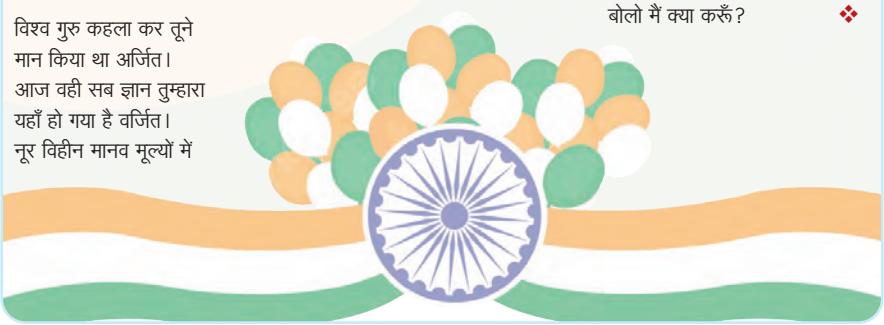

अभिषेक कुमार मिश्र
प्रबंधक (भूविज्ञान)
अभि. भूविज्ञान एवं भूतकनीकी विभाग
निगम मुख्यालय, फरीदाबाद

नदी सी भाषा

एक नदी पतली धारा सी पहाड़ों से उतरती है,
अन्य छोटी-बड़ी जलधाराओं को संग लिए गुजरती है;
मार्ग में आते कई व्यवधान पर
उनसे न डरती-ठहरती है
बड़ी-छोटी चट्टानों को धैर्य से काटती चलती है
उसके छोटे-बड़े विविध कणों को समेटती
नई विशेषताओं में ढ़लती है
ये विविधता उसे और समृद्ध बनाती-आगे बढ़ाती है
तभी तो वो आँचल की छाँव देने वाली माँ सी कहलाती है;
जीवंत भाषा भी ऐसे ही आगे बढ़ती है
विविध बोलियों को साथ ले नए स्वरूप में ढ़लती है
भयभीत नहीं होती किसी प्रतिरोधी से कभी
सभी से सामंजस्य बनाते अपनी राह चलती है
जीवित रहने, प्रासंगिक रहने को सौ जतन करती है
कई बोलियों की छाप लिए एक नई पहचान गढ़ती है
हिंदी ने भी सदियों से यही राह अपनाई है
विभिन्न झंझावातों से गुजरते अपना
अस्तित्व बचाती आई है
संस्कृत, प्राकृत, खड़ी बोलियों से होते
आज इस रूप में आई है
अरबी, फ़ारसी, उर्दू से भी न घबड़ा
खुद में समाहित करती आई है
तभी तो आज हिंदी ने वैश्विक पहचान पाई है
देश ही नहीं विदेशों में भी संपर्क भाषा बन छाई है
पुरखों के बाद हमें भी अब अपना फ़र्ज निभाना है
हिंदी को और समृद्ध करते इसकी
स्वीकार्यता को बढ़ाना है
बाजार ही नहीं इसे तकनीक की भाषा भी बनाना है
सितारों के आगे के जहाँ में भी हिंदी को पहुँचाना है.....
सितारों के आगे के जहाँ में भी हिंदी को पहुँचाना है....❖

राकेश कुमार श्रीवास्तव
वरिष्ठ कार्यालय अधीक्षक,
निगम मुख्यालय, फरीदाबाद

बेटी

खुशियों की सौगात है "बेटी",
भाग्यवान है वो जिसकी औलाद है बेटी।
वैदही सी पतित पावनी, वाणी से है मिश्री घोलती।
सीता, दुर्गा, लक्ष्मी पूजित समाज, क्यों भक्षक बन जाता,
हवस के सौदागरों में दिखती उनमें है कुंठित वासना।
आज कुंठित समाज हो गया, उनकी अस्मत का भूखा।
फूल सी कोमल बेटी, जब मरती है तिल-तिल कर।
तब मन द्रवित हो जाता, घिन आती है उस समाज पर।
मत करो अपमान नारियों का, इनके बल पर जग है चलता।
मर्द जनम ले करके इनकी ही गोद में पलता है।
जैसे जल है तो जीवन है, वैसे बेटी है तो कल है।
वक्त आ गया जागरण का, बेटों को भी शिक्षित करने का।
नहीं बताते हम ये बात, अपने घर के बेटे को।
देखो तुम हर लड़की में, अपनी घर की बेटी को। ❖

आशीष कुमार
प्रबंधक (यांत्रिक)
चमेरा-II पावर स्टेशन, हिमाचल प्रदेश

अपना भी कोई चाँद पर रहता है

"आज अपना भी कोई चाँद पर रहता है,
जिसे देश प्रज्ञान रोवर कहता है।

देश में विज्ञान के उत्थान की ये कहानी है,
नमन सभी को, इसमें शामिल जो विज्ञानी हैं।
बोया छोटा सा बीज कभी आज वह वट वृक्ष हुआ,
सौ करोड़ देशवासियों की शामिल रही इसमें दुआ।

गिर कर चढ़ना और उड़ना कोई इसरो से सीखे,
चूमा जब आँचल चाँद का, जाने कितने नयन भीगे।

धरती से लेकर चाँद तलक आज तिरंगा बहता है,
आज अपना भी कोई चाँद पर रहता है।" ❖

गिरिराज सिंह
उप प्रबंधक (यांत्रिक)
धौलीगंगा पॉवर स्टेशन, उत्तराखंड

भ्रष्टाचार यही...

सिर्फ रिश्वत लेना ही...
भ्रष्टाचार नहीं...
वह हर कृत्य भ्रष्टाचार...
जिसमें ईमानदारी और सदाचार नहीं।

भ्रष्टाचारी
कहीं सीमा पार से नहीं आते...
अपने ही देश को
ये दीमक की तरह खाते...
वेदना न समझें देश की...
माँ का दूध ये लजाते।

समझ सके
तो समझा दो बातों से...
ना समझे
तो एक फटकार जरूरी है...
भ्रष्टाचार की लंका जलाने को...
सिर्फ एक ही हनुमान जरूरी है...

नागरिक में
रचनात्मक दृष्टिकोण जरूरी है...
साथ ही
अपने कर्तव्य का बोध जरूरी है...
जब एक चिंगारी
ईमानदारी की सुलगती है...
भ्रष्टाचार की बारूद...
तब धू-धूकर जलती है... ❖

श्यामा पुजारी
उप प्रबंधक (सचिव)
भूविज्ञान विभाग, निगम मुख्यालय, फरीदाबाद

जिम्मेदारी

सभ्य समाज में रहने की, है अनेक ज़िम्मेदारी
पर हर युग में, नए रूप में, होती ये ज़िम्मेदारी

आज आधुनिक युग में बदल गए जब सब नर नारी
एकल परिवार अधिक रह गये, नहीं रही अब साझेदारी

संस्कार बदले, समझ बदली, बदल गई दुनिया सारी
गरज पड़े तो बात करो, अब इसी को कहते होशियारी

हाँ हाँ ..गरज पड़ी है, गरज पड़ी है अब बहुत भारी
धरा से अस्तित्व मिटने की होने लगी है तैयारी

संभल जाओ .... सुधर जाओ.. जग जाओ,
आधुनिक युग के सब नर-नारी

पर्यावरण, जीव जंतु ये धरा, सब है तुम्हारी
बचाओ इन्हें, बचाओ खुद को, यही तुम्हारी ज़िम्मेदारी
यही तुम्हारी ज़िम्मेदारी यही तुम्हारी ज़िम्मेदारी....

जावेद अख्तर
उप प्रबंधक (वित्त)
बैरास्यूल पावर स्टेशन, हिमाचल प्रदेश

जिंदगी का चराग़

जिंदगी का चराग़ यूँ ही जलता रहे,
प्यार का ये गुलाब रोज़ खिलता रहे।

ऐसे चमको जहाँ में के रौशन रहो,
नाम माँ बाप का तुमसे चलता रहे। ---

जब भी घेरे तुम्हें अड़चने जो कभी,
थाम लेना दुआओं का दामन तभी,
मुश्किलें हो फ़ना इनके दम से तेरी,
आने देना न आँखों में इनके नमी।

उम्र का ये हिसाब खुद सम्भलता रहे,
ख्वाब माँ बाप का यूँ ही पलता रहे। ----

कोई दिन जब तुम्हें न तुम्हारा लगे,
जाके धीरे से लगना तुम इनके गले।
रोशनी फिर तुम्हें उनसे ऐसी मिले,
कि सुहाना सा सारा जमाना लगे।

दौर रस्मों रिवाजों का चलता रहे,
ख्वाब माँ बाप का यूँ ही पलता रहे। -----

जितने दिन साथ हैं तेरे ये इनके तू,
प्यार दिल से कभी रब जुदा न करे,
जिन्दगी से कभी कोई शिकवा न हो,
यूँ अंधेरों का रौशन चरागाँ करे।

बंदगी का सफर यूँ ही चलता रहे,
ख्वाब माँ बाप का यूँ ही पलता रहे! ------

बनवारी लाल मीना
उप प्रबंधक (विद्युत)
डिजाइन (ई एंड एम) विभाग
निगम मुख्यालय, फरीदाबाद

भ्रष्टाचार का डर किस कदर

एक लड़का बहुत गरीब था,
बचपन से ही वो बहुत बदनसीब था,
जो झूठी रोटिया और सच्ची गालियां खाता था,
फीस नहीं दे सकने के कारण स्कूल नहीं जाता था,
एक दिन बहुत दुखी होकर उसने
भगवान के नाम पर पत्र लिखा ।
पूजनीय विष्णु भगवान,
क्षीर सागर बैकुंठ धाम,
सादर प्रणाम,
लक्ष्मी जी को चरण वंदना,
जब से इस धरती पर आया हूँ,
कर रहा हूँ दुः ख क्रंदन,
बहुत बुरा हाल है,
केवल पचहत्तर रूपये का सवाल है,
मनीआर्डर से भिजवा दे, एक महीने
के लिए गरीबी हटवा दे ।
वो पत्र छटनी के लिए बड़े डाकघर में आया तो
इसे देख कर्मचारियों का दिमाग चकराया,
अंत में पोस्ट ऑफिस वालों ने आपस में चंदा
करके लड़के के पते पर साठ रूपये भिजवाए :
पांच दिन बाद लड़के का एक पत्र और मिला,
लिखा था भगवान आप तो है करुणा निधान,
पर पोस्ट ऑफिस वाले है बहुत बेईमान,
आपने तो पचहत्तर ही भेजे होंगे,
पंद्रह वो खा गए,
तभी केवल साठ मुझ तक आये हैं अभी। ❖

गुरतेज सिंह
उप प्रबंधक (वित्त)
सीवीपीपी एल, संघ शासित प्रदेश जम्मू व कश्मीर

दिल-ए-चंबा

वेदों में पुरुष्णी कहलाऊँ
संस्कृत में इरावती।
रोहतांग से उद्गम मेरा
बड़ा- भंगाल में पाऊँ गति
कल -कल करती
धौलाधार व पीरपंजाल के बीच बहती
होली, खड़ामुख, भरमौर, खैरी से होकर
सिंधु में जाकर मिल जाती
चंबा के बीचों- बीच बहती
हूँ खुशहाली का प्रतीक
अरब सागर में जाकर मिलना
पथ है मेरा सटीक
चट्टानों और तूफानों से टकराकर
भी नहीं घबराती।
तोड़ के चट्टानों का सीना
मस्त बहती और इठलाती
टेढ़ी- मेढ़ी चाल निराली
लगे जैसे कोई नृत्य
जल विद्युत परियोजनाएं भी बनी हैं, जैसे
चमेरा चरण प्रथम, द्वितीय और तृतीय
हिमाचल की हूँ जान
लोक गीतों की हूँ शान।
यूँ ही मशगूल बहती रहूँ
है यही अरमान ❖

अमित जैन
उप प्रबन्धक (यांत्रिक)
चमेरा-I पावर स्टेशन, हिमाचल प्रदेश

अभिनंदन अपनी भाषा का

करते हैं तन-मन से वंदन, जन-गण-मन की अभिलाषा का
अभिनंदन अपनी संस्कृति का, आराधन अपनी भाषा का।

स्वर व्यंजनों से भरा हुआ है शब्दकोश है विशाल तेरा
हर रस में हर स्वर में बदल जाता है भाव तेरा
असीमित है शब्दकोश अनंत है ज्ञान तेरा
सौम्य है वैज्ञानिक है हिंदी हम सब की है आशा
हमारी शक्ति है हिंदी है माथे की चन्दन रोली
जो माँ के आँचल में सीखी है हिंदी वो बोली

यह पूजन अपनी संस्कृति का यह अर्चन अपनी भाषा का
ये है अभिनंदन अपनी संस्कृति का,
आराधन अपनी भाषा का।

बहुत हो चुका अपमान तेरा अब अँग्रेजी की बारी है
तेरा मान तेरा सम्मान हम सब की ज़िम्मेदारी है
ले आएंगे बाहर अब पखवाड़े से बाहर तुझको ए हिंदी
पखवाड़े में जाने की तो अँग्रेजी की बारी है
करना है हम सबको वंदन मिलकर अपनी भाषा का

यह दर्पण अपने मन का है यह आराधन अपनी भाषा का
ये है अभिनंदन अपनी संस्कृति का,
आराधन अपनी भाषा का ।

करता हूँ मैं ये कल्पना ऐसा दिन भी आयेगा
पूरा भारत हर कण कण हिंदीमय हो जाएगा,
हर दफ्तर में हर कागज पर बस हिंदी लिखी जायेगी
हिंदी ही बोली जाएगी हिंदी ही सुनी जाएगी
हर गंध हर सुगंध हिंदी मय हो जाएगी
बल से नहीं मन से सब हिंदी को अपनाएगे
सर माथे पर ऐ हिंदी हम तुझको बिठाएंगे
खोया हुआ मान तेरा हम तुझको दिलाएंगे
ये मेरे सुगंधित शब्द सुमन एक दिन सार्थक हो जाएंगे

आओ मिलकर करे पूजन मिलकर अपनी अभिलाषा का,
ये है अभिनंदन अपनी संस्कृति का,
आराधन अपनी भाषा का। ❖

आशय सिंह
उप प्रबंधक (मा.सं.)
चमेरा-III पावर स्टेशन, हिमाचल प्रदेश

"सच में ये जिंदगी है या हमारी मजबूरी तो नहीं"

हम जैसा चाहते है, हर बार वैसा हो जरुरी तो नहीं
सच्चाई यही है, फिर भी दिल में ख्याल आता है
सच में ये जिन्दगी है या हमारी मजबूरी तो नहीं

जिन्दगी का मतलब कभी पाना तो कभी खोना है
और पाने-खोने की प्रक्रिया में जिन्दगी
बहुत कुछ सिखा जाती है
सीखने का सिलसिला जिसने भी जारी रखा,
उसकी कस्ती भवसागर को पार कर ही जाती है

वजह क्या है कुछ भी हासिल करने
की यही तो अंतर कर जाता है
जब वह सोने न दे, रोने न दे, तब कोशिशों के
रथ पर सवार होकर वह सिकंदर बन जाता है

डर कर भला जंग जीता है कोई, हां कुछ
करके जरुर जीता जा सकता है
जब पाने की ख़ुशी न हो और खोने का गम
तब समुन्दर भी पिया जा सकता है

क्या खास है तुममें जो औरों में नहीं क्यूँ
तुम्ही मंजिल के असल हकदार हो
क्यूँ तुम्हारी ख्वाहिशें ही पूरी हो, क्यूँ
तुम्हारा सपना साकार हो
वजह व्यक्तिगत न होकर जब कोई और हो
ख़ुशी दूसरों के चेहरे पर देखने की होड़ हो
दूसरों की ख़ुशी पर मुक्कमल जहां
का जब एहसास बार- बार हो
तब समझना तुम मंजिल के असल हकदार हो
तब समझना तुम मंजिल के असल हकदार हो

दुआओं का असर भी होता है, और खुदा का मेहर
न केवल मंजिल मिलती है, बल्कि खुशकिस्मती
का बसेरा होता है शाम-ओ-सहर

ये जिंदगी ही है, हमारी मजबूरी नहीं
एहसास तभी होगा, जब होगा नजरिया सही
ये जिन्दगी ही है, हमारी मजबूरी नहीं ❖

सुरेश सिंह
उप प्रबंधक (सिविल)
धौलीगंगा पावर स्टेशन, उत्तराखंड

देखो... इंसानों की माया...

देखो, देखो, हम इंसानों की माया...
पेड़ काटकर जंगल छांटकर
पर्यावरण पर संकट लाया।

अपने स्वार्थ को खूब बढ़ाया
और पर्यावरण को खूब सताया,
पंछी सारे लुप्त हो गए
फिर भी हमको समझ न आया।
देखो, देखो, हम इंसानों की माया...

सुन लो
पर्यावरण की दुहाई
सुन लो
पेड़ काटने वाले कसाई
पेड़ लगाओ, देश बचाओ
पर्यावरण को स्वच्छ बनाओ।

विकास की
इस अंधी दौड़ में
ध्यान रहे पर्यावरण पर,
संदेश यह
सब तक फैलाओ
आओ, पर्यावरण को बचाओ।
वृक्षों पर ही हैं सांसें निर्भर
यह है जीवन-दाता,
आया है पर्यावरण पर संकट
चलो मिलकर यह संकल्प उठाएं
हर जन एक वृक्ष लगाए।

ये कटते वृक्ष,
सूखती नदियां
सिमटते हिम पर्वत
सूखते ताल
कहते हैं सब
ये संकट का जाल!

उठो, नींद से जागो भैया
सृष्टि का न नाश करो
सूखा बाढ़ काल है
प्रकृति की तो मार है
चलो मिलकर यह संकल्प उठाएँ
हर जन एक वृक्ष लगाएं। ❖

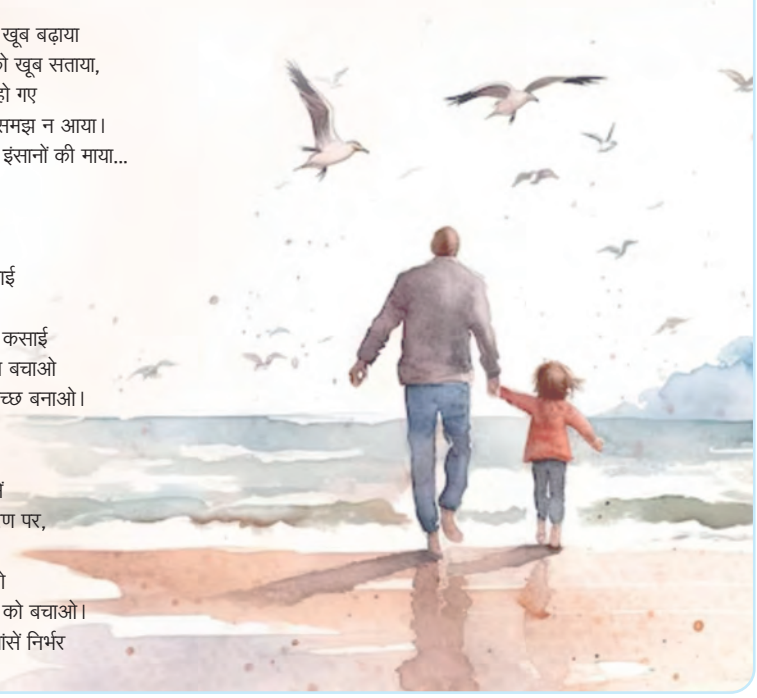

भारतीय होने पर गर्व करें

आओ नित गौरव गान करें, निज धरा का सम्मान करें।
भारतीय होने पर गर्व करें, भारतीय होने पर गर्व करें।
वृहद लोकतन्त्र की शीतलता जिसमें,
समृद्ध लोक सस्कृतियां जिसमें ।
बुलंद हौसलों की उड़ान है जिसमें,
इस मातृभूमि पर गर्व करें,
भारतीय होने पर गर्व करें, भारतीय होने पर गर्व करें।

1.
क्योंकि, यह राम की धरा है, यह श्याम की धरा है।
यह महावीर की धरा है, यह बुद्ध की धरा है।
यह वासुदेव कुटम्बकं की धरा है,
यह सत्यमेव जयते की धरा है।
यह अतिथि देवो भवः की धरा है,
यह गुरुर ब्रह्मा की धरा है।
यह मानवता प्रेम उदारता, धर्म-कर्म,
श्रम, सहिष्णुता की धरा है।
आओ क्यों न नित गौरव गान करें,
भारतीय होने पर गर्व करें।

2.
गीता का संदेश है इसमें, कर्म योग का ज्ञान है इसमें ।
मानस मर्यादा की सीख है इसमें,
स्व धर्म का जान है इसमें।
अद्भुत योग विज्ञान है इसमें, मानवता
का कल्याण है इसमें।
आओ इस धरा को नमन करें, भारतीय होने पर गर्व करें।

3.
गुरुद्वारे की गुरवाणी इसमें, मस्जिद की अजाने इसमें
बुधमठों का सदेंश है इसमें गिरजाघर की प्रार्थनाए इसमें।
गीता, वेद, पुराण इसमें, शास्त्रों का असीम ज्ञान है इसमें।
त्रिपिटक, अवेस्ता, बाइबल इसमें
अदभुद अनुपम कुरान है इसमें।
समृद्ध साश्वत लोक सस्कृति का प्रसार है
इसमें, मानवता का कल्याण है इसमें।
आओ इस धरा को नमन करें, भारतीय
होने पर गर्व करें।

4.
आओ श्रेष्ठ आचरण, श्रम, पुरुषार्थ,
कर्म-कौशल का ज्ञान अपनाए,
श्रीकर्म आराध्य स्तुति कर, जय मगल गान गएं।
चिकित्सा के चरक बने, गुरुत्वाकर्षण के भास्कराचार्य बनें
परमाणुशास्त्र के कणाद बने, योगशास्त्र के पतंजलि बने,
शल्य चिकित्सा के सुश्रुत बने, गणित के आर्यभट्ट बने ।
आओ पुन इस धरा को कोटि-कोटि नमन करें,
भारतीय होने पर गर्व करें, भारतीय होने पर गर्व करें।

5.
गंगा-यमुना सी तहजीब है इसमें,
सरस्वती का पांडित्य भी इसमें ।
कावेरी, गोदावरी, ब्रह्मपुत्र की श्वेत जलधारा
इसमें, पार्बती, व्यास की शीतलता भी इसमें ।
हिमालय का अटल पुरुषार्थ है इसमें,
विंध्याचल, सतपुरा का अभिमान है इसमें ।
थार का अभ्यातर इसमें, हिन्द सागर
का असीम प्रसार है इसमें ।
आओ पुनः इस धरा को कोटि-कोटि नमन करें,
भारतीय होने पर गर्व करें, भारतीय होने पर गर्व करें।

6.
आओ नारी शक्ति का सम्मान करें,
देश हित में हम काम करें।
स्वकर्म पर न अभिमान करें, सत्य पथ का ज्ञान करें,
निज धरा का मान करें, जन-जन का कल्याण करें।
यश, तेज, ओज धारण करें, माँ
भारती के सच्चे लाल बने ।
आओ पुनः इस धरा को कोटि कोटि नमन करें।
भारतीय होने पर गर्व करें, भारतीय होने पर गर्व करें। ❖

अनूप कुमार सिंह
उप प्रबंधक (विद्युत)
पार्बती-II जल विद्युत परियोजना, हिमाचल प्रदेश

इक ज़माना गुज़र गया

हंसे हुए इक ज़माना गुज़र गया,
ठहरता था जिस मुकां पे वो ठिकाना गुज़र गया।
गुलज़ार था जो शहर तेरी मोहब्बत में,
उस शहर में आज क्यूँ वीराना पसर गया।।

तेरी सोहबत का नशा था जो इन आँखों में,
फ़िज़ाओं को भी रंगीन कर देता था।
अब जो तू साथ नहीं मेरे,
हर ज़र्रा मुझे गमगीन कर देता है।।

देखता हूं शीशे में अक्स जब भी अपना
'अनंत', दिखाई तू देती है।
हो आवाज़ फैली किसी की भी फिज़ा में,
सुनाई सिर्फ तू देती है।।

❖

अंकिता अग्रवाल
उप प्रबंधक (वित्त)
दुलहस्ती पावर स्टेशन, जम्मू व कश्मीर

खुद की उम्मीदों से.....

खुद की उम्मीदों से, खुद को इतना ना बांधो,
कि खुद से ही दूर हो जाओ,
कुछ हंसो, कुछ रो लो, कुछ चिल्लाओ!
इतना भी क्या गुस्सा, इतना भी क्या ईगो,
इतना भी क्या परफेक्शन चाहिए।
लड़ो यारों से, लड़ो घरवालों से, यूँ
मुंह मोड़ उनसे दूर न जाना
क्यों अंधेरे में खुद को डुबोना है, क्यों
चुप रहना है ना खुलकर कहना है
क्या है ये झगड़ा, क्या है ये मसला, कह
दो न किसी से, बांटो न किसी से
आगे चलो न, तुम हो तो सब है,
तुम नहीं तो, कुछ भी नहीं है–
क्यों दिन भर सोना है, बातों को पिरोना है,
क्यों शोक पुरानी, बातों पर करना है
होती गलती सबसे ही, करते मेहनत सब ही ,
बातें हैं ये छोटी, अब भूलो इस पल ही
आगे चलो न, तुम हो तो सब है
तुम हो तो जीवन हर दिन उम्मीद नई –
क्यों घुटना मन ही मन, क्यों सहना गुप
चुप, कुछ कह लो ना, बह लो ना
कह लो ना, बह लो ना, दिल कि सभी बातें कह लो ना
किस से है डरना, क्यों है डरना,
शेर हो तुम, अब बस है लड़ना
निराशा को, आशा में बदलना
शेर हो तुम, अब बस है लड़ना –

❖

ईमानदार का परिचय

सतर्क जागरूक जीवन शैली, छवि उसकी
न हो सकती मैली, घर दफ्तर में साख है
उसकी, संस्कारों में जान है उसकी

माता-पिता के स्वास्थ का ध्यान,
सुनिश्चित पत्नी का सम्मान
बच्चों को दे संस्कार महान, पाता सबसे है सम्मान

कर्तव्य निभाता घर बाहर के, जीवन की गुणवत्ता दमके
आकर्षित करता उसका स्वभाव,
उसका सब पर पड़े प्रभाव

सभी भरोसा कर लें उस पर, समाज
की नींव उसी के दम पर
दृष्टिकोण में है नैतिकता, साथ मिल जाता उसको सबका

अच्छी सच्ची विकसित नियत, प्रभाव
डालती उसकी शख्सियत
झूठ फरेब से दूर है कोसों, समयनिष्ठ है सत्यनिष्ठ वो

महत्व जानता सच्चाई की, ईमानदारी है आदत उसकी
समाज में वो सम्मान है पाता, औरों में भी साहस जगाता

छोटे-छोटे कार्य वो करता, मिसाल विशाल बनाता है,
अपनी आदत व्यवहार से, प्रेरणा सब में जगाता है

बेहतर निर्णय, न्याय वो करता, सक्षम
वो, न किसी से डरता,
राष्ट्र के प्रति कर्तव्य निभाता, प्रेरित कर विश्वास जगाता

लालच आलस्य से कोसों दूर,
सकारात्मक जीवन में भरपूर
कठिन काम उसका हो जाता, परिवार में आदर पाता

पारदर्शिता का रखता वो ध्यान, चाहे जो हो जाये परिणाम
जिम्मेदारी से करता काम, योग्यता पर न करता अभिमान

ऐसा व्यक्तित्व जो बन जाये, ईमानदार व्यक्ति वो कहलाए
सदाचार तुम भी अपनाओ, ईमानदार स्वतः कहलाओ ❖

कृति अरोड़ा
लेखा अधिकारी
चमेरा-III पावर स्टेशन, हिमाचल प्रदेश

दीप आस का विश्वास का

हिस्से की ज़मीन तो तुम्हें,
विरासत में मिल जाएगी,
पाना है नभ अगर,
तो कुछ मुश्किलें तो आएंगी।
बंद मुट्ठी को अपनी किस्मत,
आजमाने दो,
इस नन्हीं सी हथेली को,
मजबूत हाथ बन जाने दो।
दीपक जलाकर विश्वास का,
लक्ष्य पथ पर चले चलों,
मंजिलें तो मिल ही जाएगी,
बस मेहनत का नीर भरों।
छेनी
हथौड़ी से तराशे गए पत्थर,
इमारत
में अलग नजर आते हैं,
करें कोई ध्रुव सा समर्पण,
वो सितारे
अपने नाम से पहचाने जाते हैं।
घोर, अंधेरा हो, चाहे बर्फीली रात हो,
कभी न घबराना तुम,
बस कुछ पल ठहर,
दीप विश्वास का जलाना तुम।
अगर
पाना है अपने हिस्से का नभ,
अपने पंख फैलाना तुम,
इस जग को प्रकाशित करें,
ऐसा सूरज बन जाना तुम ❖

अरविन्द कुमार द्विवेदी
उप प्रबंधक (सिविल)
बिहार ग्रामीण सड़क परियोजना, पटना

राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्ध रहना है, भ्रष्टाचार को जड़ से खत्म करना है।

राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्ध रहना है,
भ्रष्टाचार को जड़ से खत्म करना है।
अब हमने ये मान लिया है, अब हमने ये ठान लिया है,
राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्ध रहना है,
भ्रष्टाचार को जड़ से खत्म करना है
निज जीवन में परिवर्तन करके, प्रतिबद्धता अपनाया है
विलासता और कामचोरी को जीवन से दूर भगाया है,
उच्च विचार मन में, सदा जीवन बसाया है,
राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्ध रहना है,
भ्रष्टाचार को जड़ से खत्म करना है
घर आँगन से शुरू किया है, कार्यस्थल
पर भी आजमाया है,
लेकर प्रतिबद्धता का प्रण, खुद को आत्मनिर्भर बनाया है,
जो है उसमें खुश रहना है, बच्चों को भी समझाया है,
राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्ध रहना है,
भ्रष्टाचार को जड़ से खत्म करना है
जीवन में सदाचार हमको लाना है,
सभी फले फूले ऐसा समाज बनाना है,
बस एक बार प्रण कर लेना है, सदैव अमल में लाना है,
राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्ध रहना है,
भ्रष्टाचार को जड़ से खत्म करना है
विश्व्यापी महामारी कोविड को हराया है,
जिसका टीका हमने बनाया है,
पूरे देशवासियों को मुफ्त में लगाया है,
अन्य देशों को भी उपलब्ध करवाया है,
चिकित्सा के क्षेत्र में अपने देश का परचम लहराना है,
राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्ध रहना है,
भ्रष्टाचार को जड़ से खत्म करना है
विद्युत वाहन का निर्माण-परिचालन प्रारम्भ करना है,
खाड़ी देशों पर निर्भरता को कमतर करना है,
वन्देभारत ट्रेन चलाया है, बुलेट ट्रेन भी चलाना है,
राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्ध रहना है,
भ्रष्टाचार को जड़ से खत्म करना है
रखकर पर्यावरण का ख्याल, जलविद्युत को अपनाया है,
सौर-पवन ऊर्जा का भी उत्पादन बढ़ाना है,
नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में अपना झंडा लहराना है,
राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्ध रहना है,
भ्रष्टाचार को जड़ से खत्म करना है
कलाम के क्रायोजनिक को सफल बनाया है,
चंद्रयान को चाँद तक पहुचाया है,
अग्नि पांच के ताप को, विश्व पटल पर पहुँचाना है,
तेजस के गर्जना को आसमान में गुंजाना है,
राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्ध रहना है, भ्रष्टाचार को जड़ से
खत्म करना है
बुद्ध-महावीर के धरती से शांति का पाठ पढ़ना है,
शिवाजी – महाराणा के शौर्यगाथा को भी फैलाना है,
जी-20 के सफल आयोजन करवाया है,
पूरे जगत में हमने अपना लोहा मनवाया है,
राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्ध रहना है,
भ्रष्टाचार को जड़ से खत्म करना है
अब हमने ये मान लिया है, अब हमने ये ठान लिया है,
राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्ध रहना है,
भ्रष्टाचार को जड़ से खत्म करना है।

सुनीता शर्मा
प्रबंधक (राजभाषा)
पार्बती-III पावर स्टेशन, हिमाचल प्रदेश

हिंदी गीत

आओ हम सब हिंद वासी,
हिंदी को उर में बसाएं,
हिंदी की इक डोर में बंधकर,
एकजुट हो जाएं।

हिंदी, हिंद भूमि में जाई,
नहीं बाहर से आई,
हिंद वासी जब हैं भाई,
तो हिंदी क्यों हो पराई,

निज भाषा को तजकर
न अंग्रेजी में बतियाएं,
आओ हम सब हिंद वासी,
हिंदी को उर में बसाएं।

अपनी ही भूमि पर हिंदी,
क्यों बन कर रहे बेचारी,
हिंदी को वो मान मिले,
है जिसकी यह अधिकारी,

हिंदी में हम काम करें,
हिंदी को आगे लाएं,
आओ हम सब हिंद वासी,
हिंदी को उर में बसाएं।

विकट दशा में हमने,
हिंदी को लाकर है छोड़ा,
अंग्रेजी को साथ लिया
हिंदी से नाता तोड़ा,

हिंदी को निज पद दिलाकर,
खोया मान लौटाएं,
आओ हम सब हिंद वासी,
हिंदी को उर में बसाएं।

❖

नीरज कुमार
उप प्रबंधक (संरक्षा)
क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़

जब श्रीमतीजी ऑफिस आई

जब एक दिन थका हारा मैं घर पहुँचा
वो मेरे लिए चाय की प्याली लाई और बोली
जो इतना तुम थक हार कर आते हो
ऑफिस में क्या हल चलाते हो
मैंने कहा हल तो नहीं चलाता पर बुद्धि चलाता हूँ
इसलिए इतना थक जाता हूँ
"अच्छा" इसका मतलब मैं घर पर बुद्धि नहीं चलाती हूँ
यह सुन कर मुझे उसके गुस्से का अंदेशा आया
और जल्दी से मैंने बात हो घुमाया
अरे अपने हर काम में तुम श्रेष्ठ हो
इसलिए सब आराम से कर लेती हो
और मैं छोटे से दिमाग़ को ज़्यादा घुमाता हूँ
तभी जाके थोड़ा-बहुत कुछ कर पाता हूँ।
फिर उसने सोच समझकर बोला की एक काम करो
कल तुम घर पर रहो मैं ऑफिस जाऊँगी
और तुम्हारे सारे काम चुटकियों में निपटाऊँगी
मेरे लाख समझाने पर भी वो नहीं मानी
और फिर जो हुआ वो सुनो उसी की ज़ुबानी--
शाम को ऑफिस से आकर श्रीमतीजी माथा पकड़कर बोली
ये लो अपना लैपटॉप ये लो तुम्हारी झोली
ये कोई नौकरी है या फाँसी का फंदा है?
मैं तो यह सोच कर हैरान हूँ कि आप अब तक कैसे ज़िंदा हैं।
मैंने जैसे ही उसे एक गिलास पानी पिलाया
धीरे-धीरे श्रीमतीजी ने सब बतलाया
तुम्हारे ऑफिस में दिन भर अजीब सी दुर्गंध रहती है
और फाइल? वहां तो फाइलों की नदिया बहती है।
मुझे लगा एक-एक करके सब काम निपटाऊँगी

तभी मीटिंग का बुलावा आया
जिसमें सब इसकी टोपी उसके सर कर रहे थे
और मेरे पेंडिंग काम धीरे-धीरे बढ़ रहे थे
दो घंटे के बाद मीटिंग ख़त्म हुई
और कुछ नए काम और मिले
जिन्हें और लोग नहीं कर रहें थे
बस मेरी अनरीड मेल का साइज
और सर का दर्द बढ़ रहा था
और मेरा चाय पीने का मन कर रहा था
फिर मैंने सोचा एक काम करती हूँ
चाय पीकर इन सब काम में लगती हूँ
वाह क्या चाय थी..!
बस पानी में थोड़ी सी पत्ती मिलाई
मैंने चाय की प्याली टेबल से हटाई
और एक फाइल हाथ में उठायी
फाइल का हर शब्द मेरे लिये ग़ैर था
न पीछे का विवरण न आगे का ज्ञान था
न ही किसी लाइन का उद्देश्य न ही सिर पैर था।
फिर दूसरी फाइल उठाई
जिस स्पीड से उठाई उसी स्पीड से गिराई
उसमें पिछले कई कामों का हिसाब-किताब था
और एक-एक काम का पिछली फाइलों से
ढूँढ कर देना जवाब था।
ये सब करते करते शाम हो गई
फिर लेट सिटिंग की चर्चा भी आम हो गई
जैसे-तैसे करके कुछ कामों को निपटाया
तभी बॉस ने आकर कुछ नये कामों के बारे में बतलाया
उन कामों को सोचते-सोचते रास्ते
का जाम भी दूर हो गया
और दिन भर कुछ न करके भी शरीर
थकान से चकनाचूर हो गया।
फिर टेबल से चाय की प्लेट समेटते हुए बोली
एक काम करो आप पौष्टिक भोजन खाया करो
और अपने काम पर ख़ुद जाया करो
मुझे तो थोड़े बहुत सीधे-सीधे काम ही
घर में होते है मेरे लिए यही ठीक है
आप ये सब करके अपने को खपाते हैं
रोज एक नई जंग जीत के घर आते हैं
और सुबह फिर से सब करने को तैयार हो जाते हैं
तभी हम सब घर में आराम से सो पाते हैं। ❖

मैं काँटा तू फूल सखी

मैं सख्त सा ऐंठा हुआ,
तू मुलायम सँवरी सी,
तुझे छुए सब मन करके,
मुझे जो छुए वो भूल सखी,
मैं काँटा तू फूल सखी।

मैं जूठा पत्तल फेंका हुआ,
तू पावन पवित्र तुलसी है,
तुझे सब पूजे हर बार,
मैं एक बार में ही फ़िज़ूल सखी,
मैं काँटा तू फूल सखी।

तू मंदिर की छवि जैसी,
मैं सीढ़ियों की धूल हूँ,
तुझे सब सवारें निहारे,
मुझे पैरों तले देते सब रुंद सखी,
मैं काँटा तू फूल सखी।

तू शादी सा पवित्र बंधन,
मैं हर झगड़े की नींव हूँ,
मैं शोक 3-तलाक जैसा,
तू निकाह का क़ुबूल सखी,
मैं काँटा तू फूल सखी।

तू हर काम में निपुण है,
मेरा एक काम होता कई बार सखी,
मैं रहता हर जगह पीछे,
तू हर जगह करें रूल सखी।
मैं काँटा तू फूल सखी।

तू फूलों का राजा गुलाब है,
मैं जंगली कीकर सुनसान सा,
तू सबको सुख पहुँचाती जड़ी बूटी है,
मैं सबको कष्ट देता बबूल सखी,
मैं काँटा तू फूल सखी। ❖

मर्द क्या होता है?

बचपन से ही जिसके कंधों पर
ज़िम्मेदारियाँ सवार हो जाती है,
पंद्रह साल का होने से पहले ही जिसकी
उम्र बीस के पार जाती है,
दिल से कितना भी कोमल हो, नादान हो, बच्चा हो,
चेहरे पे सख्ती लेकर हर कठिनाई के लिए तैयार होता है,
लो फिर आज हम बता ही देते है, कि मर्द क्या होता है।

बहन से पूरा बचपन विवादों में, झगड़ों में गुज़ारता है,
बिना बोले रक्षाबंधन के सब वचनों को निभाता है,
बहन की ग़लतियों पर ग़ुस्सा होकर
भी घरवालों से उसे बचाता है,
जो भाई कभी भी सीधे मुँह बात ना करके भी बहन की
विदाई पर सबसे ज्यादा रोता है, वही मर्द होता है।

माँ से हमेशा कुछ ना कुछ माँगता
है, कहना माने या ना माने
पर हमेशा उसे भगवान से भी बढ़कर मानता है,
जब घर थक हार के आता है तो
माँ के आँचल में सोता है,
माँ से बातें करके फिर से रिचार्ज होता है,
जो बेटा फिर से सुबह उठकर माँ के आशीर्वाद से
जग जीतने को तैयार हो जाता है, वही मर्द होता है।

पिता से जिसकी बनी हो या हमेशा ठनी हो,
पिता के कटु वचन सुनकर भी
पुत्र होने के सारे फ़र्ज़ निभाता है,
पिता की परेशानियों को बिना कहे बाँट लेता है,
पिता की इज्जत करने के तरीक़े को डर बताता है,
पिता के एक इशारे पर लड़ मरने को तैयार होता है,
जो पुत्र पिता से बात भी न करके भी
सब कुछ बतलाता है, वही मर्द होता है।

पत्नी से छोटी-छोटी बातों पर झगड़ता है,
पत्नी कुछ ग़लत बोल दे तो उस पर अकड़ता है,
पर घर के इंजन की चाबी हमेशा
उसके हाथ में रखता है,
कमाता ख़ुद है पर पत्नी से खर्च करवाता है,
पत्नी के परिवार को अपना घर समझता है,
जो पत्नी के सम्मान के लिये पूरे जमाने
से लड़ जाता है, वही मर्द होता है।

अपने परिवार की ख़ुशी के लिये सब त्याग करता है,
हर समय कुछ-कुछ सोचकर सबका
भविष्य तैयार करता है,
रास्ते की हर मुसीबत और जमाने के
वार-प्रहार को अपने सीने पर सहता है,
किसी से भी अपने कष्टों के बारे में कुछ
नहीं कहकर सिर्फ़ मुस्कुराता है,
अब समझ आया 'नीरज' की मर्द क्या होता है। ❖

सुनील कुमार भार्गव
उप प्रबंधक (पर्यावरण) तीस्ता VI जल विद्युत परियोजना

पर्यावरण बचा लें हम

उजड़ गयी है धरा हमारी, आओ इसे बचा लें हम
पेड़ लगा दें गली - गली और धरती हरी बना दें हम।
कभी चहकते थे पक्षी घर आँगन में,
और लोरी हवा सुनाती थी
पेड़ों की ठंडी छाया में, मीठी सी नींदे आती थीं।
जहाँ देखते थे जंगल हम, आज पत्थरों का कब्ज़ा है
हरियाली अब चली गयी, बस आज बिल्डिंगों का कब्ज़ा है।
उजड़ गयी है धरा हमारी, आओ इसे बचा लें हम
पेड़ लगा दें गली- गली और धरती हरी बना दें हम।
जल ही जीवन है मेरा, ये कहते फिरते रहते हम
खुद ही इसे मिटाया हमने, फिर क्यों कहते प्यासे है हम।
घोल दिया है जहर हवा में, साँस कहा से लेंगे हम
पर्यावरण नष्ट हो रहा, आओ इसे बचा लें हम।

उजड़ गयी है धरा हमारी, आओ इसे बचा लें हम
पेड़ लगा दें गली- गली और धरती हरी बना दें हम।
निर्मल थीं जो नदी हमारी, आज प्रदूषित हो गई हैं
पिघल रहे हैं हिमगिर सारे, कही बाढ़ और सूखा है।
तापमान बढ़ता ही जाता, धरती कितनी जलती है।
चारों ओर मचा कोलाहल, देखो कितनी गर्मी है।

उजड़ गयी है धरा हमारी, आओ इसे बचा लें हम
पेड़ लगा दें गली- गली और धरती हरी बना दें हम।
हरे भरे जंगल ये न्यारे, सब जीवों को शरण है देते
आओ मिलकर इन्हें बचा लें, प्राणवायु हम सबको देते।
पर्यावरण जागरुकता को, फैला दें घर-घर में हम सब
पर्यावरण बचाना है मिलकर कोशिश कर लें हम सब।
उजड़ गयी है धरा हमारी, आओ इसे बचा लें हम
पेड़ लगा दें गली-गली और धरती हरी बना दें हम। ❖

सुन्दर सहनी
वरिष्ठ कार्यालय अधीक्षक
राजभाषा विभाग, निगम मुख्यालय

यह जिस्म तो किराये का घर है

यह जिस्म तो किराये का घर है
एक दिन खाली करके जाना पड़ेगा।
सांसे हो जाएंगी जब हमारी पूरी यहां
रूह को तन से अलविदा कहना पड़ेगा।
वक्त नहीं है तो बच जाएगा तू गोली से भी
समय आया तो ठोकर से ही मर जाएगा।
मौत कोई रिश्वत नहीं लेती कभी
सारी दौलत शौहरत छोड़कर जाना पड़ेगा।
ना डर यूँ धूल के जरा से एहसास से तू
एक दिन सबको मिट्टी में मिलना पड़ेगा।
सब याद करे तुझे दुनिया से जाने के बाद
दूसरों के लिए भी थोड़ा सा कुछ करके जाना पड़ेगा।
इन हाथो से करोड़ों कमा ले भले तू यहां
खाली हाथ आया था खाली हाथ ही जाना पड़ेगा।
न भर यूँ जेबें बेईमान की दौलत से
कफन को बगैर जेब के ही ओढ़ाना पड़ेगा।
यह ना सोच तेरे बगैर कुछ नहीं हो यहां
रोज किसी को 'आना' तो किसी को 'जाना' पड़ेगा। ❖

शेख सफिउल अहमद
उप प्रबंधक (विद्युत)
उड़ी पावर स्टेशन, जम्मू व कश्मीर

नारी तुझे सशक्त होना होगा

अंधेरा घनघोर घिर आई –
अब तुझे ही सूर्य बनना होगा,
भ्रष्टाचार को जड़ से मिटाने
नारी तुझे सशक्त होना होगा।
तू माता है, ममतामयी है,
स्तन में ईमान घोलना होगा,
बेबश लाचार इन शवों में –
सत्य की शक्ति भरना होगा।
नारी तुझे सशक्त होना होगा।
तू काली है, तू दुर्गा है
भ्रष्टाचार के असुर का वध करना होगा
अपंग अक्षम इस समाज को
अपनी दशों भुजाएँ देना होगा।
नारी तुझे सशक्त होना होगा।
तू विद्यादायिनी सरस्वती है –
घर-घर शिक्षा का आलोक जगाना होगा,
शापग्रस्त इस जनता को
अशिक्षा से मुक्त करना होगा।
नारी तुझे सशक्त होना होगा।
तू लक्ष्मी है – धन की देवी !
सच्चाई का साथ देना होगा
कपटियों के भेंट चढ़ावा –
पैरों से ठुकराना होगा।
नारी तुझे सशक्त होना होगा।
भ्रष्टाचार-रूपी जरासंध का
भर चुका पाप का घड़ा,
कलयुग के कृष्ण बनके
सुदर्शन तुझे ही चलाना होगा।
नारी तुझे सशक्त होना होगा।
तू ही शिव है, तू ही शिवानी –
प्रलय तांडव आज करना होगा,
भ्रष्ट चेतना और भ्रष्टाचार का नाश करके
सृष्टि नया बनाना होगा।
नारी तुझे सशक्त होना होगा ।

है विश्वास होंगे कामयाब एक दिन

शायद धरती थक गई है जरा –
कर दिया है शायद हमने इसे बीमार।
डरेंगे नहीं हम बुझे चाहे हर दीप,
देखी है हमने पहले भी अंधकार।
अभिलाषा है लौट आए वो दिन –
है विश्वास होंगे कामयाब एक दिन।

शायद अंधेरा छाई है घनघोर,
शायद ख्वाबों ने भी खो दिए है रंग –
हर ग्रहण के बाद फिर भी निकलता है सूर्य,
एक दूसरे के सहारे हम जीतेंगे यह जंग।
अभिलाषा है लौट आए वो दिन –
है विश्वास होंगे कामयाब एक दिन।

कई अपनों के टूट गई जीवनडोर;
कोई खोया काम, तो कहीं भूखा–उदास मुख।
सुधार लेंगे, की है जो गलतियाँ,
गम का बादल चीरकर निकलेगा सुख।
अभिलाषा है लौट आए वो दिन –
है विश्वास होंगे कामयाब एकदिन।

आज घरों में बंद है हम जरूर,
मिल नहीं पा रहे हैं मित्रों से –
फिर भी हम गाएंगे विजय के गीत,
जुड़े रहेंगे यूं ही एक दूसरे के दिलों से।
अभिलाषा है लौट आए वो दिन –
है विश्वास होंगे कामयाब एक दिन!

निश्चय निराशाओं ने घेरा हुआ है संसार,
मशालों की लौ को पर बुझाने ना दो।
सवेरा बस अगले ही पल है –
प्रयासों में थोड़ा ऊर्जा और भर दो।
अभिलाषा है लौट आए वो दिन –
है विश्वास होंगे कामयाब एक दिन।

धरित्री आज मांगे देख–भाल हमारी,
ममता भरा स्पर्श चाहे हमारा।
उम्मीदों को कमजोर न होने देना–
सूरज की पहली ही किरण से हारेगा अंधेरा।
अभिलाषा है लौट आए वो दिन –
है विश्वास होंगे कामयाब एक दिन।

नस नस में बह रही है साहस,
रग रग में दौर रहा है लड़ने की इच्छा।
बागों में फिर लौट आएगी बहार –
विध्वंस के बाद ही जागती हैं बस्तियां।
अभिलाषा है लौट आए वो दिन –
है विश्वास होंगे कामयाब एक दिन।

आओ, एक स्वर में बोले हम –
हारेंगे नहीं, शत्रु हो चाहे कितना भी पराक्रमी।
सुरक्षित है यह धरा हमारे हाथों में,
'वराह' भी हम हैं और 'नूह' भी हम ही।
अभिलाषा है लौट आए वो दिन –
है विश्वास होंगे कामयाब एक दिन! ❖

कुलदीप कुमार शर्मा
उप प्रबंधक (राजभाषा)
सलाल पावर स्टेशन, ज्योतिपुरम, जम्मू व कश्मीर

विश्वगुरु भारत

एक वह युग था जब मेरी भारत माता
विश्व गुरु कहलाती थी,
सारी दुनिया जिस के आंचल में,
ममता की छाया पाती थी।
वेद ग्रंथों से ज्ञान प्राप्त कर, ऋषियों
ने उन्नत विज्ञान बनाया था,
गिन कर के तारामंडल को, ज्योतिष विज्ञान बढ़ाया था।
पृथ्वी चपटी नहीं गोल है, सदियों पहले जगत को हमने
ही बतलाया था,
देकर अंक शून्य जग को, गिनना हमने सिखलाया था।
आयुर्वेद सी पद्धति दे कर, रोगमुक्त विश्व बनाया था,
संस्कृति के ज्ञान से जग को, जीना
हमने सिखलाया था ।
भारत मां के आंगन में, दूध की नदियां बहती थी,
यहाँ वेदों के ज्ञान के बल पर,
धनलक्ष्मी घर-घर रहती थी।
खेतों में फसलें लहलहाती, घरों में खुशियां रहती थी,
स्वर्ग है भारत भूमि मेरी, सारी दुनिया कहती थी।
गरीबी, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार जैसे शब्दों को,
शब्दकोश में स्थान नहीं मिल पाया था,
हमारे अर्थशास्त्रियों ने, आदर्श मंत्र अपनाया था,
तभी तो यह भारत मेरा, सोने की चिड़िया कहलाया था।
अकूत धन संपदा थी, पर घरों में ताले नहीं लगाते थे,
भारत मां के हर आंगन में, श्रेष्ठ संस्कार झलकते थे।
मैं कितना इसका व्याख्यान करूं, मैं कितना इसका ध्यान
करूं,
जिस युग में आज खड़ा हूं मैं, जिस
धरा पर पला बड़ा हूं मैं,
वह मुझको याद दिलाती है, कथा अपनी सुनाती है, वह
मुझको बहुत रुलाती है।
आज ना जाने क्या हो गया,
जो मेरा यह महान देश, भ्रष्टाचारमय हो गया
यह किसकी कारगुजारी है, किसने संस्कारों की
परिपाटी पर, चला दी अपनी अय्यारी है।
मैं संस्कारों की परिपाटी को, फिर से लाना चाहता हूँ,
शिक्षा से संस्कार मिलें, ऐसा बदलाव चाहता हूँ,
सामाजिक जागरूकता लाकर, देश जगाना चाहता हूँ,
घर आँगन से संस्कारों वाली, हवा बहाना चाहता हूँ।
समाज में फैली विषम बुराइयों को, मैं जड़ से मिटाना
चाहता हूं।
श्रेष्ठ जीवन मूल्यों को स्थापित कर,
धरा को स्वर्ग बनाना चाहता हूँ,
पहले अपने घर से शुरू करूँ,
तभी तो समाज अपनाएगा,
बुराई उन्मूलन के नारों से आखिर,
वह कब तक धोखा खाएगा।
आओ हम सब मिलकर के, आज संकल्प उठाते हैं,
संस्कारी बन करके हम सब, भारत को श्रेष्ठ बनाते हैं,
विश्वगुरु था, विश्वगुरु है, यह आवाज उठाते हैं,
भारत माँ की पुनः प्रतिष्ठा, की हम अलख जगाते हैं,
रिक्त पड़ा है सिंहासन, फिर हम क्यों ठिठके जाते हैं,
विश्वगुरु के सिंहासन पर, भारत माँ को बैठाते हैं ॥ ❖

हमारा संगठन-एनएचपीसी

1975 में जन्म लिया,
उठते गिरते पला बढ़ा,
जल से बिजली पैदा करता,
नाम है ऊँचा किया सदा,
अनगिनत घरों को रोशन करके,
खुशियों की सौगात भरके,
जन-मन में पाया मुकाम,
एनएचपीसी नाम धराकर,
बन पाया यह संगठन महान,

हम विद्युत तरंगें पकड़ने वाले,
हम पन चक्रिकाओं से लड़ने वाले,
हम नदियों की दिशाएँ बदलने वाले,
हम पर्वतों की छाती दलने वाले,
हम अंधेरे से लड़ने वाले,
हम बिजली पैदा करने वाले,
गाँव-गाँव को रोशन करके,
कारखानों में शक्ति भरके,
रोजगार को किया है आम,
देश-विदेश में दिला रहे हम,
भारत माँ को उच्च सम्मान ।

अनिल कुमार
सहायक प्रबंधक (आईटी)
आईटी एंड सी विभाग निगम मुख्यालय

देश की पहचान है हिंदी

अभिव्यक्ति का वरदान है हिंदी,
इस देश की पहचान है हिंदी ।
अपनत्व भरा शब्द शब्द में,
है विश्व भरा वाक्य वाक्य में ।
भाषा का अतुल ज्ञान है हिंदी,
इस देश की पहचान है हिंदी ।

है आग ज्यों चिराग में सुगंध पवन में,
हिंदी समायी शाख शाख राष्ट्र चमन में।
भूतल समस्त कोण कोण में,
गुंजायमान नील व्योम में।
कण कण विराजमान है हिंदी,
इस देश की पहचान है हिंदी ।

हिंदी कबीर कंठ बनी संत की वाणी,
तुलसी रहीम सूर सरीखे भये ज्ञानी ।
अज्ञान मिटा पथ दिखा सही,
गंगा जो भक्ति भाव की बही ।
वाणी का मधुर गान है हिंदी,
इस देश की पहचान है हिंदी ।

जन मन उठी उमंग
जगी राष्ट्र भावना,
हिंदी से अखिल राष्ट्र
बढ़ी प्रबल चेतना ।
स्वर क्रांति गान के 'बढ़े चलो',
'जय हिन्द' सभी गर्व से कहो ।
भारत का विजय गान है हिंदी,
इस देश की पहचान है हिंदी ।

माला में पिरोये हुई हर कोस की बोली,
रस छंद अलंकार सजी काव्य रंगोली ।
है लेख-नाद एक सा सरल,
हिंदी विचार-वाहिनी प्रबल ।
वीणा की सधी तान है हिंदी,
इस देश की पहचान है हिंदी ।

है राग द्वेष मुक्त, प्रेम की अतुल विधा,
है कोटि तेज युक्त भानु सी अमिट प्रभा।
अविरल प्रवाह ज्ञान का बने,
संस्कार राष्ट्र विश्व का बने ।
उत्कर्ष का सोपान है हिंदी,
इस देश की पहचान है हिंदी ।

चंद्रयान की जय हो !

हुआ प्रफुल्लित अखिल राष्ट्र,उत्कृष्ट यत्न की जय हो
अतुलनीय संकल्प मूर्त है, कार्यसिद्धि की जय हो ।
लक्ष्य प्राप्ति से विश्व अचंभित,भारत मां की जय हो
स्वर गूंजें विज्ञानलोक में, चंद्रयान की जय हो ।

महायुक्ति, कौशल, संयोजन कर पुरुषार्थ दिखाया
दक्षिण ध्रुव पर प्रथम अवतरण कर इतिहास बनाया ।
सफल मनोरथ हुआ राष्ट्र का शुभारम्भ की जय हो
स्वर गूंजें विज्ञानलोक में, चंद्रयान की जय हो ।

अब अगम्य पथ डिगा नहीं सकते पग,ध्येय चयन से
नायक बन संपूर्ण करेंगे हर उद्देश्य वतन के ।
भारत भू से अंतरिक्ष तक, जन गण मन की जय हो
स्वर गूंजें विज्ञानलोक में, चंद्रयान की जय हो ।

अश्रु बहे थे के. सिवान के, किन्तु न धीरज खोया
किया पराक्रम गहन साधना और विश्वास संजोया ।
इसरो का अभिनंदन, श्रीधर सोमनाथ की जय हो
स्वर गूंजें विज्ञानलोक में, चंद्रयान की जय हो ।

रामकृष्ण, श्रीकांत, शंकरन, विरमुथुवेल की जय हो
नायर, थॉमस, मोहना और वी नारायणन की जय हो ।
कल्पना, वनीथा, शेष समर्पित किरदारों की जय हो
स्वर गूंजें विज्ञानलोक में, चंद्रयान की जय हो ।

अंतर्मन विश्वास प्रबल है अंतरिक्ष है अपना
गगनयान आदित्ययान का दूर नहीं है सपना ।
भारत के स्वर्णिम भविष्य की उम्मीदों की जय हो
स्वर गूंजें विज्ञानलोक में, चंद्रयान की जय हो ।

किए प्रक्षेपित कई उपग्रह मंगल मिशन किया है
साराभाई के सपनों को नव आकार दिया है ।
करें कामना हम आगामी अभियानों की जय हो
स्वर गूंजें विज्ञानलोक में, चंद्रयान की जय हो । ❖

इन्दु शर्मा
सहायक प्रबंधक (आईटी)
चमेरा-I पावर स्टेशन, हिमाचल प्रदेश

रोशनी

एक दिन बैठी थी मैं रोशनी की तलाश में
सोच रही थी कैसे पांऊ उजियारा इस जहां में
जहाँ न कोई झूठ हो, न फरेब हो
न कोई उँच हो और न कोई नीच हो
रोशनी के तेज से थी अन्जान
क्योंकि पता न था सूरज के ताप का अन्जाम।
सोच रही थी काश मैं भी होती सूरज की तरह रोशन
संसार को जो है चलाता दिन-रात, गर्मी सर्दी जो है लाता
चाँद-तारे भी तो सूरज से ही रोशनी हैं लेते
अगर ये चाँद-तारे न होते आप, मैं,पृथ्वी-पाताल न होते
आप, मैं, अंधकार में जी रहे होते।
जब ध्यान लगाया तो पाया
व्यर्थ ही रोशनी की तलाश में भटक रहे हैं
रोशनी तो हमारे अर्न्तमन में है
मजा तो तब है, जब आप किसी को रोशनी दें।
पथ-प्रदर्शक बन, दूसरों को रोशनी दें
अब तक तो आप अपने लिए जी रहे थे
अपना अनमोल जीवन यूं ही खो रहे थे
दूसरों के लिए जियो तो जानूं
इंसान का कर्तव्य समझो तो मानूँ।
रोशनी रूपी शमा मन में जला लो अगर
नफरत भी प्यार में बदल जाएगी
मन का अन्धकार उजियारे में बदल जाएगा
भारत विकासशील से विकसित में बदल जाएगा
उठो जागो हो गया है सवेरा
जो सो रहे हैं जगा दो उनके अन्तर्मन का उजियारा। ❖

मुकेश कुमार वर्मा
सहायक प्रबंधक (यांत्रिकी)
ओंकारेश्वर पावर स्टेशन, मध्य प्रदेश

मुझे क्या करना हैं

आज में सोचता हूँ कि मुझे क्या करना है
फिर दिमाग से आवाज आती हैं और कहता हैं
चल मेरे मन कुछ बात करें और कुछ सुन लें
ताकि मुझे क्या करना हैं, इस बारे में कुछ बुन लें।
ये कहना और सुनना अपनी मातृभाषा में करेंगें
जिससे बात के सार को समझना
और समझाना आसान रहेंगें
यह सब यूहीं नहीं होगा पर होगा जरूर"
की मुझे क्या करना हैं हुजूर
क्योकि मातृभाषा में हैं बहुत गहराई यह पता होगा जरूर ❖

मेरे सपनों की दुनिया

ख्यालों से दोस्ती और सपनों से प्यार,
होते ही ऐसा लगा की खुद से बातें
करने का इससे खूबसूरत तरीका कोई
और नहीं हो सकता, जिंदगी बहुत से
अनुभव कराती है, कुछ बहुत अच्छे,
तो कुछ बड़े बुरे होते हैं, लाख बुराइयाँ
हो दुनियां में, मगर हम खुद को जानते
और खुद से मिलते रहें तो हम अपनी
नजरों से बचे रहेंगे, हर किसी को
अपने दिल के अंदर के कलाकार को,
जिंदा रखना चाहिए तभी हम संतुष्ट
रह सकते हैं इक कलम हैं अपनी, हो
के जिस पे सवार हम अपने ख्याली
आसमान में उड़ान भरा करते है। ❖

संजीव कुमार
वरिष्ठ कार्यालय अधीक्षक
योजना विभाग, निगम मुख्यालय

माँ तो बस माँ होती है

माँ के स्तन का दूध, माँ की ममता का छाँव।
पता ही नहीं चला मुझे, कब बड़े हुए मेरे पाँव।
मेरी किलकारियाँ सुन, माँ बहुत खुश होती थीं।
जब सारी रात मैं रोता था, तब माँ कहाँ सोती थीं।
जब चलने लगे थे कदम मेरे
घर के अंदर माँ को लेने पड़ते थे कई फेरे।
मम्मी, मम्मा, अम्मा, माई
जब जैसे पुकारा, माँ दौड़ी चली आई।
एक समय ऐसा भी आया, जब माँ से दूर हुआ
रोजी-रोटी के चक्कर में, शहर में बसने को मजबूर हुआ।
बीबी-बच्चे, बंगला-गाड़ी, सब कुछ था पास मेरे
पर नहीं था कुछ, तो माँ का आंचल साथ मेरे।
जीवन के इन चक्रों में, बेटे का फर्ज निभाया नहीं
वहाँ गाँव में माँ अकेली होगी, कभी अपने पास बुलाया नहीं।
माँ को लेने अगले ही दिन निकल पड़ा मन में लिए एक आस
चारपाई पर लेटी माँ उठ बैठी, लगा लिया सीने से अपने पास।
मन में थी खुशी, आँखों में थे आँसू, माँ को बाहों में थाम लिया
कहा चलो माँ बड़ी देर कर दी मैंने, माँ ने कहना मान लिया।
यही है रिश्ता माँ-बेटे का, माँ में दुनिया बसती है
माँ तो बस माँ होती है, माँ तो बस माँ होती है। ❖

पूर्वा मैनी, प्रोग्रामर
सलाल पावर स्टेशन, जम्मू व कश्मीर

फर्क तो पड़ता है

कभी रोटी, कभी सलाहकार, कभी नाव,
तो कभी दौलत सा सुकून थे वो।
मेरी मुस्कान की कहानी भी तो,
हमेशा आप ही थे।
ये वक्त बस एक घोर खालीपन में गुज़र रहा है।
"बहुत अच्छी हूं"
"बहुत अच्छी हूं" - कह देती हूं - किसी के पूछने पर,
पर भीतर से बिल्कुल टूटा और बिन
साया के महसूस करती हूं।
आपके जैसा कोई निस्वार्थ प्यार
और विश्वास नहीं करता,
अब आपके जैसा, कोई मेरे लिए नहीं लड़ता।
फर्क तो पड़ता है
हां, आपके मेरे जीवन में ना होने से बहुत फर्क पड़ता है।
आंखे अब अक्सर नम सी रहती है।
जज्बात भी छुपाते रहती हूं, सपनों
में इंतजार बहुत करती हूं।
यादों में ही मुलाकात कर तड़प जाती हूं।
फोटो में आपकी खामोशी खलने लगी है।
भीड़ में भी अब खोने लगी हूं।
दुनिया सारी बेगानी लगने लगी है।
मेरी माँ का परिवार अधूरा हो गया है।
अक्सर उनको भी अकेले जूझते पाती हूं।
आँखें सो जाती है, पर मस्तिष्क को जगा पाती हूं।
आपके होने का वजूद, वो हसीन
जायदाद संभालते पाती हूं।
क्योकि, आप वो छांव, वो भरा-पूरा गांव थे।
मुझको जीवन देने का कर्ज मै कैसे चुकाऊंगी?
आत्मविश्वासी बनाने का एहसान कैसे निभाऊंगी?
आपके उस बेशुमार परवाह को कैसे भुला पाऊंगी?
जो आप मेरे लिए कर गए, किसी के
लिए शायद कर जाऊंगी।

संदीप जोशी
अधिकारी (मा.सं.)
धौलीगंगा पावर स्टेशन, उत्तराखंड

ढूंढता बचपन

ढूंढने लगता जैसे ख़ुद में बचपन,
बुढ़ापा जब महसूस करता ये तन।

तन की थकन निशिदिन बढ़ती जाती,
पर बूढ़ा कब होता है ये चंचल मन?

उमंग, तरंग ही तो सब जीवन के रंग
खुशियां हैं जब चले हम जीवन के संग!

उलझन इस जीवन का बड़ा है रण
जीतो जग प्रेम से बन सबकी धड़कन!

उम्र पचपन तो जैसे बस एक दर्पण
मन से मिल चेहरे पर रचवाओ नर्तन!

ढूंढता ख़ुद-ब-ख़ुद ख़ुद में बचपन,
बुढ़ापा जब महसूस करता ये तन।

जय प्रकाश
सहायक प्रबंधक (आईटी),
रंगीत-IV जल विद्युत परियोजना, सिक्किम

बचपन की यादें

जब कभी भी याद मुझे वो बचपन का दिन आता है,
रोम रोम है खिल जाता, मन मंद-मंद मुस्काता है।
दादाजी संग सैर सपाटे, दादीजी की लोड़ी,
छोटा भईया देख खिलौने करता जोड़ा-जोड़ी।
माँ-पिताजी गाकर गाने, हमको रोज पढ़ाते ,
हम तो अल्हड़ बड़े भुलक्कर बैठे-बैठे सो जाते।
खाने की तो पूछो मत, खुब दूध मलाई खाते,
छिना-झपटी के चक्कर मे मटखे भी टूट जाते।
घर के बाहर, गली मे जाकर बच्चों से लड़ जाते,
तना-तानी, फिर लड़ा-लड़ाई कपड़े भी फट जाते।
घर जब आते, सारी बातें कपड़े ही कह जाते,
फिर मत पूछो, चाचाजी तब डंडे से समझाते।
जब कभी भी फोन मेरे उन मित्रों का आ जाता है,
बाल-बाल मन हो जाता, दिल भी गद-गद हो जाता है।
जब कभी भी याद मुझे वो बचपन का दिन आता है,
रोम रोम है खिल जाता, मन मंद-मंद मुस्काता है।
चौपालों में रोज शाम सब कीर्तन गाते चाचा,
ढ़ोल, नगाड़े, सारंगी संग मैं भी झाल बजाता।
दूर कहीं से छोटी टोली में लोग कभी कुछ आते,
रुक गाँवों मे कई महीने रामलीला दिखलाते।
कभी-कभी तो कोई मदारी बंदर लेकर आता,
अपने बंदर और बंदरिया को हीरो बतलाता।
वो भी बंदर बड़ा कलंदर उछल-उछल मटकाता,
कभी धर्मेंदर कभी जितेंदर, कभी दारा सिंह बन जाता।
बंदरिये को पूछो मत वो बड़ी रसीली नार,
छमक-छमक के चले मटक के करे सोलह श्रृंगार।
बंदर भी तब देख बंदरिये की नखड़ा शर्माता है,
पुंछा हिलाता लेकर माला पीछे-पीछे आता है।
जब कभी भी याद मुझे वो बचपन का दिन आता है,
रोम रोम है खिल जाता, मन मंद-मंद मुस्काता है।
बाईस्कोप की बात निराली सब कुछ डब्बे में आई,
लालकिला और ताजमहल संग हेमा की अंगराई।
हमे बुलाए बजा के डमरू और सुनाता गाना,
सारे बच्चे घर से भागे छोर के अपना खाना।
दस पैसे में दिखा के जाता दुनिया भर का चीज,
ज्ञान बढ़ाता दिल बहलाता अजब थी वो भी रीत।
बाद में देखो बाईस्कोप में हुआ था थोड़ा शोध,
ग्रामोफोन से बजे जब गाने, हो सच्चा सा बोध।
फिर जब छोटीसी टीवी अपने घर में आई,
लगता था यह बाईस्कोप का होगा छोटा भाई।
श्याम-श्वेत टीवी के अंदर, गोड़ी, गाने नच-नच गाती है,
बच्चों को तो छोड़, देख कर बुढ़िया भी इठलाती है।
जब कभी भी याद मुझे वो बचपन का दिन आता है,
रोम रोम है खिल जाता, मन मंद-मंद मुस्काता है।
जाड़े में हो फसल कटाई, लगे खलिहानों मे टीले,
बहे बसंती पुरवाई, ले सब अंगराई, फूल सरसों के खिले।
तब बालमन देखे उपवन, कभी दौर पड़े सखियों के संग,
कभी उछल पड़े, कभी कूद पड़े, कभी फुदक-फुदक कर नाच पड़े, गाये कभी मन से मधुर गान, कभी इधर गिरे, कभी उधर गिरे, कभी गिरते-गिरते संभल पड़े, कभी लपट पड़े, कभी झपट पड़े, कभी ठिठक-ठिठक के नाच करे, न सुर लगे, ना तल बजे, न ढ़ोल बजे, न नाल बजे, बस बालमन उल्लास करे, जैसे देवों के साथ रहे, न धन की चाह, न तन की प्यास, अरे बालमन, अरे बालमन, अरे बालमन, अरे बालमन.....
जब याद पुरानी आती है, मन विचलित सा हो जाता है,
सारी खुशियों को छोड़, मनुष्य न जाने कहाँ खो जाता है।
जब कभी भी याद मुझे वो बचपन का दिन आता है,
रोम रोम है खिल जाता, मन मंद-मंद मुस्काता है। ❖

तन्वी आहूजा
पूर्व प्रशिक्षु अधिकारी (वित्त)
एनएचपीसी लिमिटेड

शब्दों का शहर

यूं ही बैठे बैठे एक खयाल आया
शब्दों के शहर से गुज़रने का वक़्त आया,
जैसे ही मैंने अपनी यात्रा आरंभ की,
वहाँ बुत खड़े विद्वानों को देख के मैं चौंक गयी।

आकड़े तो बोल पड़े है कि आधी जनता साक्षर है।
लेकिन फिर भी, इस साक्षर समाज मे
पनपता भ्रष्टाचार का काला अक्षर है।
तरक्की कर ली इंसानों ने, ज्ञान और विज्ञान से,
भेद डाला अंतरिक्ष को भी ,रॉकेट वायुयान से,
हासिल कर लिया सब कुछ,
किन्तु, बच न सका भ्रष्टाचारी अभिमान से।

इन्हीं विचारों में मैं खोयी हुई आगे बढ़ी,
तो नज़र पड़ी, एक गरीब मजदूर पर,
जो अपनी जमीन का हिस्सा मांग रहा था।
सेठों की, जेब भरने की लालसा,
उस गरीब का सब्र लांघ रहा था।

गति की तो बात न पूछे मंगल तक यान पहुंचाया है।
लेकिन, कागज़ की एक फ़ाइल को हिलाने मे
फिर क्यों लगती गुलाबी नोटो की माया है?
यह भ्रष्टाचारी दानव, जंगल छोड़, शहरों मे मस्त है।
लूटने किसी गरीब को, यह दानव बड़ा व्यस्त है।
रोगी है ये, भ्रष्टाचार रोग से ग्रस्त है।
चरित्र के पर्दे, साफ एवं स्पष्ट है,
हवा से सरका जो पर्दा, देखा तो पूरा तंत्र ही भ्रष्ट है।

पर कभी कभी हसीं आती है समाज की ऐसी दुर्दशा पर,
चलते फिरते हैवान को देखकर, रूह कांप जाती थर थर।

उचित शासन एवं न्याय से, इस भ्रष्टाचार से लड़ जाएंगे
भ्रष्टाचार हटाओ , भ्रष्टाचार भगाओ घर-घर में यह नारा है।

भारत को भ्रष्टाचार मुक्त करना, कर्तव्य अब हमारा है।
ईमानदारी से होगा हर काम, लक्ष्य यही हमारा है।
माया की इस नागरी में, नही कोई सहारा है।
रिश्वत न लेंगे और न देंगे, यही नया जयकारा है। ❖

कमलेश कुमार
सहायक राजभाषा अधिकारी
राजभाषा विभाग, निगम मुख्यालय

स्मृति

बैशाख मास की गरम दोपहर
या ज्येष्ठ माह में तपता आँगन
सब याद आ रहा है मुझको
गोद में लेना और आलिंगन ।

काँधों पर बैठकर आपके
घूमने जाना वो मेले में
जिद पर मेरी हँसकर फिर
ले जाना बर्फ-गोले के ठेले में ।

सुबह सुबह गुड़ और सत्तू
अपने साथ खिलाते थे
साँझ पहर फिर खेतों में
हम शेष समय बिताते थे ।

थोड़ा बड़ा हुआ था जब मैं
अपने पापा पर गया है, कहा था
काश के 'बाबा' आज आप होते
देखते कितना सही कहा था ।

पापा की ही तरह मैंने पढ़कर
सरकारी नौकरी पा ली है
पर हमारे घर का आँगन अब
तुम बिन बिल्कुल खाली है।
आपके झुके हुए कंधों की
और धुंधलाती हुई आँखों की
कभी-कभी घुटनों के दर्द की
बाते हम अक्सर करते थे ।

काश थोड़ी और बात कर ली होती
काश थोड़ा और ख्याल रख लिया होता
आपने कहा तो था कि मैं चलने वाला हूँ
काश की बातों पर विश्वास कर लिया होता।

दादी का ख्याल रख रहें हैं हम सब
शायद पहले से भी ज्यादा
रोती हैं अक्सर वो कि
कर गए आप उनको आधा ।

पढ़ाई नौकरी, शहर की ये जिंदगी
कभी-कभी बहुत आगे निकल जाते हैं
प्यार करते हैं जिनको बेइन्तहा
उनसे बिना मिले ही बिछड़ जाते हैं। ❖

इश्क़ की राह

इश्क़ की राह तो चल दिये थे मगर
हो गए जाने हम कैसे फिर दर-बदर

देखकर इक तुम्हे सबको बिसरा दिया
वक्त जो था थमा उसको गुजरा दिया
बोझ यादों का ले रीत सकता था मैं
कुछ संजोया किये शेष बिखरा दिया

इश्क़ की राह तो चल दिये थे मगर
हो गए जाने हम कैसे फिर दर-बदर.....

खामोशी तुम्हारी गर यूँ ही रहेगी
बंदिशे ये समय की सुनो क्या कहेंगीं
कब तुम्हारी झलक इक नजर पायेंगे
इसी आश में पल गुजर जायेंगे

इश्क़ की राह तो चल दिये थे मगर
हो गए जाने हम कैसे फिर दर-बदर.....

बात यह भी तो थी उसकी सुनता रहा
बस उसी के सदा ख़्वाब बुनता रहा
कलियाँ खुश हो रहीं सोंच कर के यही
था भरा दिल वही वो फूल चुनता रहा

यह अचानक हुआ है किसे ये खबर
मैं तो था नासमझ तुम तो हो बेख़बर
इश्क़ की राह तो चल दिये थे मगर
हो गए जाने हम कैसे फिर दर-बदर ❖

वीरेंद्र कुमार निषाद
समूह वरिष्ठ प्रबंधक (विद्युत)
गुणवत्ता आश्वासन एंव निरीक्षण विभाग,
निगम मुख्यालय, फरीदाबाद

शांति की खोज

जिंदगी के सफर में
फुर्सत के चंद लम्हें
देती है सकून दिल को!
यायावरी के समान
भटकते मन को
चाह होती है
एक ऐसे हमसफर की
जो बांट ले
मिलकर दुःखों को।
उसे दे, सकून
कुछ क्षण के लिए
कुछ पल के लिए।
जब मिलता है
ऐसा ही कोई हमसफर
तब मिलती है
शांति सकून दिल को।
शांति की इस
मधुर बेला में,
होता है यह
लघु जीवन खुश।
मिलता है
जीवन का आनंद
दूर होता है अकेलापन।
पर फिर भी क्या?
यह शांति रहती है
चिर स्थायित्व!
पता नही ....
यह शांति
कब है चली जाती?
मानव
उसी के तलाश में
फिर से,
भटकते हैं लगता
यायावरों की तरह
बावलों की तरह! ❖

धर्मेन्द्र सिंह कुशवाहा
सहायक राजभाषा अधिकारी
किशनगंगा पावर स्टेशन, जम्मू व कश्मीर

एनएचपीसी के कर्मवीर, हम

एनएचपीसी के कर्मवीर, हम
पर्वतों में बाँध बनाते है।
शूरवीर एनएचपीसी के,हम
दुर्गमों में राह दिखाते हैं।

नामुमकिन है कभी-भी,
अपने कर्म से पीछे हटना।
लक्ष्य कठिन है, फिर भी अपने मार्ग पे आगे बढ़ना।
चाहे जितने हो व्यवधान, चाहे जितने आएं तूफान
विश्व धरा पर प्रकाश पहुँचाने का नित
करते है, नूतन अभियान।

एनएचपीसी के कर्मवीर, हम
पर्वतों पर बाँध बनातें है।
शूरवीर एनएचपीसी के, हम
दुर्गमों में राह दिखाते हैं।

देते सूखे से राहत, हम
बाढ़ रोकते हर हालत में
अनुपम प्यार इस मातृभूमि से
जिसको कहते है, सब भारत।
तमसो मा ज्योतिर्गमय का
करते रहते हम नित्यगान
ऊर्जा का करते उत्पादन
देते जग को रोशन वरदान
नित लाते जीवन में उमंग
जिससे बनता जीवन प्यारा
हर विषम परिस्थितियों में
बनते है हम सबका सहारा

एनएचपीसी के कर्मवीर, हम
पर्वतों पर बाँध बनाते है।
शूरवीर एनएचपीसी के, हम
दुर्गमों में राह दिखाते हैं।

कर्म के सिपाही हैं, हम
अपने देश पर है, अभिमान
एनएचपीसी के कर्मवीर गाते
जय जय जय मेरा देश महान। ❖

ओम प्रकाश
सेवानिवृत्त कार्यालय अधीक्षक
सलाल पावर स्टेशन, जम्मू व कश्मीर

स्वच्छ भारत अभियान

महात्मा गांधी जी ने ऐसे भारत का देखा था सपना।
आजादी पाएँगे हम सब भारतवासी, संविधान बनाएगें अपना ॥

गांधी जी ने एक स्वच्छ एवं विकसित
देश की भी की थी कल्पना।
आजादी के बाद स्वच्छ एवं विकसित
होगा समूचा भारत अपना॥

महाप्रबंधक महोदय जी की अगुवाई में,
स्वच्छ भारत अभियान चलाया।
स्वच्छता पखवाड़ा मनाएंगे हम सब
मिलकर, सब को यह समझाया॥

कर्मिकों ने सबको जागरूक किया, जगह जगह बैनर लगाया।
पीएएस वाहन लगाकर प्रचार किया, सबको संदेश पहुँचाया ॥

सार्वजनिक स्थानों पर कूड़ादानों की भी की स्थापना।
अनुरोध किया सबसे, इसमें डालो कूड़ा-कर्कट अपना ॥

सभी परिसरों के कार्यालयों द्वारा की
गई सफाई के लिए कारसेवा।
स्वच्छ रखो हर कार्यालय को, गंदगी से
बीमारियाँ होती है जानलेवा।

आवासीय कालोनी में भी चला स्वच्छता पर व्यापक अभियान।
आवासीय कालोनी में की सफाई, साफ
किया रामलीला मैदान॥

आवासीय कॉलोनी में वृक्षारोपण का सबको निर्देश दिया।
वृक्ष स्वच्छ रखते हैं जलवायु, सबको यह संदेश दिया।

जोरावर सिंह चौक में भी चला स्वच्छ भारत अभियान ।
सबने मिलकर साफ किए रियासी के चौराहे और चौगान॥

सफाई है ईश्वर प्रेम का दूसरा दर्जा
स्वच्छता का मोल बताया।
स्थानीय संघ मिलकर की सफाई,
कूड़ा कर्कट खुद उठाया ॥

पाठशालाओं के बच्चों को भाषण द्वारा
स्वच्छता पर किया प्रचार।
गर्ल्स हायर सेकेंडरी स्कूल रियासी
एवं मिडल स्कूल आधार॥

जोरावर डिस्पेंसरी के चिकित्सों दवारा
करवाई हर सफाई कर्मचारी की जाँच।
यह हैं योद्धा हमारे देश के, इन्हें कभी
भी न आए बीमारी की आँच॥

भारतीय विद्या मंदिर के विद्यार्थियों ने
नुक्कड़ नाटक भी दिखाया।
महाप्रबंधक प्रभारी महोदय जी ने प्रशंसा की,
इसे जन-जन का संदेश बताया॥

अपनी संतान को ज़ोर-ज़ोर से पुकार रही है, भारत माता।
संतान का फर्ज निभाओ सारे, स्वच्छता से जोड़ो नाता ॥

स्वच्छता की तरफ बढ़ाया गया हमारा एक कदम।
भारत हमारा स्वच्छ की ओर बढ़ेगा, गंदगी होगी वेदम ॥

सफल बनाओ स्वच्छ भारत जन अभियान।
स्वच्छ रहे, निरोग रहे, खुश रहे, हमारा हिंदोस्तान ॥

प्रण करो प्रतिदिन स्वच्छता का अभियान चलाएंगे ।
सब भारतवासी मिलकर स्वच्छ भारत बनाएँगे ॥

देश हित पैदा हुए हैं, देश सेवा करते जाएँगे ।
स्वच्छता का दान देकर, स्वच्छ भारत बनाएँगे ॥

हम सबका एक ही नारा, साफ-सुथरा हो देश हमारा ।
भारत हमारा, देश हमारा, इसे स्वच्छ रखना धर्म हमारा ॥

हारिए न हिम्मत, विसारिए न राम ।
निरंतर चलता रहे, स्वच्छता का काम ॥

क्षमा लेता हूँ सबसे, अपनी वाणी को देता हूँ विराम। ❖

कल्याण सिंह राणा
वरिष्ठ कार्यालय अधीक्षक
चमेरा-II पावर स्टेशन, हिमाचल प्रदेश

भारत को भ्रष्टाचार मुक्त बनाना है

स्वयं परिवार व समाज में देश भक्ति की भावना जगाना है।
भारत को भ्रष्टाचार मुक्त बनाना है।
बच्चों को नैतिकता का पाठ पढाना है
भारत की संस्कृति, सभ्यता व संस्कारों का परिचय कराना है
स्वयं परिवार व समाज में देश भक्ति की भावना जगाना है।
भारत को भ्रष्टाचार मुक्त बनाना है।
समाज में स्वार्थ को छोड़कर निस्वार्थ सेवा भाव जगाना है
देशहित को अपनाना है भारत को भ्रष्टाचार मुक्त बनाना है।
समाज में जाति-पांति व ऊँच-नीच के भेदभाव को भुलाना है
अमीर-गरीब की खाई को मिटाना है,
समानता का संदेश पूरे राष्ट्र में फैलाना है
भारत को भ्रष्टाचार मुक्त बनाना है।
रिश्वत व घूँसखोरी जैसी बीमारी से देश को बचाना है
स्वयं परिवार व समाज में देश भक्ति की भावना जगाना है।
भारत को भ्रष्टाचार मुक्त बनाना है।
चुनाव में योग्य, कर्मठ, निस्वार्थ, ईमानदार, समाजसेवी एवं पढ़े - लिखे उम्मीदवार का जिताना है
रिश्वत खोर, गुण्डे, स्वार्थी एवं आयोग्य उम्मीदवार को हराना है।
भारत को भ्रष्टाचार मुक्त बनाना है।
रिश्वत खोर, घूँस खोर, बलात्कारी, गुण्डे, नशा तस्करों को कड़ा से कड़ा दण्ड दिलाना है।
भारत को भ्रष्टाचार मुक्त बनाना है।
समाज में बच्चे-2 को शिक्षा का महत्व समझाना है,
हर वर्ग को शिक्षित बनाना है।
देश भक्ति व देशप्रेम की भावना को जगाना है, जाति-पाति व धर्म से ऊपर उठकर साम्प्रदायिक्ता का पाठ पढ़ाना है।
स्वयं परिवार व समाज में देश भक्ति की भावना जगाना है।
भारत को भ्रष्टाचार मुक्त बनाना है।
जब हर घर हर परिवार में नैतिकता का पाठ पढ़ाया जायेगा,
नई पीढ़ी को संस्कारों का अनुसरण कराया जायेगा।
तब समाज में चरित्र ईमान एवं स्वभिमान का सपना संजोया जायेगा।
भूख नहीं, लूट नहीं, औरों के हक खा जाने की बदनीयित नहीं।
हर बेरोजगार रोजगार पायेगा, हर हाथ को काम मिल जायेगा।
सबको रोटी, कपड़ा और मकान मिल जायेगा।
पैसे के आगे जब ईमान नहीं बिक पायेगा ।
तब हर घर नारी को सम्मान मिल जायेगा ।
जब पूरा समाज देशभक्ति व देशप्रेम की भावना से रम जायगा।
तब हर नागरिक निष्ठा एवं ईमानदारी से अपना कर्तव्य निभायेगा।
अब हर घर में तिरंगा लहरायेगा।
अब हर घर में तिरंगा लहरायेगा।
जब भारत भ्रष्टाचार मुक्त हो जायेगा।
फिर से सोने कि चिड़िया कहलायेगा।
तब पूरे विश्व में भारत का परचम लहरायेगा।
फिर मेरा भारत विश्वगुरू बन जायेगा। ❖

पवन सिंह राणा
वरि. कार्यालय अधीक्षक
चमेरा-।। पावर स्टेशन, हिमाचल प्रदेश

मैं क्या करूं

दिल का जो आईना है आँखों की
गुस्ताखियों को कहता है मैं क्या करूं,

नासमझ के प्यार का इल्ज़ाम लेकर
फिर से मदहोशियों का मैं क्या करूं?

मैं किसी को भूल जाऊं पर
इस भूल का अंजाम लेकर क्या करूं,
मैं किसी भूले हुए का नाम लेकर
खुशियां मनाऊँ उसका क्या करूं?

अब हवाएं उनका हाल बताती हैं
हाल जान कर मैं क्या करूं,
उन पुरानी यादों का जाम लेकर
कोई मुझे पिलाए मैं क्या करूं?

आईना मुझे देखकर हंसता है
क्या था क्या हो गया मैं क्या करूं,
एहसास, एहसान, खुदी सब-कुछ
तबाही की ओर हैं मैं क्या करूं?

हुस्न बदनाम होता है
इश्क़ को पूछता नहीं कोई मैं क्या करूं,
आँखें जो मिली हैं दिल से दिल
हम-कलाम होता है मैं क्या करूं?

जज्बे, एहसास, शिद्दत और सच्चाई
अब नहीं आ रही रास मैं क्या करूं,
सोचता हूं कहीं बेवफा तो नहीं हो गया
सहम सा जाता हूँ मैं क्या करूं?

कम गलत कौन है कोई पूरा गलत नहीं होता
यह सत्य है मैं क्या करूं,
दृढ़ निश्चय से हर मुश्किल तो पार की थी
फिर उलझ गया मैं क्या करूं?

इसी सोच के साथ जिन्दगी मेरी तमाम हो रही है
सोच में हूँ मैं क्या करूं,
तू ही बता ऐ 'वक्त'
मैं इस उधेड़-बुन में गलत कर रहा हूँ
मैं क्या करूं?

नागपाल कन्डवाल
वरिष्ठ कार्यालय अधीक्षक
पार्बती-।। जलविद्युत परियोजना, हिमाचल प्रदेश

पार्वती परियोजना में भू-अर्जन विभाग हमारा

पार्वती परियोजना में भू-अर्जन विभाग हमारा,
जो रखता है भूमि का रिकॉर्ड सारा
234 हेक्टेयर निजी, सरकारी और वन भूमि है पाई
जो परियोजना को सुचारु रूप से चलाने में काम है आई

2250 से फोन की घंटी है आई
परियोजना प्रभावितों ने मिलने की बात है बताई
परियोजना प्रभावितों ने मिलकर समस्या है सुनाई
विभाग के अधिकारियों, कर्मचारियों ने उनकी समस्या है सुलझाई

भूमि विवाद संबधी कार्य बहुत जटिल हमारा
फिर भी भू-अर्जन विभाग मिलकर कर रहा है समस्या का निपटारा

कोर्ट केस भी बहुत हैं आते
विधि विभाग से मिलकर उन्हें हैं निपटाते

अतिक्रमण करके लोगों ने किया है परेशान
कब्जे हटाने में भू-अर्जन विभाग ने लगा दी पूरी जान
भू-अर्जन विभाग अन्य कार्यों का भी कर रहा है निपटान
250 से अधिक जीविकोपार्जन केसों को निपटा कर
बनाई है अपनी एक पहचान

भू- अर्जन विभाग कर रहा नियत नए रिकॉर्ड स्थापित
जीविकोपार्जन स्कीम को लागू करने में लगा दी है पूरी ताकत
एनएचपीसी ने सीएसआर और लाडा तहत विकास की अलख है जगाई
जो परियोजना प्रभावित इलाक़ों के विकास में बहुत काम है आई
जीविकोपार्जन स्कीम को सफलतापूर्वक लागू करके
एनएचपीसी की बड़ी जिम्मेदारी है घटाई
भू- मालिकों को घर बैठे ही रोजगार के बदले
जीविकोपार्जन सहायता राशि है पहुंचाई।

पार्बती परियोजना का भू-अर्जन विभाग हमारा
जो रखता है भूमि का रिकॉर्ड सारा। ❖

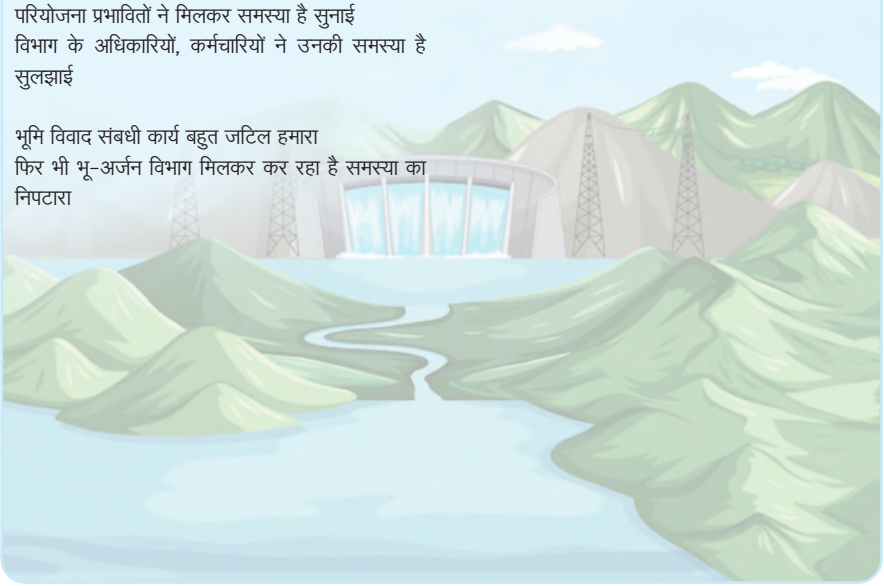

देवेंद्र कौर
वरिष्ठ सुपरवाइज़र (हॉस्पिटल)
पार्बती-।।पावर स्टेशन, हिमाचल प्रदेश

भ्रष्टाचार का विरोध करें, राष्ट्र के प्रति समर्पित रहें।

डर-डर कर अब नहीं है रहना, भ्रष्टाचार का अंत है करना।
खुद से संकल्प है लेना, भ्रष्टाचार की लहर में नहीं है बहना
अनुशासन में, हर नियम एवं कानून को अपना फर्ज निभाना है।
बच्चों को भी देकर नैतिक मूल्य एक अच्छा नागरिक बनाना है।
जिससे वो आगे बढ़कर भ्रष्टाचार रूपी राक्षस को पहचान सकें।
और उसके सर्वनाश को सदैव ही तैयार रह सकें।
पर अब मैंने तो अपने मन में यह ठान लिया है।
करना है हर बुराई का सामना डटकर, पीछे नहीं अब हटना है
ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है, बस इसको ही अपनाना है।
हिंसा, नफरत, बैर-भाव को भुलाकर, प्यार से ही सबको जीतना है
भ्रष्टाचार है फैला चारों तरफ, है आतंक का साया
बेटी–बहू न माता कोई सुरक्षित इस समाज में,
इन सब को भी तो इंसाफ दिलाना है।
हर बच्ची, हर बेटी निकल सके अब
घर से बेखौफ और चले सिर उठाकर।
होगा नहीं कुछ गलत अब इन सबके साथ,
इसका भी तो विश्वास दिलाना है।
समय पर टैक्स चुकाकर अपना कर्तव्य निभाएँगे,
मेहनत और ईमानदारी से करें तरक्की और आगे बढ़ते जायेंगे।
सोच बदलें हम सब मिलकर, तभी तो समाज को बदल पायेंगे।
न हो ईर्ष्या–जलन किसी की बड़ी गाड़ी और बड़ी कोठी से
अपनी मेहनत से जो मिल जाए, संतुष्ट उसी में रहना है।
सादा जीवन उच्च विचार को अपनाकर, अपना जीवन जीना है।
बच्चों में भी अच्छे संस्कार भरना, हमारी ही तो जिम्मेदारी है।
ये ही तो आने वाला सुंदर भविष्य हमारा है।
जो बोएँगे वही काटेंगे, फिर क्यों न अच्छी फसल उगाएँ।
घर हो या देश हमारा सबमें स्वस्थ वातावरण बनाएँगे।
उज्ज्वल भविष्य हो देश का मिलकर कदम उठाएँगे।
राष्ट्र के सुंदर स्वरूप को हम सब मिलकर और सजाएंगे,
देकर अपना सर्वस्व इसकी शान बढ़ाएंगे।
डर-डर कर अब नहीं है रहना, भ्रष्टाचार का अंत है करना। ❖

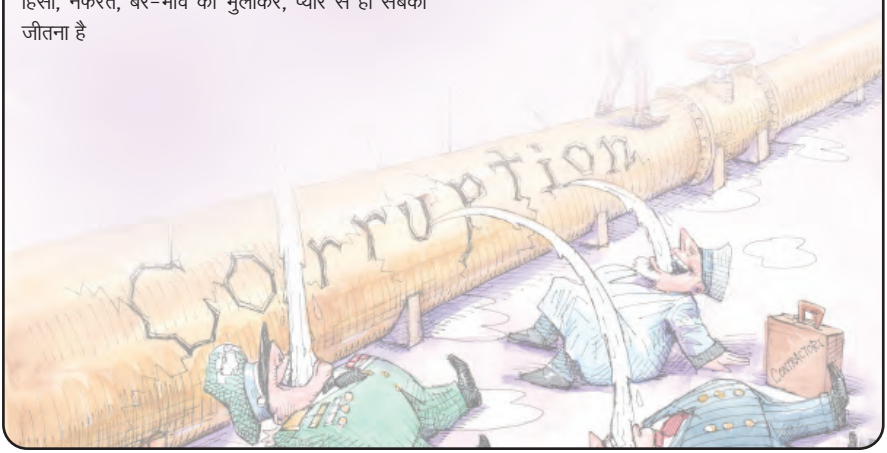

शिव कुमार राम
कनिष्ठ अभियंता (सिविल)
सलाल पावर स्टेशन, जम्मू व कश्मीर

हिंदी भाषा का मान

हम हिंदी भाषी गर्वित हैं, अभिमान हमारी हम भाषा का,
नहीं विचारों तक ला पाये, पहचान हमारी भाषा का,
तो किन बातों का गौरव है, हम पाण्डव भी, हम कौरव हैं,
निजी अवसर पर लूट रहे, सम्मान हमारी भाषा का।

देखा हिंदी, सोचा हिंदी, कहने की बात 'कहा हिंदी',
है गुणी कोटि और शौर्य प्रवीण, महसूस किया परिभाषा को,
धरा से उठकर गगन तक, क्षीर से चलकर पवन तक,
मातृभाषा जो मातृ तुल्य है, महसूस किया मर्यादा को ।

यह मर्यादा जो मर्यादित है, ओजस्वी और दरियादिल है,
है मस्तक का यह तेज कुशल, वक्ष की चौड़ी धारी है,'
हृदय का शीतल अनुभव है, क्रांति की सन्मुख है ज्वाला,
है कुटिल को तीखा थप्पड़ यह, यह न्याय प्रिय अधिकारी है।

सुता संस्कृत, प्राकृत भ्राता, पाली के अस्तित्व की भाषा, है
जन्म भारती कर्म भारती, भारत में जन्मी भाषा है,
अपभ्रंश, अवधी और ब्रजभाषा, से पारिवारिक सा नाता है,
रहे शिखर परम भारती यह, यह भाषा की अभिलाषा है।

बच्चन की मधुशाला में,
दिनकर की जलती ज्वाला में,
रश्मिरथी के पन्नों में,
उर्वशी के उछले शब्दों में,
वर्मा की दीपशिखा बनके,
पल्लव पंत की वीणा तनके,
तुलसी के विनय पत्रिका में,
मास पथिक त्रिपाठी का,
हुंकार निराला की होकर,
वृद्ध की चलती लाठी हूँ,
अयोध्या की वैदेही वनवासी हूँ, हाँ गर्व से हिंदी भाषी हूँ।
सरावली सूरदास की,
अभिज्ञान कालिदास की,
मालिक आखिरी सलाम मैं,
भाषा का अचूक कलाम मैं,
नीरजा, रस्मी वर्मा की,
युद्ध शांति कर्मा की,
कामायनी के स्वरों की ज्योति,
सुभद्रा जी के बिखरे मोती,
धर्मवीर का अंधा युग,
गोदान की मीठी भाषा हूँ,
उठे गगन तक धरा चूम के,
मै काशी हूँ अभिलाषी हूँ,
हाँ गर्व से हिंदीभाषी हूँ। ❖

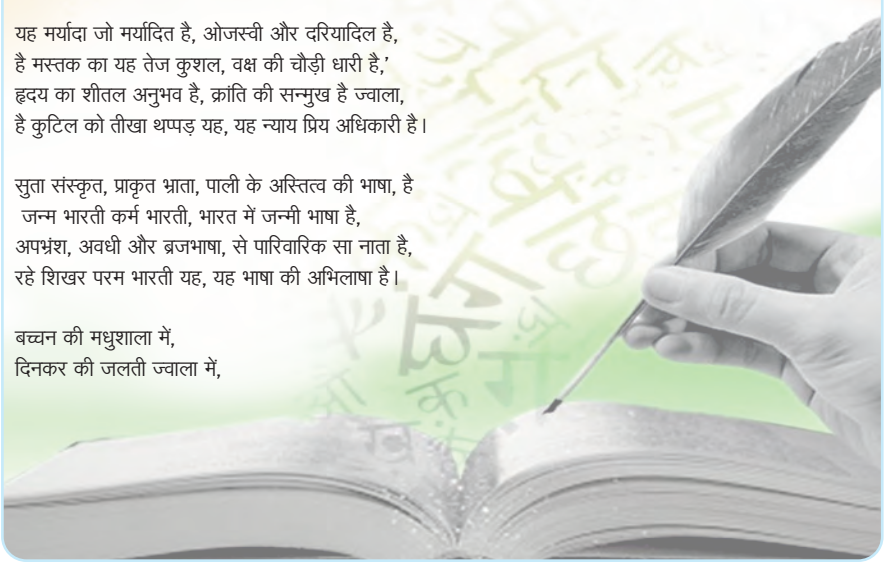

राम अनुज
कनिष्ठ अभियंता (विद्युत)
सुबनसिरी अपर जलविद्युत परियोजना, असम

जाति-प्रथा ...एक अभिशाप

सूरज की किरणों में सने दृगबिंदु को हम क्या कहें?
कह दें सजल ये नेत्र हैं... भावुक हैं या भयभीत हैं!
भूख है इक हाथ में, इक हाथ में लज्जा लिए;
अभिव्यक्ति पर बंधन लगे तो हार है.. या जीत है?
कैसे रहें ख़ामोश हम, जब द्वंद्व अन्तर्मन का है;
ये फासला मिट्टी का है? या फासला चन्दन का है!
ये क्षीणबुद्धि की रस्म सदियों से अपनाती रही;
बस जान जाती ही रही, ये जाति है .. जाती नहीं!!
कहने को सब कहते रहे, हम एक हैं.. हम नेक हैं।
छुपते छुपाते दिख गए, चेहरे मगर अनेक हैं।।
जाते हैं हम उनके यहां, दुनियां जिन्हें ठुकरा गई।
ये उनका शब्द की ताकत ही तो जाति-प्रथा दर्शा गई!!
है एक लहू, है एक हवा, है एक नीर..धरती ये जहां !
जब एक धर्म मानवता का, फिर अनुज जातिगत बाध्य कहाँ?
हम एक तिरंगे के नीचे मिलकर जन गण मन गाते हैं;
हिंदु मुस्लिम सिख ईसाई, सबको भाई ठहराते हैं।
हम ऐसे देश में रहते हैं.. जिसने सतीत्व का बल झाँका।
अबलाओं ने लहरा परचम, ख़ुद को न किसी से कम आंका।।
है एक त्रासदी यह भी तो, अपनी क्षमता से कम जीना;
ये छुआछूत, जाति - बन्धन का जहर रोज घुट-घुट पीना।।
आओ हम सब संकल्पित होकर, एक राष्ट्र निर्माण करें;
इस भूलभुलैया से हटकर, मानवता का सम्मान करें ।। ❖

एनएचपीसी आत्म निर्भरता का लक्ष्य

हम हैं भविष्य नवभारत के, हम ग्रीन एनर्जी वाले हैं ।
हम लाखों दिल में दीपक के, तमनाशक स्वच्छ उजाले हैं।।

हम मातृ धरा का आदि - कवच, एनवायरमेंट बचाते हैं;
हम पत्थर में भी रोजगार के अवसर खोज दिखाते हैं।।

जब नदियों के जज्बात बाढ़ बन, जनमानस को सताते हैं;
जब सूखी बंजर धरती पर दृग बिंदु पहुँच ना पाते हैं।।

तो इन नदियों के अहंकार हम बांध बनाकर चखते हैं;
यूं छोटी-मोटी चुनौतियां हम बायीं जेब में रखते हैं ।।

एनएचपीसी का एक लक्ष्य आत्मनिर्भर बन जाना है।
यह हरित एनर्जी कायम कर एनवायरमेंट बचाना है ।।

पॉल्यूशन का नाम नहीं, रोशन हर घर हर बस्ती हो ।
पार्बती, चमेरा, कमला हो, चाहे सलाल दुलहस्ती हो ।।

हम भारत के घर-घर में खुशियों के दीप जलाते हैं ।
बहती नदियों की धार रोक, उन तक बिजली पहुँचाते हैं ।।

कल्याण की चाहत मन में रख, और कर्मठता का खून भरा ।।
सांसों में ईमानदारी है, नस-नस में गजब जुनून भरा ।।

हर एक कर्मचारी का दिल भारत के लिए धड़कता है ।
एनएचपीसी का भाग समझ गर्वित हर शीश फड़कता है ।। ❖

अमन रस्तोगी
पर्यवेक्षक (आईटी)
क्षेत्रीय कार्यालय, ईटानगर, अरूणाचल प्रदेश

डिजिटल क्रांति

आओ चलें एक नई दुनिया में, जहाँ
डिजिटल की लहर लहराए
बाइट्स और स्ट्रीम की दुनिया में, हम
डिजिटल सपनों का मार्ग बनाये।

बिट्स और बाइट्स का ज्ञान, अंतहीन
डिजिटल ऊंचाईयों को खोलता है
जहाँ डेटा बिजली की गति से बहता है, हर
डिजिटल जरूरत को पूरा करता है।

समय की रफ्तार में, हम डिजिटली बढ़ते हैं,
संचार के साधनों से, सभी काम अब सरल होते हैं।

तो चलो इस नए युग का स्वागत करें।
डिजिटल क्रांति की राह पर, आगे बढ़ते जाएं।

❖

राहुल सिंह
कनिष्ठ अभियंता (विद्युत)
क्षेत्रीय कार्यालय, ईटानगर, अरूणाचल प्रदेश

प्राकृतिक स्रोतों से ऊर्जा का महत्व

जल के पानी से नदियों की धारा से,
बना रहे बिजली हम पर्यावरण की खुशहाली से।

नदियों की लहरों से उठते उत्साह के स्वर,
ला रहे हैं धरती पर एक नयी ऊर्जा का सवेरा।

पहाड़ों के सूर्य उदय में बसी शांति,
देती मन को अद्भुद अहसास।

प्राकृतिक स्रोतों जन्मी ये विद्युत धारा,
ला रही है दुनिया में एक नया उजाला।

बिजली के धुंधले रास्तों से बनता है सपनों का रंग,
इंजीनियरिंग की धुंध से बनता है सपनों का खंड

❖

विष्णु गुप्ता
कनिष्ठ अभियंता (विद्युत)
धौलीगंगा पॉवर स्टेशन, उत्तराखंड

वंदनीय प्रभु

बहुत हैं इंसान
प्रभु तेरे इस संसार में... ...
एक भी नहीं पर तेरे जैसा कोई
ढेरों के इस किरदार में!
हर कमजोर दुखी ही बिलख रहा
एक भी नहीं समृद्ध अपने ईमान में!

प्रभु इंसान तो हैं बहुत
तेरे इस संसार में !!

पुण्य की करनी, मानवता की धरिणी
बड़ी-बड़ी बातें ख़ालिस हर जुबान पे
एक भी किंतु बोल नहीं पाता भाई
किसी भी ग़रीब-दुखियारे को सम्मान से!

प्रभु इंसान तो हैं बहुत
तेरे इस संसार में !!

कातर अपना रूप दिखाओ
एका का अलख जगा तुम छाओ
कुछ तो अपना असर दिखाओ
वंदनीय तुम ही इस बाजार में!

प्रभु इंसान तो बहुत हैं
तेरे इस संसार में !!

राधा मेहता
पर्यवेक्षक (ए.एन.एम.)
धौलीगंगा पॉवर स्टेशन, उत्तराखंड

बस एक कदम और...

बस एक कदम और इस बार किनारा होगा
बस एक नजर और इस बार इशारा होगा
अंबर नीचे उस बदली के पीछे कोई तो होगी किरण
इस अंधकार से लड़ने को कोई तो सहारा होगा
बस एक पहर और इस बार उजाला होगा...
बस एक कदम और इस बार किनारा होगा!

जो लक्ष्य को भेदे वो तीर कहीं तो होगा
इस तपती भूमि में कहीं तो नीर होगा
बस एक प्रयास और अब लक्ष्य हमारा होगा...
बस एक कदम और इस बार किनारा होगा!

जो मंजिल तक पहुँचे वो कोई तो राह होगी
अपने मन को टटोलो कोई तो चाह होगी
जो मंजिल तक पहुँचे वो कदम हमारा होगा
बस एक कदम और इस बार किनारा होगा...
बस एक नजर और इस बार इशारा होगा!

गिरधारी राय
कनिष्ठ अभियंता (यांत्रिक)
धौलीगंगा पॉवर स्टेशन, उत्तराखंड

चला था... जानकर एक रास्ता...

चला था मैं जानकर एक रास्ता,
हो गए दो क्या हुआ ये वास्ता।

दूरियों का बोझ कुछ ऐसा,
जैसे साथ नहीं हूँ मैं खुद के...

चला था मैं जानकर एक रास्ता,
हो गए दो क्या हुआ ये वास्ता।

अब तो रह-रह कट रही हैं साँसें
जिंदगी हुई जैसे बस तेरी यादें...

चला था मैं जानकर एक रास्ता,
हो गए दो क्या हुआ ये वास्ता।

तेरी यादों से ही सजा है हर स्वप्न
जीता हूँ कि इस तन में तेरा मन

चला था मैं जानकर एक रास्ता,
हो गए दो क्या हुआ ये वास्ता।

आदित्य बिष्ट
वरिष्ठ लेखाकार
धौलीगंगा पॉवर स्टेशन, उत्तराखंड

बात तो नहीं होती...

उससे तो बात नहीं होती
पर उसके बारे में होती है
ज़िंदगी तो हर बार उसके
बुलाने के इशारे में होती है

उसकी आँखों का जादू
मुझे लुभाता हर बार
मेरे दिन और रात जैसे
सब हैं उसका ही प्यार

उससे तो बात नहीं होती... ...!

उसके प्यार का साया
मेरे दिल को छू जाता है
जैसे किसी खुशबू का असर
फूलों को भटका जाता है

उससे तो बात नहीं होती... ...!

बस सच्चा सा प्यार है ये
जो दिल को छू जाता है
हर लम्हे में उसे चाहना ही
मेरे सपनों को सजाता है

उससे तो बात नहीं होती... ...!

आशीष आनन्द आर्य
हिंदी अनुवादक
धौलीगंगा पावर स्टेशन, उत्तराखंड

तुम संग ख़ुशी... !

पूरे दिन की सिरदर्दी बाद
चाय और बिस्कुट की शाम!
संग तुम्हारे बैठ बतियातीं
मुझसे मेरी ख्वाहिशें तमाम!

उँगलियों की अठखेलियों से
माथे की तह में पलता सुकून,
दिनभर कैसे चलीं दूरियाँ
सोचता मैं तुमसे ज्यादा हैराँ!

खनखनाती खुश कलाइयों के
प्यार की कैद में यूँ महफूज़...
होठों पर गुनगुनी सी चुस्की
आँखों में खूब ढेर इत्मीनान!

रूपये के रिवाज से मन गुस्सा
ये रोज-रोज का कैसा काम?
ज़रा मुहब्बत में ढाल दो साँसें
एक मुस्कराहट में सब ईनाम!

सुबह रोशनी के रंग संग उम्दा
शाम चंदा के ओढ़ लिबास
खनखन चूड़ियाँ घोलें यूँ ख़ुशी
प्याली के आशिक़ रहीम औ राम!

ज़िन्दगी भर ये तमाम तकलीफें
सारे तंगहाल बंदोबस्त दरम्यान...
तरतीबों पर बड़ी माहिर म्यान
तुम, चाय और बिस्कुट की शाम! ❖

कौन जोड़ेगा अनुराग?

बड़ी जंग लड़ी जब देश ने
साथी बने हमारे
वे हर वेश में...
पर... समाज के चुने रंगों कारण
रहे वंचित सदियों तक
देश-समृद्धि के अभिन्न अंग के परिवेश से...

सदा हमारे जीवन के
राग बुना करते थे
जिनकी खुद की जिंदगी के त्याग...
तकनीक के संवर्धन के इस नवयुग में
हम नहीं
तो फिर कौन जोड़ेगा उनसे अनुराग?

युग-परिवर्तन के इस पथ पर
वक्त
मांग रहा हमसे हमारा साथ,
हमारे
देशवासियों की तरक्की
पूर्णतया समेकित विकास...

समृद्ध भारत का राग
सकल समाज
हमारे अपनों का विश्वास..
चलें, मिटायें हर अधूरापन
संतुलित भारत में जागे
समृद्ध होने की प्यास... ...! ❖

गर्व के आँसू

सुनिता राम
पूर्व कर्मचारी, एनएचपीसी लिमिटेड

भर आई आँखें
तो रो नहीं सकता,
और जो रो पड़ूँ
तो सैनिक मैं हो नहीं सकता!

कदमों तले बर्फ तूफानी होती है
रेत को बस चमड़ी जलानी होती है
हर हाल में जिंदा रहना होता है
कि माँ के चरणों में जवानी होती है
पल पल सीमा का प्रहरी होता हूँ
जहाँ जीना ही असल कहानी होती है!

कि सच्ची... भर आयें आँखें... तो...!
निशि दिन प्रीत की उलझन बोता हूँ
पीड़ा भर-भर रीत का बंधन ढोता हूँ
वह कल-कल छल-छल रोती है
मैं चुप्पी का बहता सोता होता हूं
भर-भर भीगी परिवार की आँखें ही
कह रही मेरी जिंदगानी होती है!
सच्ची-मुच्ची... भर आयें आँखें... तो...!

दर्द बढ़ाते राहों में
चाहे जितने भी मुश्किल रोड़े आएं
खुद पत्थर बन हर मुसीबत के आगे
मैं थम कर बिल्कुल टिक जाता हूँ
तभी तो सीमा का सैनिक मैं कहलाता हूँ
हर पल पर बड़े दम से कहलाता हूं
सच्ची-मुच्ची... भर आई आँखें... तो...!
और फिर जब भी गांवों में
बच्चा-बच्चा तिरंगा फहराता है
विजय-पताका तले जो मैं होता हूँ
स्वर अनुनादित अचंभित कर जाता है
पल भर में वतन की मिट्टी पर
गर्व के अदम्य पल जी जाता हूँ!
सच्ची-मुच्ची... भर आई आँखें... तो...!

❖

हर बात तुमसे

दिन भी तुमसे, रात भी तुमसे,
बिन बात की हर बात भी तुमसे।
शब्द भी तुमसे, अर्थ भी तुमसे,
हर प्रश्नों का हल भी तुमसे।
रूठती भी तुमसे मानती भी तुमसे,
उदास होठों पर आती मुस्कान भी तुमसे।
जीवन की बगिया गुलजार भी तुमसे,
दूर हो तो विरान भी तुमसे।
सांसों की ये डोर भी तुमसे,
जीवन की हर छोर भी तुमसे।।

❖

श्रुति सिन्हा
हिंदी अनुवादक
पार्बती-।।पावर स्टेशन, हिमाचल प्रदेश

ख़ामोशी

पाब्लो नेरुदा की 'Keeping quiet' का हिंदी अनुवाद-

अब हम बारह तक गिनेंगे
फिर सब स्थिर हो जायेगा
एक बार के लिए ही सही
इस धरती पर,
किसी भी भाषा में-
कोई हलचल नहीं होगी
बिना कोई हरकत किए
क्षणिक शांति से ही
यह पल कितना सुहावना होगा..
बिना किसी भागदौड़ और शोरगुल के
फिर भी,
हम सभी साथ रहेंगे
एक अजनबियत की चादर ओढ़े
समुद्र की उष्णता में खड़े होकर,
मछुआरे मछलियों को चोटिल नही करेंगे
और नमक इकट्ठा करने वाले आदमी
अपने गले हुए हाथों को और नहीं गलायेंगे..
युद्ध की भीषणता और तपन के साथ
जो पर्यावरण के ह्रास की योजना बनाते है
और एक ऐसी जीत की कामना करते है..
जिसमें कोई जीवित नहीं बचता है।
वे चलते है अपने भाई-बंधु के कदमताल में
स्वच्छता का चोगा पहनकर
जैसे - चलती है 'परछाई'
जो होती क्रियाविहीन है स्वयं की आकांक्षाओ को लेकर,
मुझे वास्तव में चाहिए क्या?
मुझे कभी संदेह नहीं रहा
जीवन क्या है? के बारे में समग्रता से जानना है
मैं जीवन को मौत के साथ
नहीं देखता हूँ
यदि हम एकनिष्ठ नहीं हुए तो,
और अपनी जैविक क्रियाओं के प्रति सजग नही हुए तो,
एक बार के लिए अगर कुछ नहीं करते है तो
तब एक विराट ख़ामोशी होगी।
जो दुःख के उफान को रोक सकेगी
स्वयं को न समझने वाले खुद को मौत के भय से डराकर जीते है
हमें धरती क्या सिखाती है?
यही कि- जब सब कुछ समाप्त हो जाता है
तब भी जीवन की प्रमाणिकता बनी रहती है
अब मैं बारह तक गिनती गाऊँगा
तुम खामोश रहना,
और फिर, मैं चला जाऊंगा। ❖

कलम का काफ़िला

सरस सरल नहीं है
किसी को कलम पकड़ाना
यदि होता तो
पढ़ते-पाठ मनुष्यता का
सुन्दर सुखमय संसार बनता
नहीं जाती जवानों की जान..
नहीं मचता क़त्ल-ए-कोहराम..
फिर भी,
कलम का काफ़िला..
रुकेगा नहीं..
भले ही,
संकट आये अभिव्यक्ति पर
कलम की काली स्याही से सना पन्ना
जिसमें रक्त की रंगीन रेखाएं
से लिखा होता
धर्म के नाम पर मत काँटों इंसान को। ❖

पंकज गुप्ता
महाप्रबंधक (विद्युत)
एसबीडीसी विभाग, निगम मुख्यालय, फरीदाबाद

पहाड़

पहाड़ पराये हो गए
इनकी ओट में चाँद को छिपते देखकर,
और इनके पीछे से सूरज को निकलते देखकर,
कभी होती थी दिन की शुरुआत,
पर यूँ लगता है आज, पहाड़ पराये हो गए।

इनकी ठंडी छाँव कभी सुकून दिलाती थी,
गिरते पत्थरों की आवाज़ कभी डरा जाती थी,
नदी नालों की इनसे होती थी शुरुआत,
पर यूँ लगता है आज, पहाड़ पराये हो गए।

इनकी ऊंची चोटियां इनकी गहरी वादियां,
इनके डगमगाते हुए वो टेढ़े मेढ़े रास्ते,
ड्राइविंग की जिनपर कभी की थी शुरुआत,
पर यूँ लगता है आज, पहाड़ पराये हो गए।

जब मित्र और संबंधी घूमने का बनाते थे मन,
उनके उल्लास को देखकर कितने खुश हो जाते थे हम,
सबकी पिकनिक की होती थी अपने घर से ही शुरुआत,
पर यूँ लगता है आज, पहाड़ पराये हो गए।

त्योहारों के मौसम में इनका रूप और खिल जाता था,
नित लगते जयकारों का सुर देव भूमि से दर्शन कराता था,
अनेकों तीर्थो की इनसे होती थी शुरुआत,
पर यूँ लगता है आज, पहाड़ पराये हो गए।

इन्हीं के नजदीक रहकर होता था घर का एहसास,
लगता था ऐसे कि कभी ना छूटेगा ये साथ,
इनकी गोद में ही की थी जीवन की शुरुआत,
पर यूँ लगता है आज, पहाड़ पराये हो गए।
पहाड़ पराये हो गए। ❖

सिन्हा पवन अमरेन्द्र
कनिष्ठ अभियन्ता (ईएण्डसी)
क्षेत्रीय कार्यालय, ईटानगर

मैं एनएचपीसी लिमिटेड

नये युग की नयी खोज में एनएचपीसी लिमिटेड,
नवीकरण उर्जा का स्रोत्त में एनएचपीसी लिमिटेड
नये भारत की नयी पहचान में एनएचपीसी लिमिटेड,
मुश्किलों में भी बांध बनाता में एनएचपीसी लिमिटेड

प्रकृति को ख़ुशहाल बनाता में एनएचपीसी लिमिटेड
पहाड़ों और नदियों से नाता रखता में एनएचपीसी लिमिटेड
लोगों के जीवन में खुशहाली लाता में एनएचपीसी लिमिटेड,
भारत में एक नया उजाला लाता में एनएचपीसी लिमिटेड

दुनिया का उभरता सितारा में एनएचपीसी लिमिटेड,
प्रकृति का मित्र में एनएचपीसी लिमिटेड
जलविद्युत क्षेत्र की नयी पहचान में एनएचपीसी लिमिटेड,
भारत जलविद्युत का सबसे बड़ा,
उद्यम में एनएचपीसी लिमिटेड ❖

हरि ओम शुक्ल
प्रबंधक (राजभाषा)
राजभाषा विभाग, निगम मुख्यालय, फरीदाबाद

जीवन का आधार है हिंदी

सरल है सुबोध है, उल्लास है हिंदी।
प्यार से बांध ले वो, मिठास है हिंदी।

भाव, शैली शब्दों का भण्डार है हिंदी।
जन-जन की अभिव्यक्ति उद्‌गार है हिंदी।

पिता की स्नेहिल डांट बहन का प्यार है हिंदी।
मां की ममता, वात्सल्य और दुलार है हिंदी।

हिंदी से हिंद बना, हिन्दोस्तान है हिंदी।
संस्कृति और परम्परा का विस्तार है हिंदी।

बुजुर्गों का अनुभव, आशीर्वाद, सलाह है हिंदी।
बच्चों की अठखेलियों का आधार है हिंदी।

सरसों के फूल, फागुन गीत, बसंत बहार है हिंदी।
सावन के झूले, तीज, पर्व, त्यौहार है हिंदी।

मंदिर की घंटी, माघ का नहान है हिंदी।
गीता का सार, मंत्रोंच्चार, मंगलाचार है हिंदी।
"जीवन का आधार है हिंदी" ❖

राजभाषा से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य

संघ की भाषा

- अनुच्छेद 120. संसद में प्रयोग की जाने वाली भाषा – (1) भाग 17 में किसी बात के होते हुए भी, किंतु अनुच्छेद 348 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, संसद् में कार्य हिंदी में या अंग्रेजी में किया जाएगा।
- अनुच्छेद 210: विधान – मंडल में प्रयोग की जाने वाली भाषा– (1) भाग 17 में किसी बात के होते हुए भी, किंतु अनुच्छेद 348 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, राज्य के विधान–मंडल में कार्य राज्य की राजभाषा या राजभाषाओं में या हिंदी में या अंग्रेजी में किया जाएगा।
- अनुच्छेद 343. संघ की राजभाषा– (1) संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी, संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा।
- अनुच्छेद 344. राजभाषा के संबंध में आयोग और संसद की समिति– राष्ट्रपति, इस संविधान के प्रारंभ से पांच वर्ष की समाप्ति पर और तत्पश्चात् ऐसे प्रारंभ से दस वर्ष की समाप्ति पर, आदेश द्वारा, एक आयोग गठित करेगा जो एक अध्यक्ष और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट विभिन्न भाषाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले ऐसे अन्य सदस्यों से मिलकर बनेगा जिनको राष्ट्रपति नियुक्त करे और आदेश में आयोग द्वारा अनुसरण की जाने वाली प्रक्रिया परिनिश्चित की जाएगी।

प्रादेशिक भाषाएं

- अनुच्छेद 345. राज्य की राजभाषा या राजभाषाएं– अनुच्छेद 346 और अनुच्छेद 347 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, किसी राज्य का विधान–मंडल, विधि द्वारा, उस राज्य में प्रयोग होने वाली भाषाओं में से किसी एक या अधिक भाषाओं को या हिंदी को उस राज्य के सभी या किन्हीं शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा या भाषाओं के रूप में अंगीकार कर सकेगा।
- अनुच्छेद 346. एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच या किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा सघ में शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग किए जाने के लिए तत्समय प्राधिकृत भाषा, एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच तथा किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा होगी। परंतु यदि दो या अधिक राज्य यह करार करते हैं कि उन राज्यों के बीच पत्रादि की राजभाषा हिंदी भाषा होगी तो ऐसे पत्रादि के लिए उस भाषा का प्रयोग किया जा सकेगा।
- अनुच्छेद 347. किसी राज्य की जनसंख्या के किसी भाग द्वारा बोली जाने वाली भाषा के संबंध में विशेष उपबंध।

उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालयों आदि की भाषा

अनुच्छेद 348. उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों में और अधिनियमों, विधेयकों आदि के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा

इस भाग के पूर्वगामी उपबंधों में किसी बात के होते हुए भी, जब तक संसद विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करे तब तक (क) उच्चतम न्यायालय और प्रत्येक उच्च न्यायालय में सभी कार्यवाहियां अंग्रेजी भाषा में होंगी। (ख) (i) संसद् के प्रत्येक सदन या किसी राज्य के विधान-मंडल के सदन या प्रत्येक सदन में पुरःस्थापित किए जाने वाले सभी विधेयकों या प्रस्तावित किए जाने वाले उनके संशोधनों के (ii) संसद या किसी राज्य के विधान-मंडल द्वारा पारित सभी अधिनियमों के और राष्ट्रपति या किसी राज्य के राज्यपाल द्वारा प्रख्यापित सभी अध्यादेशों के और (iii) इस संविधान के अधीन अथवा संसद या किसी राज्य के विधान-मंडल द्वारा बनाई गई किसी विधि के अधीन निकाले गए या बनाए गए सभी आदेशों, नियमों, विनियमों और उपविधियों के, प्राधिकृत पाठ अंग्रेजी भाषा में होंगे।

- खंड (1) के उपखंड (क) में किसी बात के होते हुए भी, किसी राज्य का राज्यपाल राष्ट्रपति की पूर्व सहमति से उस उच्च न्यायालय की कार्यवाहियों में, जिसका मुख्य स्थान उस राज्य में है, हिंदी भाषा का या उस राज्य के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाली किसी अन्य भाषा का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेगाः परंतु इस खंड की कोई बात ऐसे उच्च न्यायालय द्वारा दिए गए किसी निर्णय, डिक्री या आदेश को लागू नहीं होगी।
- (3) खंड (1) के उपखंड (ख) में किसी बात के होते हुए भी, जहां किसी राज्य के विधान-मंडल ने,उस विधान-मंडल में पुरःस्थापित विधेयकों या उसके द्वारा पारित अधिनियमों में अथवा उस राज्य के राज्यपाल द्वारा प्रख्यापित अध्यादेशों में अथवा उस उपखंड के पैरा (iv) में निर्दिष्ट किसी आदेश, नियम, विनियम या उपविधि में प्रयोग के लिए अंग्रेजी भाषा से भिन्न कोई भाषा विहित की है वहां उस राज्य के राजपत्र में उस राज्य के राज्यपाल के प्राधिकार से प्रकाशित अंग्रेजी भाषा में उसका अनुवाद इस अनुच्छेद के अधीन उसका अंग्रेजी भाषा में प्राधिकृत पाठ समझा जाएगा।
- अनुच्छेद 349. भाषा से संबंधित कुछ विधियां अधिनियमित करने के लिए विशेष प्रक्रिया- इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि के दौरान, अनुच्छेद 348 के खंड (1) में उल्लिखित किसी प्रयोजन के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा के लिए उपबंध करने वाला कोई विधेयक या संशोधन संसद के किसी सदन में राष्ट्रपति की पूर्व मंजूरी के बिना पुरःस्थापित या प्रस्तावित नहीं किया जाएगा और राष्ट्रपति किसी ऐसे विधेयक को पुरःस्थापित या किसी ऐसे संशोधन को प्रस्तावित किए जाने की मंजूरी अनुच्छेद 344 के खंड (1) के अधीन गठित आयोग की सिफारिशों पर और उस अनुच्छेद के खंड (4) के अधीन गठित समिति के प्रतिवेदन पर विचार करने के पश्चात् ही देगा अन्यथा नहीं।

विशेष निदेश

- अनुच्छेद 350. व्यथा के निवारण के लिए अभ्यावेदन में प्रयोग की जाने वाली भाषा- प्रत्येक व्यक्ति किसी व्यथा के निवारण के लिए संघ या राज्य के किसी अधिकारी या प्राधिकारी को, यथास्थिति, संघ में या राज्य में प्रयोग होने वाली किसी भाषा में अभ्यावेदन देने का हकदार होगा।
- अनुच्छेद 350 क. प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की सुविधाएं- प्रत्येक राज्य और राज्य के भीतर प्रत्येक स्थानीय प्राधिकारी भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के बालकों को शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की पर्याप्त सुविधाओं की व्यवस्था करने का प्रयास करेगा और राष्ट्रपति किसी राज्य को ऐसे निदेश दे सकेगा जो वह ऐसी सुविधाओं का उपबंध सुनिश्चित कराने के लिए आवश्यक या उचित समझता है।
- अनुच्छेद 350 ख. भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के लिए विशेष अधिकारी- (1) भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के लिए एक विशेष अधिकारी होगा जिसे राष्ट्रपति नियुक्त करेगा। (2) विशेष अधिकारी का यह कर्तव्य होगा कि वह इस संविधान के अधीन भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के लिए उपबंधित रक्षोपायों से संबंधित सभी विषयों का अन्वेषण करे और उन विषयों के संबंध में ऐसे अंतरालों पर जो राष्ट्रपति निर्दिष्ट करे। राष्ट्रपति को प्रतिवेदन दे और राष्ट्रपति ऐसे सभी प्रतिवेदनों को संसद् के प्रत्येक सदन के समक्ष रखवाएगा और संबंधित राज्यों की सरकारों को भिजवाएगा।
- अनुच्छेद 351. हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश- संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्तानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे। ❖

एनएचपीसी
NHPC
एक नवरत्न कंपनी

Printed at : Educational Stores, Ghaziabad-201009 (U.P.)

एनएचपीसी
NHPC
एक नवरत्न कंपनी

स्वहित एवं राष्ट्रहित में ऊर्जा बचाएं / Save Energy for Benefit of Self and Nation
बिजली से संबंधित शिकायतों के लिए 1912 डायल करें / Dial 1912 for Complaints on Electricity
CIN: L40101HR1975GOI032564

हरित ऊर्जा में निहित शक्ति

www.nhpcindia.com @nhpcltd @NHPCIndiaLimited nhpclimited NHPC Limited NHPC Limited

एनएचपीसी
NHPC
एक नवरत्न कंपनी

एनएचपीसी काव्य यात्रा

वर्ष 2024

राजभाषा हीरक जयंती वर्ष एवं एनएचपीसी स्वर्ण जयंती वर्ष पर एनएचपीसी कार्मिकों द्वारा स्वरचित हिंदी कविताओं का विशेष प्रकाशन

50
एनएचपीसी
NHPC
SINCE 1975
वर्ष
एक नवरत्न कंपनी

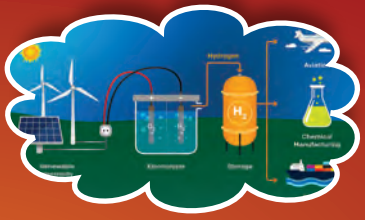

एनएचपीसी के निगम मुख्यालय, फरीदाबाद में आयोजित कवि सम्मेलन

एनएचपीसी में राजभाषा कार्यान्वयन की विविध गतिविधियां